चित्र नं १

पंचम गणधर श्री सुधर्मास्वामी.

समर्पण

जैन श्रमण समुदायना आद्य गुरु

पंचम गणधर

श्रीसुधर्मा स्वामी महाराजने

बुद्धिसागरसूरिजी कृत "विजापुर वृत्तांत" मांथी उद्धृत, (३) "तपागच्छनी उत्पत्ति," लेखक— पूज्यपाद मुनिमहाराज श्री दर्शनविजयजी त्रिपुटीमांथी अने (४) "जैनाचार्योनो औपदेशिक प्रभाव" लेखक मुनिराज श्री न्यायविजयजी त्रिपुटीमांथी आ ग्रंथना अतिमहत्त्वना अंगभूत आ लेखो आपवा माटे ए मूळ लेखकोनुं हुं जेटलुं ऋण स्वीकारुं तेटलुं ओछुं छे

नगरशेठ श्रीमान् कस्तुरभाई मणिभाई, मुनिराज श्री मंगळविजयजी मुनिराज श्री चरणविजयजी, श्रीयुत् भाईश्री वीरचन्द टोकरशी शाह, श्री जैन आत्मानंद सभा—भावनगर, श्री जैनधर्म प्रसारक सभा—भावनगर, श्रीयशोविजयजी जैनग्रंथमाळा भावनगर, तथा अन्य जे जे व्यक्तिओए प्रत्यक्ष के परोक्ष रीते मने आ कार्यमां सहकार आप्यो छे तेमनो हुं आभार मानुं छुं

आ पुस्तकने मुद्रणकलानी दृष्टिए बनी शके तेटली आकर्षक रीते छापवा माटे तथा बराबर विभागमां वारंवार करवा पडेल सुधारा वधाराना कारणे उपस्थित थती दरेक प्रकारनी मुश्केलीने नभावी लेवा माटे मणिमुद्रणालय—अमदावादना मेनेजर श्रीयुत सोमाभाई देसाई तथा प्रेसना कम्पोझीटर भाईओए आपेल सहकारनी सार नोंध लेवी जोईए.

पुस्तक प्रुफ तेमज आकर्षक बनाववा माटे श्रीयुत भाई रसिकलाल दीपचंद देसाई तथा श्रीयुत भाई बाबुभाई वीरचंद देसाईए करेल जहेमत माटे मारे आभार मानवो जोईए.

प्रारम्भमां आ पुस्तकनी जाहेरात करती वखते आनुं छूटक मूल्य ०—१२—० राखेल परन्तु पाछळथी पुस्तकनुं कद धार्या करतां लगभग बेवडुं थई जवाथी तेमज १२ जेटला आर्टप्लेटस उपर चित्रो आपेलां होवाथी तेनुं मूल्य १—०— करवुं पड्युं छे वळी पुस्तक तैयार करीने बहार पाडवामां पण असाधारण विलम्ब थयो छे छतां आ बधानी पाछळ पुस्तक जेम बने तेम अधिक उपयोगी थाय ते उद्देश होवाथी समाज तेने संतव्य गणशे एवी आशा छे जेओए आ पुस्तकना प्रथमथी ग्राहक बनीने मारा कार्यमां मने उत्साहित कर्यो छे तेओनी अने अगणीओने हुं न भूली शकुं. अस्तु.

भारतीय इतिहासमां जैन इतिहासनुं तेमज जैन श्रमण संस्थाना इतिहासनुं स्थान अति महत्त्वनुं छे ए इतिहासना अभ्यासीने थोडे अंशे पण आ पुस्तक उपयोगी थई पडशे तो मारो नम्र प्रयास हुं सफळ थयो लेखीश.

आ पुस्तकमां जणाती भूलो के खामीओ तरफ विद्वानो मित्रभावे मारुं ध्यान दोरवानी कृपा करे एवी नम्र भावना साथे हुं विरमुं छुं

वीर संवत २४६२ श्रावण सुद १५

नगीनभाई [illegible] हवेली अमदावाद

अनुक्रमणिका

चीत्र नं १

संपादक

जयंतीलाल छोटालाल शाह

आनंद प्रेस-भावनगर.

श्री तपगच्छ श्रमण वंशवृक्ष

(द्वितीय आवृत्ति)

वंशवृक्ष विभाग

सांकेतिक नीशानीओ

卐 स्वर्गस्थ

स्थ स्थविर (पद)

प्र प्रवर्तक

पं पन्यास

उ उपाध्याय

आ आचार्य

नोंध — आ वृक्षमां जे जे तपगच्छना विद्यमान साधुओ छे तेमनां तथा तपगच्छनी क्रिया करनारा साधुओ छे तेमनां अने तेमनी गुरुपरंपराना ज नामो आपेलां छे. जे साधुओ कालधर्म पाम्या छे अने जेमनो शिष्य वर्ग हयात नथी तेमनां नामो आपेलां नथी. मळेलां पत्रो अने साधनो परथी आ पुस्तक तैयार करवामां आव्युं छे. छतां कोई नामो बाकी रह्यां होय तो ते प्रकाशकने मोकली आपवा महेरबानी करवी. जेथी भविष्यमां सुधारी शकाय. तपगच्छना हाल (वि. सं. १९९२ना कार्तिक शुद पूर्णिमा सुधी) कुल विद्यमान साधु ६६४ छे.

वि. सं. १९९२ वीर सं. २४६२
कार्तिक पूर्णिमा अमदावाद

— संपादक

[४]
१ श्री सुधर्मा स्वामीजी महाराज
२ श्री जम्बू स्वामीजी महाराज
३ श्री प्रभव स्वामी
४ श्री सय्यंभवसूरि
५ श्री यशोभद्रसूरि
६ संभूतिविजय
भद्रबाहु स्वामी
(यक्षा आदि सात आर्याओ)
आर्य महागिरि

स्व. श्री वज्रसेनसूरि (अनुसंधान पानुं ८)
[१]
१५
स्व. नागिल
स्व. पद्म
स्व. जयन्त
स्व. तापस
स्व. नागेन्द्र
॥ श्री चन्द्रगच्छ ॥
स्व. चन्द्रसूरि
स्व. निवृत्ति
स्व. विद्याधर
॥ श्री वनवासीगच्छ ॥
१६ श्री सामन्तभद्रसूरि
१७ वृद्धदेवसूरि
१८ प्रद्योतनसूरि
१९ मानदेवसूरि
२० मानतुंगसूरि
२१ वीरसूरि
२२ जयदेवसूरि
२३ देवानन्दसूरि
२४ विक्रमसूरि
२५ नृसिंहसूरि
२६ समुद्रसूरि
२७ मानदेवसूरि
२८ विबुधप्रभसूरि
२९ जयानन्दसूरि
३० रविप्रभसूरि
३१ यशोदेवसूरि
३२ प्रद्युम्नसूरि
३३ मानदेवसूरि
३४ विमलचंद्रसूरि
॥ श्री वडगच्छ ॥
३५ उद्योतनसूरि
३६ सर्वदेवसूरि
३७ देवसूरि
३८ सर्वदेवसूरि
३९ यशोभद्रसूरि
४० मुनिचंद्रसूरि
४१ अजितदेवसूरि
४२ विजयसिंहसूरि
४३ सोमप्रभसूरि
॥ श्री तपगच्छ ॥
४४ तपस्वीबिरुद श्री जगच्चंद्रसूरि
(जुओ पानुं ६)

१ श्री सुधर्मा स्वामीजी महाराज
२ श्री जम्बू स्वामीजी महाराज
३ श्री प्रभव स्वामी
भद्रबाहु स्वामी

[७]
(जुओ पानु ११)
(रत्न शाखा)
(जुओ पानु १)
(जुओ पानु ८)

७१ मणिविजय (दादा)
पं. प्रतापविजय
७२ महायोगीराज
श्री बुद्धिविजयजी
(बुटेरायजी)
महाराज
(जुओ पानुं १५)
(जुओ पानुं १)

मनोहर विजय

[१]
मोहनविजय
नरेन्द्रविजय

[११]
आ. श्री विजय मोहनसूरि
मानविजय

(११)
विजयजी
प्रभाकरविजय
विजय

७७ सूरिसम्राट् आचार्य श्रीविजयनेमिसूरीश्वरजी महाराज (अनुसन्धान पट्ट १ -११)

७१ न्यायाम्भोनिधि आ. श्री विजयानंदसूरीश्वरजी (आत्मारामजी) महाराज (अनुसंधान पानुं १)
प्र. श्री कान्तिविजयजी
कर्पूरविजय
गुणविजय
(जुओ पानुं १८)
(जुओ पानुं १९)

फोटो (२१) विभाग

फोटो नं १] आ श्री विजयकमलसूरीश्वरजी

फोटो नं १

आ श्री विजयकमलसूरिजी

प्रभाकर प्रेस—भावनगर

चीत्र नं ७ मुनि श्री मोहनलालजी

चीत्र नं ८ मुनि श्री हंसमुनिजी

चीत्र नं ९] आ. श्री बुद्धिसागरसूरिजी
([illegible])

चीत्र नं १०

आ. श्री विजयवल्लभसूरीश्वरजी

आनंद प्रेस—भावनगर

चीत्र नं. ११

पूज्य मुनिमहाराजश्री विनयविजयजी

चीत्र नं १२

आचार्य महाराज श्री १००८ श्रीमद् विजयदान सूरीश्वर जी

चीत्र नं ११

चीत्र नं १४

जगद्गुरु श्री हीरविजयसूरिजी

पं श्री मणीविजयजी (दादा)

चित्र नं ११

मुनि म. श्री पुण्यविजयजी

चित्र नं १२

आ. श्री विजयधर्म सूरीश्वरजी

प्लेट नं. १९

महाभागीरथ श्री बुद्धिविजयजी

चीत्र नं ८

आ श्री विजयकमलसूरीश्वरजी ([illegible])

चीत्र नं ११

पं श्री धर्मविजयजी

आनंद प्रेस भावनगर

तपागच्छाधिपति श्री मुक्तिविजयजी गणि

चित्र नं २३

आ. श्री आनंदविमलसूरिजी.

चित्र नं २४

मुनि महाराजश्री झवेरसागरजी

चित्रपरिचय विभाग

श्री विजयकमलसूरीश्वरजी (गुजराती)

(जुओ चित्र नं. ५)

संवेगी साधुताना पालक वडोदरा मुनिसंमेलनना आद्य प्रेरक अने प्रमुख श्री विजयकमलसूरी-श्वरजी जैनसमाजमां अनेक रीते विख्यात छे एमना शास्त्राभ्यास, साधुओ परनो अद्वितीय प्रभाव अने शासन हितैषिता आजे चिरंजीव छे

आवा साधुवर्यनो जन्म मूळ राधनपुरना पण वर्षोथी पालीताणामां वसता कोरडीया कुटुंबमां थयो हतो तेमना पितानुं नाम श्री देवचंद नेमचंद हतुं ने मातानुं नाम मेघबाई हतुं आवा आचारवान्, राजमान्य ने गर्भश्रीमंत मातापिताने घेर सं. १९११ ना चैत्र सुद बीज ने सोमवार चोथा पुत्र तरीके कल्याणचंदनो जन्म थयो.

कल्याणचंदनो अभ्यास भावनगरमां थयो. वि स १९२७ना जेठ वद पांचमना दिवसे पितानो स्वर्गवास थयो पोताना मातुना प्रेर्या कल्याणचंदनो प्रेम धर्मपर दृढ थवा लाग्यो तेवामां पोताना भाई भाभीओना दुःखद स्वर्गवासे तेमां वधारो कर्यो अने तेमनो आत्मा वैराग्य तरफ ढळ्यो एवामां शान्तमूर्ति श्री वृद्धिचंदजी महाराजनो समागम थयो ने वैराग्य दृढ थयो. आखरे अमदावाद पासेना गामडामां वि स १९१६मा वैशाख वद ८ ना दिवसे तेओए दीक्षा ग्रहण करी. तेमनुं नाम कमलविजयजी राखवामां आव्युं अने तपगच्छाधिपति मूलचंदजी महाराजना शिष्य तरीके जाहेर थया वडी दीक्षा अमदावादमां सं १९२७ना कार्तिक वदी १२ना दिवसे थई

मुनिश्रीए पोताना समर्थ गुरुवर्य पासे रही शास्त्रोनो अभ्यास शरू कर्यो आ पछी तेओए एक बे बीजा साधुओ पासे व्याकरण न्याय काव्य, कोषादिनो अभ्यास करवा मांड्यो सूत्रसिद्धान्तना पारगामी श्री झवेरसागरजी पासे आगमो पण भणी लीधां वि सं १९२५मां श्री मूलचंदजी

तो सूरिजीए तमाम त्याग करी ॐकारनो जाप शरु कर्यो अने जीवननी छेल्ली क्षणे पण ॐकार जपतां तेमणे कायाने विसर्जन करी.

जैनसमाजमां भगवासने मा' थोडानो समाधामत्या ज्यारे गई ज्यां तेमनी पवित्रतानी पूर्णिमा तो त्यारे पण सन्तोषित छे

श्री मोहनलालजी महाराज

(जुओ चित्र नं. ७)

जेमणे मुंबई नगरीमां धर्मना अंकुर वाववानी पहेल करनार अने तेमांथी विशाळ धर्मवृक्ष बनावनार श्री मोहनलालजी महाराज जैन समाजमां जाणीता छे

तेओश्रीनो जन्म मथुराथी २ माइल दूर चांदपुर नामना गाममां ब्राह्मण कुळमां वि सं. १८८७ना वैशाख सुद ६ ना रोज थयो हतो. तेमना संसारी पितानुं नाम बादरमल्ल अने मातानुं नाम सुन्दरी बाई हतुं. मातपिताए पोताना आ आठमा पुत्रनुं नाम मोहनजी राख्युं.

मोहनजी नानपणथी ज यतिवर्गना संसर्गमां आववा लाग्या धर्मनी असर आ वखतथी ज थई पिताए पुत्रनी इच्छा जाणी यतिवर्य श्री रूपचन्दजी पासे रहेवा दीधो. अत्र धर्मनी माहिती अर्थात् पञ्चप्रतिक्रमण जीवविचार, प्रकरण आदिनो अभ्यास करी लीधो.

वि स १९ १मां तेओ यतिवर्य साथे फरता फरता नगरीना पार्श्वनाथनी यात्राए गया. त्यां तेमणे दीक्षा आपी पोताना शिष्य जाहेर कर्या. त्यांथी तेओए यतिवर्य साथे पूर्व देश तरफ विहार कर्यो ने यतिपणामां मुख्यत्वे ते देशमां ज विचरता रह्या

वि स १९१ मां यतिवर्य श्री रूपचन्दजी स्वर्गे पाम्या मोहनलालजीए सरस्वतीधाम श्री महेन्द्रसागरजी पासे रहीने शास्त्राभ्यास कर्यो.

एकदा तेओ लखनौमां पधार्या त्यारे एक श्रावके प्रथम दर्शने मस्तकने नमावी प्रणाम कर्या. यतिश्रीना दिलमां आथी बहु मनोमन्थन पेदा थयुं. तेमणे समजु के साचा धर्मनी प्ररूपणा करवी जोईए. लखनौथी विहार करी काशी वगेरे स्थळोनी मुलाकात लेता तेओ अजमेर आव्या त्यां तेमणे स्वत श्री संभवनाथ भगवाननी सामे सं. १९३१मां संवेगिपणुं स्वीकारी यतिपणानो त्याग कर्यो.

तेओश्रीए प्रथम चातुर्मास पाली (मारवाड)मां कर्युं आ पछी बीजां छ चातुर्मास मारवाडमां ज करी सातमुं चोमासुं जोधपुरमां कर्युं. अहीं तेमणे जसमुनिचन्द्रजी, कान्तिमुनि, कान्तिमुनि, हर्षमुनि आदि साधु बनाव्या. ते पछी गूजरात तरफ प्रयाण कर्युं

स १९४४नु चातुर्मास तेओए अमदावादमां कर्युं. आ वखते तेमणे मुंबईना धर्मविहीन लोकनी दुर्दशा सांभळी. त्यारा महान शहेरमां जैनधर्मनी प्रभावना करवानी उत्कंठा जागी, ने वि सं १९४६मां सूरतमां चातुर्मास करी मुंबई तरफ विहार कर्यो. वि सं १९४७ना चैत्र सुद ६ना

रोज तेओ मातरथी आव्या अने त्यांथी छाणीगाम पधार्या. अहीं साधुओने उतरवानुं स्थान नहोतुं उपदेश आपी तेमणे तेनी व्यवस्था करावी. आ चतुर्मास अहीं ज कर्युं आ पछी तेओ सुरत पधार्या तेओ आ बधा क्षेत्रोमां धर्मबीज वावता गया, ने ज्यां जैनधर्मनो पूरो प्रचार नहोतो त्यां जैनधर्मने जाणीतो कर्यो तेओए समस्त जीवन धर्मप्रभावना माटे गाळ्युं, पण तेमां मुंबई अने सुरत माटे ज अथाग श्रम सेव्यो ते चिरस्मरणीय छे

आवा एक महान मुनिवर ७६ वर्षनी उमरे सुरत मुकामे सं १९६३ना चैत्र वदी १२ना रोज काळधर्म पाम्या

पं श्री हर्षमुनिजी

(जुओ चित्र नं. ८)

केटलाकोनुं जीवन सागरसम गंभीर होय छे केटलाको नानकडाना झरा जेवुं अस्थिर जीवन जीवी जाय छे ज्यारे केटलाकोना जीवनने सरितानी शांतिनी उपमा आपी शकाय छे पंन्यास श्री हर्षमुनिजीना जीवनने आवा शान्त सरितानी उपमा आपी शकाय।

मुनिश्रीनो जन्म प्रसिद्ध कच्छदेशमां मांडवी शहेरमां ओसवाल ज्ञातिमां सं १९२४मा फागण मासमां थयो हतो. तेमना पितानुं नाम श्रीपालभाई अने मातानुं नाम लक्ष्मीबाई हतुं. गुण—कान्ति अने देहनी शोभाने लीधे मातापिताए तेमनुं नाम हीराचन्द राख्युं

बाळकोमां उछरता हीराचन्द पांच वर्षनी उमरे निशाळे गया व्यावहारिक ने नामाप्रमाणा ज्ञान उपरांत धार्मिक ज्ञान तेमणे लीधुं पण आमां धर्मभाव तेमना पर भारे असर करी संसारथी तेओ उदासीन बन्या पछीथी वरकाणा तीर्थमां यात्रा करता प्रसिद्ध मुनिपुंगव मोहनलालजी महाराजना समागम थयो परिणामे सं १९४४ना चैत्र सुदी ८ ने दिवस सादडीमां तेमणे दीक्षा लीधी

दीक्षा लीधी त्यारथी हर्षमुनिजी गुरु—सेवामां तल्लीन बनी गया अने ज आत्मसाधनानुं परम साधन मान्युं. आ कारणे तमने ज्ञान—प्राप्ति अने व्याख्यान—शक्ति पण सरस सांपडी. तमनुं व्याख्यान सूत्रानुसार ने जिनभाषी होवाथी सुरत अने मुंबईना श्रावको ते माटे बहु उत्साही रहेता सं १९५७ना मागसर वदी २ ना दिवसे सुरतमां तेमने शुभ मुहूर्ते गणी पद आप्युं ने अषाढ सुद ६ ने दिवस मुंबईमां पंन्यास पद आप्युं. हर्षमुनिजी आ छतां पण गुरुभक्तिमां तल्लीन रहेता पाटणमां सं १९६३मां गुरुदेवनो स्वर्गवास थतां आखा संघाडानो भार मुनिश्रीने हस्तक आव्यो. सुरतना संघ तेमने ते ज माटे वेसाडी चतुर्मास त्यां ज कराव्युं

आ पछी पं श्री हर्षमुनिजीए धर्मशासनमां घणानुं बहु चित्त परोव्युं पचतीर्थी, समेतशिखर, वगरेना संघ कराव्या, तेमज योग्य स्थान शोधवानुं फंड एकठुं करावी मुंबईमां गुरुस्मारक तरीके

श्री मोहनलालजी जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्स तथा संस्कृत पाठशालानी सं. १९६६ना महा वदी १० ना दिवसे स्थापना करावी.

आम धर्मप्रभावना थतां जनताए तमने सूरिपद स्वीकारवा विनंति करी, पण तेमणे पोतानी अनुत्सुकता बाहेर करी तेनो अस्वीकार कर्यो. जीवनभर साधुओ वधारवामां, ज्ञानाभ्यासमां, धर्मध्यानमां एमणे कालक्षेप कर्यो. सं. १९७४ ना वैशाख वद ६ ना सवारना नववागे तेमना कालधर्म पाम्या. तपगच्छनी आ समाचारी पाळता पंन्यासजीए पोताना गुरुना समुदायने जीवननी छेल्ली पळ सुधी साचव्यो, ने धर्मनय जीवन गुजारी सफळताने शान्त सरिताना प्रवाहरूप बनाव्या.

योगनिष्ठ श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी

(जुओ चित्र नं. ९)

योगनिष्ठ विशेषणथी एके एक जैनसंतानमां वाणीना प्रखर अध्यात्मप्रेमी समर्थ साहित्य रचयिता श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी जैनसमाजमां अक्षरदेहे आजे पण अमर छे. जैनो अने जैनेतरोमां आजे तेओ पूजाय छे. तेमनुं साहित्य गूजरातनी नानी मोटी दरेक कोममां वंचाय छे.

एवा समर्थ मानवी पुरुषनो जन्म महेसाणा राज्यना बीजापुर गाममां कणबी पाटीदारने त्यां वि. सं. १९३०ना महा वदी १४ ना रोज थयो हतो. तेमनुं संसारी नाम बहेचरदास हतुं. तेमना पितानुं नाम शिवजी भाई अने मातानुं नाम अंबाबाई हतुं. पितानो धंधो खेतीनो हतो. पण माता ज्यारे वैष्णव धर्मना पूजारी हतां त्यारे पिता शिवभक्त हता. पुत्रने बन्ने धर्मनो परिचय बचपणथी थयो. मातापिताना धर्मरंगनी छाप पटली प्रबळ हती के तेमना घरनो पाळेलो कूतरो पण अगीयारस करतो. बहेचरदासने कुमारनो भाटने धर्म प्रेमी देखी धर्म ना भक्त जागी. तेओ मंदिर, गामे, पुराणी के कथनिना पूजारी बन्या. एक साईप सा केवळ उपर तरफ खास्सो कर्यु.

तारे दिलमें सुरतका मकाम होवेगा तुं सुरतका बंदा होयगा

त्यारथी नाननपणथी ज सार मन्थन करवा बाळपणा साथे टक्कर छे! स्मरणशक्ति अने ग्रहणशक्ति पण तेरमी आसने गुजराती छ चोपडी, इंग्लीश व चोपडी, संस्कृत उर्दु ने मराठी भाषाओनो अभ्यास कर्यो. आ समय सुधी तमो खास जैनतत्त्वज्ञानथी अजाण्या हता. तेटलामां श्री रविसागरजी महाराजनो तेमने परिचय थयो. आ परिचय ज्ञान थयो ने जैनधर्म तरफ तेमनी श्रद्धा थयी. उपाश्रयमां जवुं थाय कर्युं. धार्मिक शिक्षक रविशंकर शास्त्री हता. तेमणे बहेचरदासने रातीभोजन अने कंदमूळ त्याग कर्यो. पछी अभ्यास करावनानुं कर्युं. मन रसोड रमे न थाय, पण धर्मनो प्रेम पढवो गाढ बनायो के साथे रोटलो ते मळ्युं न लाई. धनवाणी के पण अभ्यास न छोडे! पुत्र अने अवसर वयमां त्यां तेमणे शानपणथी ज आचर्या

जैनधर्म प्रत्ये तेमनो प्रेम गाढ बनतो जतो हतो. तेओ सामायिक, पोषह ने प्रतिक्रमणमां करता थया हता. हवे कमावानो समय आवतां तेमणे वकीलात करवानो विचार कर्यो पण ते जीवन तरफ तरतमां ज अरुचि पेदा थई. आखर आजोल गाममां धार्मिक शिक्षकनी नोकरी स्वीकारी. आ नोकरीमां तेओ जैन तत्त्वज्ञान अने शास्त्राभ्यासमां ऊंडा ऊतरी शक्या. परिणामे वि. सं. १९५७ना मागसर सुद ६ना रोज पालनपुर मुकामे तेमणे श्री सुखसागरजी महाराज पासे दीक्षा स्वीकारी.

तेमनी साधुता अजब हती. रसेन्द्रिय उपर खूब काबू हतो. चाहनो तो जीवनभर स्वाद कर्यो नहोतो. विहार पण उग्र करता. पत्रव्यवहार पण तेना परिचयमां न आवता. वांचनना तो परम रसिया के लगभग २५०० पुस्तको तेमणे वांच्यां हतां. ने दीक्षा लेता सुधीमां लगभग सो वार श्रीमद् देवचंद्र कृत 'अध्यात्मसार' वांच्यो हतो.

जैनेतर साहित्य साथे सुधी शक्य तेटलुं वांच्युं. आपणुं साहित्य जैनो पासे नथी, तेथी ते खोट पूरी करवा पण मथ्युं हतुं. ज्ञानमंदिर अने गुरुकुळोना ते भारे हिमायती हता. केळवणी ते प्रथम करवुं तो तेओ भार मूकता. पाने पण उपदेश करीने बोर्डिंगो ने पाठशाळाओनी स्थापना करावता. जोतजोतामां समाजमां तेमनी कीर्ति प्रसरी गई. परिणामे वि. सं. १९७ मा मागसर सुद १५ना दिवसे तेमने आचार्य पदवी आपवामां आवी.

हितोपदेश द्वारा जैन समुदायनुं मस्त करवा साथ तेओ गुजराती गीतोमां पुस्तको लखवानी मेहनत कर्या करता अने आनुं ए कारण छे के तेमणे लगभग सवासो ग्रंथो अपूर्व रच्यो. जैनसमाजने बचावे वर्षो आमां पण शक्य जनपदमां जैनधर्म माटे मनोज आक्षेपक ग्रंथनो जवाब आपता 'सत्य स्वरूपनगर अने जैनधर्म' नामक ग्रंथ बहार पाडी तमाम केटलाक आक्षेपोनुं निरसन करी सत्य तत्त्वनुं दर्शन कराव्युं हतुं. तेमणे कर्मनत्त्वज्ञानने लगतां जैनसूत्रमां मूर्तिपूजा, शिष्योपनिषद्, जैनदृष्टिए ईशावास्योपनिषद्, भावार्थ विवेचन, कर्मयोग, परमात्मज्योति, कम्मपयडि, धार्मिक गद्यसंग्रह वगेरे बहार पाडी जैनसाहित्य-समृद्धिनो टेको वगाड्यो हतो. मूर्तिपूजा बीजापुरमां एक ज्ञानमंदिर पण स्थाप्युं हतुं. ज्यांथी मानवना गुरुकुळनी तेओनी बहु भावना हती.

तमोगुणीनो स्नेह पडावी हता. तमना हाथ दीवान मुधी पहोंचता म ज्योतिषमां कह्युं छे के, तेमना हाथमां आंगळांमां १८ चक्र हतां. ज्यारेय कहे के न कहे तेओ मन्त्रसाधनामां ने प्रभावी हता. तेमनां कार्यो आजे तेमनी चिरंजीव कीर्तिने बहार पाडी रह्यां छे. जैनना साधु थया छतां तेओ मुसलमान ब्राह्मण के हरिजनोना गुरु नहाता मटया. पहोपगीमा पर तेओ हतुं ज वहाण गामना एमनी योगोनी दृष्टिमां सहु समान हतां.

मागतो हतो एमणे संप्रदायनी दरकारनी परवा न करतां आगळ अभ्यास चलाव्यो. पण एनु परिणाम विलक्षण आव्युं स्था० संप्रदाय परथी तेमनी श्रद्धा ऊठी गई अनेक आपत्तिओ सामे थई तो वि सं १९३१मां २० साधुओ साथे संप्रदायथी जुदा पड्या ने पंजाबमां सत्यधर्मनी प्ररूपणा करवा लाग्या

जिनमूर्ति जिनमंदिर ने शास्त्रनी साची प्ररूपणा करता सहु साधुओनी इच्छा शत्रुंजय-गिरनार वगेरे तीर्थोनी यात्रा करवानी थई अने इ स १९३२मां गूजरात तरफ प्रयाण आदर्युं अमदावादमां ते वखते परम प्रतापी बुटेरायजी महाराजनी हाक वागती आत्मारामजी महाराजनु अमदावादे अभूतपूर्व स्वागत कर्युं यतिवर्ग अने बीजा उत्सूत्र प्ररूपको सामे आत्मारामजीए जबरी चळवळ जगावी वि स १९३२मां तेओए श्री बुटेरायजी महाराज पासे संवेगी दीक्षा स्वीकारी साथेना १५ साधुओ तेमना शिष्य थया

वि स १९३३नु चातुर्मास भावनगरमां करी तेओ पुन पंजाब तरफ गया स १९३७नु चातुर्मास गुजरानवालामां कर्युं अहीं तेमणे 'जैनतत्त्वादर्श' नामक सुन्दर ग्रन्थनी रचना करी ठेर ठेर नवा जैनो बनाव्या नवां जिनमंदिरो स्थाप्यां, अनेक शास्त्रार्थो करी परमतवादीओने परास्त कर्या आम पांच वर्ष सुधी पंजाबने सेवी तेओ पुन स १९४ मां गूजरात तरफ पाछा वळ्या अने ते चोमासु बीकानेरमां कर्युं, गूजरातमां आवीने नगरशेठ प्रेमाभाई अने शेठ दलपतभाईना पूर्ण सहकारथी १५ पेटीमां सुन्दर जिनबिम्बो पंजाबमां मोकल्यां

पालीताणानी यात्रा करीने पाछा फरता खंभातना प्राचीन भंडारोए एमना विद्याव्यासंगी दिलने खूब आकर्ष्युं अहीं एक मासनी स्थिरता करी. 'अज्ञानतिमिरभास्कर' नामनो महत्त्वनो ग्रंथ आ अरसे रच्यो. अहींथी तेओ सुरत गया ने चातुर्मास पण त्यां कर्युं सुरतमां आकुळा श्रीमाळीने संघमां लेवानी तेमणे हिम्मतभर्या उपायो तेमज बीजां अनेक सुंदर कार्यो कर्यां.

चातुर्मास पूर्ण थतां तेओ भरूच, वडोदरा, डभोई बोरसदना रस्ते थई अमदावाद आव्या मुंबई पधारवानो खूब आग्रह हतो, पण क्षेत्रस्पर्शना न मळी. आ वेळा पालीताणाना झगडानुं समाधान थवाथी तेओश्री पालीताणा पधार्या अने त्यां ज चातुर्मास कर्यु जैनसमाजमां तेमनो शासनप्रेम अने विद्वत्ता जाहेर थई गयां हतां जेना परिणामे पालीताणामां ज तेमने खूब मोटा उत्साहथी आचार्यनी पदवी अपाणी संवेगी दीक्षानु नाम आनंदविजयजी हतु एटले विजयानंदसूरि तरीके ओळखाया स १९४४नु चातुर्मास २२ साधुओ साथे राधनपुरमां कर्यु ने अत्र पंजाबकेसरी श्री विजयवल्लभसूरिजीने दीक्षा आपी.

तेमनी ख्याति वधती ज चाली वि० सं० १९८१ ना मागशर शुक्ल पंचमीए धाणी मुकामे श्रीमद् विजयकमलसूरिजीए तेमने आचार्य पदवी विभूषित कर्या. घणो समय व्याख्यान अने शासन प्रभावनामां व्यतीत कर्या पछी अति तपश्चर्याने कारणे वि० स० १९९२ मा माह मासमां तेओश्री कालधर्म पाम्या जैन श्रमणताना आकाशनो एक तेजस्वी तारक खरी गयो

श्री हीरविजयसूरिजी

(जुओ चित्र नं ११)

अहिंसाना इतिहासमां भारतना इतिहासमां अने जैनश्रमणताना इतिहासमां जेमानुं नाम सोनेरी शाहीथी लखाय छे जेमना पवित्र स्मरणने हजारो मानवीओ अभिवादन आपे छ अने जेमना चिरंजीव अक्षरदेह आजे पण तेजस्वी अ उज्ज्वल रीते हैयात छ ए श्री हीरविजयसूरीश्वरजी जगतनी महामूली व्यक्तिओमांना एक हता तेओ भा भारत प्रगटता पुण्यश्लोक व्यक्तिरत्नोमांना एक अजोड पुण्यप्रभावक हता

तओश्रीनो जन्म स १५८३ मा पालणपुरमां थयो हतो. पितानु नाम कुराशाह ओसवाल अने मातानुं नाम नाथीबाई हतुं हीरो तेमनुं ससारी नाम तर वर्षनी वय मातापितानो स्वर्गवास थयो. हीरो पाटण पातानी बहेने त्यां गयो अहीं तपागच्छना श्री विजयदानसूरिना उपदेशे तेने सं १५९६ मां दीक्षा अकरी. आ पछी विद्याभ्यास करी प्रचंड विद्वत्ता प्राप्त करी. आ विद्वत्ताथी आकर्षाई तेमना गुरुश्रीए सं १६०७मां पन्तिपद आप्युं सं १६०८ मां वाचक उपाध्याय पद आप्युं स १६१० मां सीरोहीमां आचार्य पद आपी श्री हीरविजयसूरि नाम आप्युं सं १६२२ मां गुरुश्रीना स्वर्गगमन थता तओश्री तपगच्छाधिपति थया

निष्पाप मार्गनी प्ररूपणा करनार तरीके सम्राट अकबर तेओश्रीने आमंत्रण आप्युं ने त तेमनो मळ थयो. बादशाहनी श्रीजी साथ जेवा शब्द अशुभ फळके पण तेओश्री साथे अपूर्व परिचय साध्यो. सूरिजीए अमारी, जैनत्व प्रचार अने प्रामाणिक न्याय माट अपूर्व प्रयास कर्यो सम्राट् अकबर तेमनो साधुनाथी अंकाई वि स १६४० मा जगद्गुरुनुं पद आप्युं

आ पछी संपूर्ण जीवन धर्मप्रचार माटे व्यतीत करी, सम्राट अकबरने प्रतिबोधी त द्वारा अनेक पुण्यकार्यो करी सूरिजी वि सं १६५२ मां स्वर्गगमन सीधाव्या

श्री मणिविजयजी दादा

(जुओ चित्र नं १४)

दादाना नामथी सुप्रसिद्ध आजना ६८० जटला संवेगी साधुओमांथी १५० जटला साधुओना आप जनक अने जैनसमाजना अनेक प्रकार प्रतापी सूरिवरो तथा मुनिवरोना गुरुवर्य श्री मणिविजयजी दादा संवेगी साधुनाना इतिहासना आप प्रणेता छ

वि सं १९९९ नु चतुर्मास जामनगरमां कर्यो तेमो पालीताणा गया अहीं बीजुं चतुर्मास कर्युं अहींथी स १९९७मां महेसाणा खाते पं श्री कमलविजयजी महाराजना हस्ते बडी दीक्षा लीधी. त्या पछी गुजरात काठियावाडमां विहार करी सं १९९९ मुं चोमासुं जामनगर कर्युं

आ वेळा कच्छमांथी स्थानकवासी दीक्षा छोडी आवेला श्री चारित्रविजयजी (कच्छी) तेमने मळ्या पहेली ज मुलाकाते तेमना पर सुंदर असर करी. तेमणे संवेगी दीक्षा तेमनी पासे लीधी. आ पछी नेत्रभराईमां तेमने पोतानां गुरुमहाराज समक्ष बडी दीक्षा आपी.

आ पछी तेमणे अनेक चतुर्मास गुजरात काठियावाडमां कर्यां तेओ ध्यानी अने अध्यात्मप्रिय हता शांतिनी तो प्रतिमूर्ति हता उपदेश केवळ वैराग्य रंगथी रगायलो आपता सं १९८२ मां तमने स्वभाविक आयुं आ पछी तेओ सं १९८८मां स्वर्गधर्म पाम्या तेमनी ज्ञानप्रियता छेल्ली घडी सुधी एक सरखी रही हती. 'भावना भूषण' नामनो वैराग्यनो ग्रंथ तेमणे रच्यो छे

श्रीमद् विजयदानसूरिजी
(जुओ चित्र न. ११)

अपूर्व ज्ञानप्रियता, असाधारण विद्वत्ता अने कठोर व्रतपालन आ त्रिवेणी संगमना दृष्टांतभूत श्रीमद विजयदानसूरिजी आधुनिक श्रमणताना इतिहासमां असामान्यमांना एक छे

तेमोश्रीनो जन्म वि० स १९२४ ना कारतक सुकल चतुर्दशीए शंखेश्वर तीर्थथी सात कोश पर आवेल झीझुवाडा गाममां थयो हतो. तेओ ज्ञाते दशाश्रीमाळी हता पितानुं नाम जुठाभाई अने मातानुं नाम मकबाई हतुं. तेमोश्रीनु संसारी नाम दीपचंद हतुं

दीपचंदने मातपिताए सारु भणावी भणावी. आ पछी दीपचंद धीर वीर आसीस्टंट मास्तरनो मोकरीमांथी पोलीस पटेल बन्या अहीं सुंदर कारकीर्दी सांपडी मातापिता तरफथी दीपचंदने रास धर्मसंस्कारो न मळ्या पण एक मित्रना उपदेशथी एना हृदयमां वैराग्यनो रग जाग्यो. आ रंग दिवसो जतां गाढो बन्यो अने त प्रमाणे नवयुग प्रवर्तक श्रीमद् विजयानंदसूरीश्वरजीना शिष्यरत्न शासन प्रभावक उपाध्याय श्री वीरविजयजी महाराज पासे गोघा गामे वि स १९४६ ना मागसर सुकल पंचमीए भागवती दीक्षा लीधी. दीपचंद दानविजयजी तरीके जाहेर थया.

श्री दानविजयजी महाराजे व्याकरण काव्य कोष, न्याय आदिनो अभ्यास पछी जिनागमोनो अभ्यास कर्यो तेमनुं ज्ञान खूब उन्नत बन्युं ज्योतिषशास्त्रमां तो खूब निपुणता प्राप्त करी. आथी तेमनी योग्यता जोई वि स १९६२ मां खंभातमां गणी पदवी आपी अने मागसर पूर्णिमाए पंन्यासपदवी विभूषित कर्या.

कृपारामजीना हृदयमां वैराग्य भावना जागी हती स १९०५मां तेमणे दीक्षा लेवानो विचार कर्यो पण तेम न बइ शक्यु पण श्री बुटेरायजी महाराजे स १९०८ मा अषाढ सुदी १३ मा दिवसे दिल्हीमां दीक्षा आपी ने तेमनु नाम वृद्धिचंद्रजी राख्यु वृद्धिचंद्रजी महाराजे दीक्षा पछी अभ्यास अने भक्तिमां खूब ध्यान आप्यु आ पछी तेओ गूजरातमां आव्या अहीं तेओश्रीनी पुण्यप्रतिभा खूब विस्तरी

स १९१२ मां अमदावादमां बुटेरायजी महाराज मूळचंदजी महाराज तथा वृद्धिचंद्रजीनी वडी दीक्षा प मणिविजयजी (दादा) पासे थइ वृद्धिचंद्रजीनु नाम मुनिराज श्री वृद्धिविजयजी राख्यु आ पछी तेओए ग्रामानुग्राम विहार करी धर्मोपदेश आपवा मांड्यो तेमज शासनहित माटे अनेक काम करवा मांड्यां तेमनी वाणी अतीव मधुर ने प्रतापी हती अने आ छतां तेओ पटम्म भद्र हता के कोइ पण सामे बरा पण कडक वचन न दाखवता श्री बुटेरायजी महाराजना स्वर्गवास पछी तेमणे पोताना गुरुभाइ मूळचंदजी महाराजने वडील मान्या ने तेमनी भक्ति–विनयमां पोतानी महत्ता समजी, शत्रुंजयना झगडामां तेमणे बहु काम कर्यु तेमज भावनगरमां थाकता अगाडाने शान्त कर्या 'जैनधर्म प्रकाश' मासिक पण तेओनी समतिनु फळ छे

महाराजश्री दीक्षा लीधा पछी पंजाबमां त्रण वर्ष रह्या सं १९११मां गूजरातमां आव्या ते पछी पंजाब गया ज नथी गूजरातनां १८ चोमासामां अन्चोभरुभ भावनगरमां ज कर्या तेमणे जीवनमां छेल्ली घडी सुधी जैनसिद्धान्त तमज पाश्चात्य माटे फीकर कर्या करी. पण स १९४९ मां व्याधिए जोर कर्यु ने 'अरिहंत सिद्ध, साहु' ना ध्यानमां वैशाख सुदी सातमना रातना मानन्द समाधे देहोत्सर्ग कर्यो.

तेमना नामना दीक्षित कुल १० साधुओ हता जेमां केटलाक प्रखर प्रतापी मुनिवरो ने सूरिवरोनो समावेश थाय छे आजे पण तेमना पवित्र नाम पाळळ १२५–१५० साधुशिष्योनी संख्या छे

श्री विजयधर्मसूरीश्वरजी

(जुओ चित्र चित्र न. १६)

जैनशासननी उज्ज्वल प्रभाने ज्यारे अनेक अंधश्रद्धानां आवरणो घेरी रह्यां हतां त्यारे नवशक्ति अने नवचेतनथी ए बधां आवरणोने भेदी समस्त हिंदमां अने हिंद बहार तेनो प्रकाश फेलावनार प्रातःस्मरणीय श्री विजयधर्मसूरीश्वरजी एक युगप्रवर्तनीय व्यक्ति हता

महुवाना वीशाश्रीमाळी कुटुंबमां स १८६७ नी सालमां तेमनो जन्म थयो हतो. पितानु नाम रामचन्द्र अने माताचुं नाम कमळादेवी हतुं । तेमनुं संसारी नाम मूळचंद हतुं मूळचंद ज्यारे वर्षे

एक दिवस संसारनी माता छोडी पत्राबमां भंगाळ खाते वि सं १९२५ना माह वदी ११ना दिवसे श्री लक्ष्मीविजयजी महाराज पासे दीक्षा लीधी गुरुजीए तेमनुं नाम हंसविजयजी राख्युं. वि स १९२९ना जेठ सुदी १० ना रोज वणेदरामां मूळचंदजी महाराजना हाथे वडी दीक्षा थई

आ पछी तेमणे समस्त हिंदमां विहार करवो शरू कर्यो अनेक राजाओने प्रतिबोध्या अनेक हस्तलिखित भंडारोनो उद्धार कर्यो, यात्रार्थे अनेक संघ काढ्या, केटलांय जीर्ण मंदिरोनो उद्धार कर्यो, अनेक प्रतिष्ठाओ करी. वि सं १९८९ ना भावनगरमां ताव शरू थयो अने ५५ वर्षनो बहु लांबो दीक्षा पर्याय पाळी वि स १९९० ना फागण सुद १ ना दिवसे तेओ कालधर्म पाम्या

श्री चारित्रविजयजी (कच्छी)

(जुओ चित्र पे १८)

सत्यनी खातर जीवन जीवनार जीवदयाने जीवनमां महत्त्वनुं स्थान आपनार तीर्थरक्षा माटे प्राणनी पण परवा न करनार श्री चारित्रविजयजी (कच्छी) आजना जैन श्रमणताना इतिहासमां एक बहुज उज्ज्वळ अने विविधरंगी पृष्ठ रोके छे

तेओनो जन्म वि सं १९४ ना आसोवदी १४ना रोज कच्छ खाते पत्री गाममां थयो हतो तेमना पितानु नाम फमशाह ने मातानु नाम सुमगाबाई हतु तेओश्रीनु संसारी नाम धारशी हतु.

धारशीनु बाल्यजीवन धर्मसंस्कारोथी भरेलुं, नीडर ने शौर्यथी भरपूर हतु ए काळ कच्छनो वेपार भांगतो हतो ने तो वेपार अर्थे मुंबई जता हता धारशी पण मुंबई आव्यो कमाणी सारी थई पण वि सं १९५६मां प्लेग आव्यो. धारशीनां १७ सगां ओतजोतामां मरणशरण थयां एने पण ऋण गांठो नीकळ्या. एक धर्ममित्रनी सलाहथी एणे गांठो फूटी जाय तो विरक्त थवानु स्वीकार्युं

आश्चर्यनी वात के तेज राते गांठो फूटी गई ने धारसी साजो थयो. थोडा दिवसो बाद एणे स्थानकमार्गी सम्प्रदायना कानजी स्वामी पासे दीक्षा लीधी. साधु थया पछी तेमणे खूब ज्ञानाध्ययन शरू कर्युं आगमो पण वांच्यां आमां तेमने मूर्ति पर श्रद्धा थई स्थानकमार्गी धर्म परथी श्रद्धा उठी जतां तेओए भावनगर जई श्री विजयकमळसूरिजीना शिष्य श्री विनयविजयजी महाराज पासे वि सं १९५९ मागशर सुद १० ने बुधवारने रोज संवेगी दीक्षा धारण करी आ पछी देववराडोमां श्री विजयकमळसूरिजी समक्ष तेमनी वडी दीक्षा थई

आ पछी तेओश्री शत्रुंजयनी यात्राए गया एक वखत मरोटो सामेना झघडामां तेमणे प्राणनी पण परवा न करतां तीर्थनी रक्षा करी ने अशातना टाळी आ पछी तेओश्री काशी तरफ गया ने

निशाळे गयो पण एना गगनविहारी आत्माने ए स्थान अति सांकडु लाग्यु. मूळचंद कालेज छतो ने ए कालेजिकतावी ए मुगट पर पदयो.

एक वखत गुरुपरमां ए हार्यो पिताए ठपको आप्यो पनो स्वाभिमानी आत्मा दु खायो. नाना निमित्ते मोटु परिणाम आण्यु. मूळचंदने लाग्यु के दुनियामानु सगपण बहु अळखामणुं छे ए मानव्यार गयो ने शान्तमूर्ति वृद्धिचंद्रजी महाराज पासे इ स १८८७न्य ने मासनी १२मी तारीखे दीक्षा लीधी मूळचंद मुनि धर्मविजयजी बन्यो. गुरुभक्ति तो एमनी नसेनसमां भरी हती भावनगरमां धर्मविजयजी विद्वान बन्या ज्ञानप्रचारनी तेमनी तमन्ना अमोघ हती. मांडळमां १ विद्यार्थीनी सख्याथी श्री यशोविजयजी जैन पाठशाळा स्थापन करी आ स्थापनाए तेमनु खास विद्याधाम काशी तरफ खेंच्यु. त्यां जैन सस्था स्थापी जैन विद्वानो केम न पेदा करवा ?

पण काशीनो विहार सहेलो साधु माटे भयकर हतो छतां उग्र विहार करी तेओ त्यां पहोंच्या. हजारो विघ्नो सामे मुकाबलो करी जैन पाठशाळा स्थापी अनेक विद्वानो तैयार कर्या मन वर्ष अहीं व रही बंगाळ, कलकत्ता भरीया, पावापुरी आदि अनेक स्थाने विचर्या, ग्रंथमाळा विद्याशाळा ने पांजरापोळो स्थापी, हजारोने मांसाहार छोडाव्यो अने अनेक सुन्दर जैन ग्रन्थोनु संशोधन करावी बहार पाडया. आ पुस्तकोए युरोपियन विद्वानोनुं ध्यान खेंच्यु ने ओछावत्तामां तो अवसा युरोपमां तेमना भक्तोनो एक मूल पेदा थयो केटलाक तेमना भाषे मळी धर्मोपदेश श्रवण करी गया आ कीर्तिथी आकर्षाई मगध मिथिला ने बंगाळना पंडितो तथा श्रीसंघे तेमने आचार्य पदवी आपी.

तेओनी अथाक्रम तेना वगरा तेमने दूर कर्या केटलांक पुस्तको बाने रचनां अनेक राजवीओने पोताना भक्त बना केटलीक संस्थाओ स्थापन करी. शीलनगर शासनहितनां कार्य करी इ स १९२२मां तेओ शिवपुरी (ग्वालियर)मां आव्या. अहीं तेमनी सुपरिश्रमथी अति जर्जरित-क्षीण थयेले देह पडयो. पोतानी पाछळ एक विद्वान शिष्यमंडळीने मूकी जैनसमाजनो साचो महारथी चाल्यो गयो

श्रीमद् हसविजयजी महाराज
(जुओ चित्र नं १७)

परम तपोमूर्ति शमसम्पन्नमावक श्री हंसविजयजी महाराजनो जन्म वन्थेरा ग्रामे वि सं १९१४ना अषाढी अमासे (दीवासो) वीशाश्रीमाळी ज्ञातिमां थयो हतो तेमना पितानुं नाम जगजीवनदास अने मातानु नाम माणेकबाई हतु तेओ छोटालालना नामथी ओळखाता

आठ वर्षे छोटालाल निशाळे गया अभ्यास पूरो समाप्त करी पिताना वेपारमां मददकर्ता बन्या लगभग १६ वर्षनी उमरे मुरजबाई साथ तेमनां लग्न थयां. पण छोटालाल स्वभावे विरक्त हता

એક દિવસ સમારની માયા છોડી પંજાબમાં અંબાલા ખાતે વિ સં ૧૯૩૫ના માહ વદી ૧૧ના દિવસે શ્રી લક્ષ્મીવિજયજી મહારાજ પાસે દીક્ષા લીધી ગુરુજીએ તેમનું નામ હંસવિજયજી રાખ્યું. વિ સં ૧૯૩૯ના જેઠ સુદી ૧૦ ના રોજ વડોદરામાં મૂળચંદજી મહારાજના હાથે વડી દીક્ષા થઈ

આ પછી તેમણે સમસ્ત હિંદમાં વિહાર કરવો શરૂ કર્યો ક્યાંય રાજાઓને પ્રતિબોધ્યા ક્યાંય હસ્તલિખિત ભંડારોનો ઉદ્ધાર કર્યો ક્યાંક અનેક સંઘ કઢાવ્યા કેટલાંય તીર્થ મંદિરોનો ઉદ્ધાર કર્યો, અનેક પ્રતિષ્ઠાઓ કરી. વિ સં ૧૯૮૯ ના માતરમાં તાવ શરૂ થયો અને ૯૫ વર્ષનો બહુ લાંબો દીક્ષા પર્યાય પાળી વિ સં ૧૯૯૦ ના ફાગણ સુદ ૧ ના દિવસે તેઓ કાળધર્મ પામ્યા

શ્રી ચારિત્રવિજયજી (કચ્છી)

(જુઓ ચિત્ર નં ૧૮)

સત્યની ખાતર ચીવટ બતાવનાર જીવદયાને જીવનમાં મહત્ત્વનું સ્થાન આપનાર, તીર્થરક્ષા માટે પ્રાણની પણ પરવા ન કરનાર શ્રી ચારિત્રવિજયજી (કચ્છી) આજના જૈન શ્રમણતાના ઇતિહાસમાં એક બહુજ ઉજ્જ્વળ અને વિવિધરંગી પૃષ્ઠ રોકે છે

તેઓનો જન્મ વિ સં ૧૯૪૦ મા આસોવદી ૧૪ મા રોજ કચ્છ ખાતે પત્રી ગામમાં થયો હતો. તેમના પિતાનું નામ ધનભાઈ ને માતાનું નામ સુભગાબાઈ હતું તેઓશ્રીનું સંસારી નામ ધારશી હતું

ધારશીનું બાલ્યજીવન ગ્રામ્યસંસ્કારોથી મરદાઈ ભર્યું ને શૌર્યથી ભરપૂર હતું ૧૫ વર્ષ કચ્છનો વેપાર ભોગવતા હતો ને તે વેપાર અર્થે મુંબઈ જતા હતા ધારશી પણ મુંબઈ આવ્યો કમાણી માંડી થઈ પણ વિ સં ૧૯૫૬ માં પ્લેગ આવ્યો. ધારશીનાં ૧૭ સગાં ઓળખીતાઓમાં મરણ થયાં. અને પણ ગળે ગાંઠ નીકળી. એક ધર્મમિત્રની સલાહથી જો ગાંઠ ફૂટી જાય તો દીક્ષા લેવાનું સ્વીકાર્યું

આશ્ચર્યની વાત કે તેજ રાતે ગાંઠો ફૂટી ગઈ ને ધારશી સાજા થયો. થોડા દિવસો બાદ એણે સ્થાનકમાર્ગી સમ્પ્રદાયના લાલજી સ્વામી પાસે દીક્ષા લીધી સાધુ થયા પછી તેમણે ખૂબ જ્ઞાનાધ્યયન શરૂ કર્યું આગમો પણ વાંચ્યાં આમાં જૈનમ મૂર્તિ પર શ્રદ્ધા થઈ સ્થાનકમાર્ગી ધર્મ પરથી શ્રદ્ધા ઉઠી જતાં તભોઈ ભાવનગર જઈ શ્રી વિજયધર્મસૂરિજીના શિષ્ય શ્રી વિનયવિજયજી મહારાજ પાસે વિ. સં. ૧૯૫૯ માગશર સુદ ૧૦ ને બુધવારે રાજ સંવેગી દીક્ષા ધારણ કરી. આ પછી દેવચરાડીમાં શ્રી વિજયધર્મસૂરિજી સમક્ષ તેમની વડી દીક્ષા થઈ

આ પછી તેઓશ્રી શત્રુંજયની યાત્રાએ ગયા એક વખત બાબેટો સાથેના ઝઘડામાં તમણે પ્રાણની પણ પરવા ન કરતાં તીર્થની રક્ષા કરી ને અપાલના ટાઠે આ પછી તેઓશ્રી કાશી તરફ ગયા ને

त्यां रही शास्त्राभ्यास कर्युं. समेतशिखर वगेरे तीर्थनी यात्रा करी तेओ गूजरातमां पाछा आव्या अहीं आवी पालीताणामां सं. १९६८मां आपना श्री चारित्रविजयजी जैन गुरुकुळनुं प्रथम बीजारोपण कर्युं ने तेने विकसाव्युं. वि. सं. १९६९मां पालीताणामां जलप्रलय थयो तेमां खूब जीवदया बतावी. त्य पछी तेओश्री कच्छमां गया ने त्यांना सामाजिक तेमज धार्मिक जीवननी उन्नति माटे घणा प्रयासो कर्या. तेमणे घणा राजाओने तथा अमलदारोने जैनधर्मना प्रेमी बनाव्या ने जीवननी अन्तिम पळ सुधी सेवा ने सत्यनी उपासना करी.

सं. १९७४मां हिंदने इन्फ्लुएन्झाए घेरी लीधुं. कच्छमां पण ए रोग फेलायो. मुनिराजश्री ए वेळा संघोमां हता तेमना शिष्योने ए रोगे सपडाव्या. मुनिराज श्री तेमने बचावता बचावता पोते सपडाया अने समाधिपूर्वक आसो वद ९नी रात्रिए कालधर्म पाम्या. आजे तेमनी पाछळ श्री दर्शनविजयजी श्री ज्ञानविजयजी, श्री न्यायविजयजी ([illegible] त्रिपुटी) आदि विद्वान शिष्य मंडळी तेमनुं नामने उज्ज्वळ करी रही छे

श्री बुद्धिविजयजी महाराज (श्री बुटेरायजी महाराज)

(जुओ चित्र नं. ११)

आजनो संवेगी साधुओना आदि प्रचारक धर्मवीर श्री बुटेरायजी महाराजनो जन्म इ. सं. १८६३मां पंजाबमां लुधियाना नजीक दुलवा गाममां थयो हतो तेमना पितानुं नाम टेकसिंह अने मातानुं नाम कर्मदि हतुं. अहींना धर्मसिद्ध माटे पंकायेल शीख कोममां जन्मेल आ बाळकनुं नाम बटेरसिंह हतुं.

भारतमां राज्यक्रान्तिनो मंडळो बहुने मुंझाई गयो हतो, पण धर्मक्रान्तिनो पण बदलाव थयो हतो. बटेरसिंहने नानपणथी धर्म तरफ आकर्षण हतुं अने एक दिवस माताना आंसुओ वच्चे तेमणे साधु थवा माटे गृहत्याग कर्यो. बटेरसिंहे गुरु माटे ठेर ठेर भटकी संन्यासी, बावा ने भगतोनो परिचय साध्यो. पण तेमां निष्फळता मळी. निराश थई ते घेर पाछा फर्या.

पंजाबमां आ वेळा यतिओनुं अने स्थानकवासी साधुओनुं परिबळ हतुं. पण यतिवर्ग कंचन अने कामिनीनो भोगी थती जतो होवाथी त्या साधुओ तरफ लोकोनी भक्ति वधती हती. बटेरसिंहनुं मन ए आकर्षण थयुं ने सं. १८८८मां पचीस वर्षनी तरुण वये त्यां दीक्षा लीधी. नाम बुटेरायजी राख्युं. सत्यनी शोध माटे बीकानेरना बुटेरायजीए जिनागम अने जिनवाणीनो अभ्यास कर्यो पण वर्षोथी तेमने मन ज ज्ञाननी प्राप्ति थई तेमने लाग्युं के अमारुं वर्तन जिनागम मुजब नथी. आ बोलीने पंजाब गुजराते बांधती ते अने मूर्तिपूजाना विरोध शरुआत थयो बस त्यांथी तेओनुं मंथन शरु थयुं. १८१० समाजमां अत्यार आ विचारो प्रसर्यां त्यारे बटेरायजी तेओ रागमीनो बन्नी. बुटेरायजीने महत्त्व करवानी जरूरी लगाणी.

रामचंद्रने बाल्यपणथी ज वैराग्य तरफ अजब आकर्षण हतुं. तेवामां फकीरचंद नामना यतिना संसर्गमां आव्या अने तेमणे वि. सं. १९२ मां यति बन्या. साधुजीवन तो सर्वथा गमगम होवुं जोईए. ए भावनामां बीरा गाममां स्थानकमार्गी संप्रदायना साधु श्री विशुद्धचंद्रजीना (जेओ स्थानकमार्गी छतां पण मूर्ति पूजामां श्रद्धाळु हता) संसर्गमां आव्या. सं. १९२१ मां यतिजीवन तजी तेओ विशुद्धचंद्रजीना शिष्य बन्या.

श्री विशुद्धचंद्रजीए पू. आत्मारामजी महाराजना नेतृत्व नीचे सं. १९३२ मां पूज्य बुटेरायजी महाराज (बुद्धिविजयजी) पासे संवेगी दीक्षा लीधी. श्री विशुद्धचंद्रजीनुं नाम श्री कमलविजयजी राखवामां आव्युं. रामचंद्र पण तेमना शिष्य तरीके संवेगी दीक्षा लई श्री कमलविजयजी तरीके ओळखाया. श्री कमलविजयजी महाराजनी अपूर्व योग्यताए आखा समाजमां मान पेदा कर्युं. तेवामां श्रीमद् आत्मारामजी महाराजनो स्वर्गवास थयो. आ पछी कमलविजयजी महाराजनी योग्यता निहाळी सं. १९५७ मां पाटण मुकामे तेओश्रीने आचार्य बनाव्या अने श्री विजयकमलसूरीश्वरजी (पजाबी) तरीके ओळखाया.

तेओश्रीनुं शास्त्रीय ज्ञान अपूर्व हतुं. आगमना केटलाय भागो कंठस्थ हता. पंजाब, राजपुताना, मारवाड, बंगाळ, माळवा, गूजरात, काठियावाड आदि दरेक देशोमां उग्र विहार करी धर्मप्रभावना करी. तेमज पंजाबी हीराचंद जेवा महान् शिकारीने धर्मबोध पमाड्यो. इडरना महाराजा कुमारपाळना समयना बावन जिनालयनो उद्धार कर्यो. तेमज प्राचीन जैन पुस्तकोद्धार फंड, जीवदया खातानुं सहायक फंड तथा अनेक मुद्रित ग्रंथो माटे हजारो रुपिया एकठा करावराव्या. तेमना ज उपदेशना प्रतापे देवास, बारज, उमेटा, भोयर वगेरेना राजाओए जीवदयाना फरमान फेरवामां. बे बे वार श्री वडोदरा नरेश श्रीमंत महाराजा सयाजीरावे तेमनो उपदेश सांभळ्यो.

वृद्धावस्थाए पहोंचवा छतां तप अने परंतु क्रियाकाण्ड करवामां तेमणे कदी पाछी पानी न करी. वि. सं. १९८१ मां डाणा मुकामे तेओश्रीए पोताना सुशिष्य श्री लब्धिविजयजी महाराजने तथा, उपा. श्री वीरविजयजी महाराजना सुशिष्य श्री दानविजयजी महाराजने खूब धामधूम पूर्वक आचार्य पदवी आपी अने श्री विजयदानसूरिजी अने श्री विजयलब्धिसूरिजी तरीके जाहेर कर्या. आ प्रमाणे शासन प्रभावनानां अनेक कार्य करता तेओश्री नवसारी पासे जलालपोर गामे वि. सं. १९८१ ना माह वद ६ ना रोज स्वर्गवासी थया. आजे तेओश्रीना विशाळ परिवार तेओश्रीनी अनुपम कीर्तिने उज्ज्वल करी रह्यो छे.

५ श्री धर्मविजयजी महाराज

(जुओ चित्र न. ११)

स्वतंत्रता पूर्वक अने अभय मस्तीथी साधुजीवन जीवनार पंन्यासजी श्री धर्मविजयजी महाराज साधुतानी निर्भय मूर्ति हता. तेओश्रीनो जन्म सं. १९११ ना पोष वदी १४ना रोज पाटण पासेना

बरा गामना रहे० मू० दशाधीमाल्ली गामर्मा थयो हतो तेमना पितानु नाम शेठ मवाचंद मगळजी तथा मातानु नाम धाई मीरांत हतु पिता दरबारगढना कारभारी हता. तेमोनुं नाम परमचंद हतुं. सं १९५० मां परमचंदनुं छम उंदरा गाममां बेन मेना साथे थयुं परमचंदन नाटकचेटकमो वधारो शोख हतो. एक वेळा भर्तृहरीना खेल तेमना पर भजन असर करी न ते वेळा जामेमी माननामां तेमणे अमदावादना बेसना उपाश्रयमाळ पं श्री मोहनविजयजी महाराज पासे स १९५२ ना अषाड सुद ११ ना रोज दीक्षा अंगीकार करी, अने तेमनुं नाम श्री धर्मविजयजो पड्यु

श्री धर्मविजयजीए दीक्षा बाद १० वर्ष सुधी केवळ अध्ययन कर्युं तेओश्री गानपणामी संगीतमां कुशळ हता अने तेषी व्याख्यानमां श्रिसक्षामाताना विषय के तेवा प्रसंगे समाने रोनराव्या न पाले पण रोता. तेमोश्रीए मारवाड, मेवाड काठियावाड, कच्छ, वराड, माळवा, गूजरात आदि देशोमां विहार करी पोतानी सत्कीर्ति प्रसरावी केटलाय मावी जीवोने दीक्षा आपी. पोताना संसारी पत्नी बाई मेनाने पण प्रतिबोध करी दीक्षा आपी. सं १९६२ मा मागसर सुद १५ ना रोज राजनगर श्री संघे तेमन पन्यासपद अर्पण कर्युं. आ पछी तेमोश्रीए अनेक सुकृत्यो कर्यां, अनेक गामोने धर्म पमाड्यो. एक वेळा तेमोश्रीने आचार्य पदवी लवा कहेवामां आव्युं पण तेमोश्रीए पोतानी लघुता दाखवी ना पाडी.

सं १९९० मां राजनगर मुकामे मळेला मुनिसंमेलन वेळा तेमोश्रीन सारुपा न श्वासनुं दर्द उपडयुं ने चैत्र वदी सातमना सात्र पांचने पचीस मीनीटे तेओश्री कालधर्म पाम्या. आज तेओ नथी पण तेमनी कीर्ति अमरगे छ

श्री मुक्तिविजयजी गणि (श्री मूलचंदजी महाराज)

(जुओ चित्र नं ११)

या जैनसंघ गगने विमेन्दो, यः सार्वभौमः खलु जैनराज्ये।
मुनीश्वरं तं स्तुविवर्म नेतुं, मिहासहस्रं न हि मे विषाद ॥

बेओ जैनसंघरूपी आकाशना सूर्य छे अने ज जैनधर्मरूपी राज्यमां सर्वसत्ताधीश छ एवा ते मुनीश्वरनी (मूलचंदजी महाराजनी) स्तुति करवा माटे मारी पासे हजार जीभ नथी तेनुं मने दु ख छ

वर्तमानना लगभग त्रण सोथी साठ्यण सो साधुसमुदायना आचजनक तपगच्छाधिपति श्री मुलचंदजी महाराजनुं स्थान आधुनिक जमानाना इतिहासमां अमरी रीते प्रकाशी रहुं छे जीवनभर शासनसेवा करनार अने साधुसमुदायनी वृद्धिने विकास करनार श्री मूलचंदजी महाराज माटे श्रीमद् विजयानंदसूरिजी (आत्मारामजी महाराज) पण पोतानी पूजामां तेमोश्रीने 'संमतिमुक्तिगणिराजा' कहीने बिरदावे छे

गुरुवर्य श्री कुशलचंद्रजी महाराज अधिकतर वखतथी तेमनी साथे तेओ १२ वर्ष अमदावादमां रह्या हता. आखा दीक्षा पर्यायनां २१ चतुर्मासमांथी २७ चतुर्मास तो तेमणे अमदावादमां ज गाळ्यां. सं १९४४ मां तेमना पगे व्याधि उपन्यो. ए व्याधि वधतो ज गयो. तेमने अमदावादथी मेनामां भावनगर मद्रसामां आव्या पण कंई सुधारो न थयो, ने शासननो साचो सीतारो भावनगर खाते सं १९४५ ना मागसर वद ६ ना दिवसे समाधिपूर्वक आथमी गयो.

मानवीनो देह क्षणभंगुर छे, पण जीवनना सुकृत्योनी सौरभ अमर रहेवा सरजायेली छे. संसारमां साधुता ज्यां सुधी प्रकाशती रहेशे त्यां सुधी मूळचंद्रजी महाराज सदाय अमर बनी अक्षय रहेशे. एमनां कीर्तिगान सदा गवातां रहेशे.

श्री आनंदविमलसूरीश्वरजी

(जुओ चित्र नं. ११)

आजथी चारसो वर्ष पूर्वे आ पृथ्वीने पवित्र उपदेशथी पावन करनार, शत्रुंजय तीर्थना छेल्ला उद्धारक, साधु समाजना क्रियोद्धार करनार अने विशीर्ण थता जैनप्रभावने पुनः प्रकाशमय बनावनार प्रातःस्मरणीय श्री आनंदविमलसूरिजी जैन इतिहासनी एक उज्ज्वल कीर्तिरूप हता.

तेओश्रीनो जन्म इडर नगरमां वि सं १५४७मां वीशा ओसवाल ज्ञातिमां थयो हतो. तेओश्रीना पितानुं नाम मेघाजी अने मातानुं नाम माणेक हतुं. तेमनुं नाम वाघजी हतुं. अतिधनवान मातापिताना पुत्र वाघजी कुंवरने नानपणथी ज वैराग्यभावना जन्मी हती. तेवामां तपगच्छाधिपति श्रीमद् हेमविमलसूरीश्वरजी महाराजनो सुयोग प्राप्त थयो. तेमणे बाळक वाघजीमां कोई अजब भाग्य शक्ति निहाळी अने आ शासन स्तंभ थशे, एम भविष्यवाणी भाखी तेमना मातापिताने समजावी वाघजी कुंवरने वि सं १५५२ मां दीक्षा आपी अने अमृतमेरु नाम राख्युं.

अमृतमेरुनुं तेज थोडा वर्षोमां झळहळी उठ्युं. छ दर्शनना ज्ञाता अने सिद्धांत पारगामी थतां गुरुश्रीए तेमने लाडपुर नगरमां सं १५६८मां उपाध्याय पद आप्युं अने बे वर्ष बाद महोत्सव पूर्वक तेमने आचार्यपद आपी जैनाचार्य श्री आनंदविमलसूरिजी तरीके जाहेर कर्या. तेओश्री ५६ मी पाटे बिराज्या.

वि सं १२० मां तपगच्छना उद्धार पछी आ युगना वखतमां साधु संस्थामां अति शिथिलाचार प्रवेश करी गयो हतो. पूज्य गुरुदेवनी आज्ञा मेळवी श्री आनंदविमलसूरिजीए ५० साधुओने लई सं १५८२ मां पाटणनी पासे आवेल वडावली गाममां क्रियोद्धार कर्यो. आ पछी गुरुवर्ये तेओश्रीने सं १५८३ मां गच्छनायक पदे स्थापन कर्या. सं १५८४ मां आचार्येन्द्र श्री हेमविमलसूरीश्वरजी स्वर्गे पाम्या

आ पछी तेओश्री मांडवगढमां गया त्यां माणेकचंद नामनो श्रावक तेमनो परमभक्त थयो. एक वेळा शत्रुंजय माहात्म्य सांभळी ते यात्रा करवा चाल्यो अने दर्शन कर्या वगर अन्नपाणी न लेवानी प्रतिज्ञा करी. रस्तामां वडाले सिद्धपुर पासे मगरवाडामां भिल्ल लोकोए हुमलो कर्यो अने आमां तेओ शत्रुंजयना ध्यानमां मृत्यु पाम्या त्यांथी मणिभद्रवीरनी उत्पत्ति थई आ शासनरक्षक वीरने तेमणे दरेक मंदिर अने उपाश्रयमां स्थापन कर्या. अने तपगच्छ शासनना रक्षक बनाव्या

सूरिजीए माळवा मेवाड मरुधर गुर्जर, संभात सोरठ, कच्छ दमण मेदपाट वगेरे देशोमां विहार करी सत्यधर्मनी प्ररूपणा करी, अनेक कुतीर्थीओने हराव्या अने ६४ कुमतीओनो पराजय करी ६४ जिनप्रासादो उघडाव्या तेमज वि स १५८७ मां शत्रुंजय गिरि पर पधारतां त्यांनी जीर्ण मन्दिरो निहाळ्या ते वखते यात्रा करवा आवेल चित्तोडगढना रहेवासी ओसवाळ कुळना कारण कुटुम्ब दोसी कर्माशाने उपदेश आप्यो, ने तेमनी पासे सोळमो उद्धार कराव्यो

तेओश्रीए जीवनमां खूब उग्र तपश्चर्या कर्या करी हती. तेओश्री ज्यारा नीचे १८ ० साधुओ विचरता हता अने तेओए ५ ० साधुओने दीक्षित कर्या हता आ पछी विहार करता तेओश्री अमदावाद आव्या. तेमने आयुष्य के मारो अन्तिम समय नजीक छे एटले अनशन धारण कर्युं आ प्रमाणे सजमे उपवासे अमदावादमां आवेल निजामपुरामां वि सं. १५९६ ना चैत्र सुदी ७ ना प्रभात समये तेओ स्वर्गधाम सीधाव्या

तेमना नश्वर देह चाल्यो गयो पण तेमनो अक्षय कीर्ति यश शरीर अजरामर रही छे आजे ए महापुरुषने अनेक भवीओ पोतानुं कल्याण साधी रह्या छे चिरंजीव ए यशोमूर्तिने प्रत्येक मुनी वन्दना हजो.

श्री झवेरसागरजी

उक्त महाराजश्रीनो फोटो आपेल छे जेनो नं २४ छे तेओश्रीनो जीवन परिचय मेळववा माटे घणी महेनत करी पण नहीं मळवाथी ते आपी शकायो नथी ते माटे वाचक दरगुजर करशो.

—संपादक

मंत्री—महामात्य, दंडनायक, सेनाधिपति वगेरे पदवीओने प्राप्त करी, शोभावीने जैनोए गुजरातना इतिहासने उज्ज्वळ बनावेल छे. वनराजनो महामात्य जांबु, तेनो पुत्र महामात्य लहर, तेनो पुत्र महामात्य वीर, तेना पुत्रो नेढ अने विमल, भीमदेवना वखतनो प्रखर व्यवहारकुशळ पद्मामात्य [नाणां राखी] आदि. जैनो अहिंसक छे छतां नामर्द नथी तेनी साक्षी पूरता, सैंधण, मालवा, सिंध अने उत्तरमां सिन्धु नदी सुधी गुजरातनी सत्ता स्थापनार सान्तू महेता ए सचवने पोताना अनोखा व्यक्तित्वथी टकावी राखनार मुंजाल अने उदयन, आम्बड, वाग्भट आनंद ने पृथ्वीपाल; अने छेल्ले चमकी जनार वस्तुपाळ तेजपाळनी जोडी ए पाटणना इतिहासमां एक सळंग सोनेरी रूप छे. तेमना वगर पाटणनो इतिहास अधूरो लागे. आ बधा जैनो हता ते साची वात पण तेमणे उपर्युक्त पदवीओ प्राप्त करी एकली पदवीनी पूजा नथी करी, एकला राजानी पूजा नथी करी परन्तु गुजरातनी संस्कृतिमां गुजरातना बधा नवविधानमां तेमणे अगत्यनो फाळो आप्यो छे. गुजरातनी कलाने तेमणे अनोखुं स्वरूप आप्युं छे ने गुजराती साहित्यने विकसाववामां तेमणे तन मन अने धनथी सहाय करेल छे.

जेवी रीते वनराजना समयथी जैनोनो संबंध राज साथे हतो तेम जैन आचार्योनो पण हतो. तेओनी राजा पर सीधी असर हती. आथी जेम राजा विक्रमना दरबारमां साहित्यनी चर्चाओ थती; राजा भोजना समयमां जेवा दरबारमां साहित्यकारो हता, तेम पाटणना राजाओना आश्रय नीचे पण जैन साहित्यकारो [अने जैनेतर साहित्यकारो] भेगा थयेला छे. शिलांकाचार्य, महान् रूपक ग्रंथ उपमितिभव प्रपंच कथाना रचनार सिद्धर्षिसूरि, दार्शनिक विषयना असाधारण विद्वान अभयदेवसूरि, सोळ वर्षनी नानी उम्मरमां ज आचार्य पद मेळवनार नवांगवृत्तिकार श्री अभयदेवसूरि, कवि विभूषण 'कवि चक्रवर्ती' महाकवि श्रीपाळ, साहित्य सम्राट हेमचन्द्राचार्य, श्री मलयगिरि, रामचन्द्र वगेरेए जैन साहित्यनी सेवा करवामां कचाश नथी राखी. जैनेतर साहित्यनो अभ्यास करी तेनुं तुलनात्मक दृष्टिए विवेचन करवामां खामी नथी दर्शावी. आथी पण वधारे शक्य के गुर्जरराष्ट्रना उत्थानथी ते मुसलमानोना आगमन सुधीमां जैनोए ऊंच पदवीओ शोभावीने अने तेमनी देखरेख नीचे साधुओए संस्कृत अने प्राकृत वाङ्मयने विकसाववामां तेम ज अत्यारनी गुजरातीने जन्म आपवामां मोटेरो फाळो आप्यो छे.

आम पहेलेथी ज खेडाती आवती जमीनने क्रमशः एक पछी एक आचार्ये के मुनिए वधारे खेडीने साहित्यनो सुंदर पाक उत्पन्न करेलो छे, जेमां तपगच्छना आचार्योनो पण जेवो तेवो हिस्सो नथी.

विजयचन्द्रसूरि

तेओ जगच्चन्द्रसूरिना शिष्य थाय अने संसारावस्थामां वस्तुपालने त्यां हिसाबी मंत्री हता परंतु दीक्षा लीधा पछी ज वस्तुपाळे तेमने सूरिपद अपाववा महेनत करी हती. विजयचंद्रसूरि आचारमां शिथिल हता आथी अने देवेन्द्रसूरि तथा विजयचन्द्रसूरि खंभातमां नाना मोटा उपाश्रयमां रहेल होवाथी विजयचन्द्रसूरिनो परिवार वृद्धतपागच्छना नामे ओळखायो आथी तेमना शिष्योए करेल साहित्यनी सेवामो उल्लेख क्यांय मळी शक्यो. विजयचन्द्रसूरिए देवेन्द्रसूरिने सुदर्शना चरित्र रचवामां मदद करी हती तेम ज तेमनी श्राद्धदिन कृत्यसूत्रवृत्ति सुधारी हती. तेमणे साहित्यनुं सर्जन करवाने बदले साहित्यने टकाव्युं छे तेमना उपदेशथी केटलीक कथाओ, चूर्णि अने निर्युक्तिओ ताडपत्र पर लखायेल छे

विद्यानंदसूरि

ते देवेन्द्रसूरिना शिष्य हता साहित्यनी बहु सेवा करे ते पहेलां ज तेओ काळधर्म पाम्या छे छतां तेमणे ए उमरमां 'विद्यानन्द' नामनुं नवु व्याकरण रच्युं छ जेनी अन्दर 'सर्वोत्तम स्वल्प सूत्र-बहुअर्थ संग्रह' छे तेमना गुरु देवेन्द्रसूरिए नव्य कर्मग्रंथ पर स्वोपज्ञ टीकाओ रची हती तेमां हरिभद्र कृत नंदीसूत्र टीका मलयगिरि कृत सप्ततिका टीका शतक चूर्णि अने धर्मरत्न टीकानो उल्लेख छे आ टीका विद्यानन्दसूरि अने तेमना बन्धु धर्मघोषसूरिए संशोधेल छे

धर्मघोषसूरि

विद्यानंदसूरिना अवसानथी देवेन्द्रसूरिनी पाटे धर्मघोषसूरि आव्या विद्यानन्दसूरिना ते संसारावस्थाना भाई थाय तेमनुं मूळ नाम धर्मकीर्ति हतुं अने दीक्षा लीधा पछी तेमणे ते नाम सार्थक करेल छे भगवती सूत्रना वांचन वखते ज्यां ज्यां 'गोयमा' शब्द आवतो त्यां त्यां एक सोनामहोर मूकी छत्रीस हजार सोनामहोरथी आगमनी पूजा करनार पेथड मंत्रीना ते गुरु हता आ रकमथी धर्मघोषसूरिए घणां ग्रंथो लखाव्या हता, संशोधन कराव्युं हतुं अने तेने भंडारमां एकत्रित कर्यां हता. तेमणे बहु विहार करी जनताना हृदय सुधी प्रवेश कर्यो हतो. तेओ प्रखर मंत्रवादी हता तेमणे संघाचारभाष्यवृत्ति श्रुतधर्मस्तव कायस्थिति-भवस्थितिस्तव चतुर्विंशति जिनस्तव, चतुर्विंशति प्रस्तावशैल्यादि स्तोत्र देवेन्द्रैरनिशं कोर श्लेष स्तोत्र, 'यूयं यूयां त्वमिति' श्लेष स्तुति जय वृषभेत्यादि स्तुति छे आ सिवाय कालसप्तति—दानपूरि—कालस्वरूपविचार तथा एकसो बेतालीस आदिकमां प्राकृतमां अने त्रिशत्कल्प प्राकृतमां दुःषम काल संघ स्तोत्र वगेरे पुस्तको रच्यां छ

जगच्चन्द्रसूरि पछी तपागच्छमां धर्मघोषसूरिए जैन साहित्य, संस्कृति अने कल्याणमां जे शिथिलता पेठी हती तेने दूर करवा माटे यत्न करेल छे

सोमप्रभसूरि

धर्मघोषसूरिनी पाटे आवनार सोमप्रभसूरि हता. तेओ बहुश्रुत हता अने वादविवादमां निपुण हता. दक्षिणदेशमां अमरसिंह वगेरे प्रतिपक्षीने महात करीने चित्तोडमां तेमणे ब्राह्मणोनी सभामां विजय मेळव्यो हतो. गुरुनी जेम ते पण प्रकट मंत्रसाधक अने अपूर्व साहित्य धरावी हता. तमाम जैन आगमोना तेओ ऊंडा अभ्यासी हता. भविष्यकाळनो भविष्यमां थनारो भंग पोताना ज्ञानबळे तेमणे जाणी लीधो हतो.

तेमणे सचित्त यतिजितकल्पसूत्र वगेरे प्रकरण रच्या छे अने अठ्ठावीश यमक स्तुति वगेरे रची छे. वळी सुक्तिमुक्तावली [सिन्दूर प्रकर] रच्यानो पण उल्लेख छे.

सोमप्रभसूरिना शिष्योमां विमलप्रभसूरि, परमानन्दसूरि, पद्मतिलकसूरि अने सोमतिलकसूरि मुख्य हता पण आगळना त्रण सूरिनु अकाळ अवसानथी सोमतिलकसूरि पाटे आव्या.

सोमतिलकसूरि

तेमणे त्रणसो सत्यावीश गाथानु नव्य क्षेत्र समासप्रकरण रच्युं छे. विचार सूत्र, सप्ततिका स्तवनक अने पोताना गुरु सोमप्रभसूरि कृत अठ्ठावीस यमक स्तुति पर वृत्ति रची छे. वळी तेओ कवि हता. आथी पद्मसि० शुभभावानत, श्री महावीर स्तुत्र० कमलबन्धस्तव, शिवशिरसिम श्री नाभिसंभव० श्री शैवेय वगेरे घणां स्तवनो रच्या छे. पद्मतिलकसूरि, चंद्रशेखरसूरि, जयानन्दसूरि अने देवसुंदरसूरि तेमना परिवारमां विद्वान शिष्यो हता.

चंद्रशेखरसूरि

तेमणे उषितभोजनकथा, यवराजर्षिकथा, श्रीमद्–स्तंभनकहारबन्धस्तवमानि वगेरे रचेल छे.

जयानंदसूरि

श्री स्थूलिभद्रचरित्र देवा प्रभोदं वगेरे घणा स्तवन रचेल छे.

चौदमी सदीमां मुसलमानोए गुजरातमां प्रवेशवुं शरू करी दीधुं हतुं अने पंदरमी सदीनी शरूआतमां तो तेमणे पोतानी सत्ता जमावी दीधी हती. मुसलमानो आव्या ने तेमनु जनून साथे आव्युं हिंदु राज पायमाल थयु. मंदिरो अने देरासरो भेदाया लाग्या. मूर्तिओ भोंयरामां संतावा लागी. शिल्प अने स्थापत्यकळा सताई गई. जैन मंदिरो मस्जीदमां परिणमवा लाग्या. आथी अंधाधूंधीमां ब्राह्मणोनो नाश थयो. तो कोई पोतानी मानमर्यादा, जैनो टक्यो अने वाद सभाओमां ब्राह्मणो ना मनमां ज गया. सरस्वती देवी अप्रसन्न थइ तेमनी पासेथी जती रही. जैन मुनिओ पर पण आ अंधाधूंधीनी असर थई. परन्तु स्व० रणजीतरामे कह्युं छे तेम आ अंधाधूंधीमां नासभाग करता

मुसलमानोए शारदा सेवन त्यजी दीधुं, पण मंदिरो प्रतिमा आदिनी आशातना थता त्यारे जैन साधुओ पोताना अभ्यासमां आसक्त रह्या ने शारदा देवीने अपूज न थवा दीधी

जो के भाषानी असर था थई प्राकृत अने संस्कृत भाषानुं महत्व घटी रह्युं वळी एवी भाषाने आश्रय आपनार हिंदु राजाओ तथा धनवानोनो आश्रय खतो रह्यो. आथी तेना अभ्यासीओ पण ओछा थता गया त्यारे प्राचीन भाषामां पठन पाठन बंध थयुं. त्यारे देश भाषामां अने धर्म प्रदीप तो चाली शके के मूळ–गुजरातीमां धार्मिक व्याख्यानो ज्योतिष, कर्मकांड वगेरे वस्तु लखावा लागी. मुसलमानो नाश करसे एवी बीके साधुओए ताडपत्रो अने ताम्रपत्रोने भंडारोमां अंदर पुरावी दीधा आथी नवा सर्जननी शरूआत थई साधुओए संस्कृत अने प्राकृतने छोडी दई गुजराती भाषामां गद्यमां अने पद्यमां रास आख्यान अने कथा लखवा शरू करी दीधां अंधाधूंधीना समयमां बीजी कोई पण सत्ता करतां जैनोए वधारे भाषा साहित्यनुं सर्जन थयुं छे अने ए आश्चर्यनी वात छे वळी एनी पण साथे नोंध लेवी जोईए के प्रबन्ध लखवानी रीति श्री हेमचंद्राचार्ये दाखल करेली तेने आ युगमां बहु जोम मळ्युं अने तेथी विशेष प्रबन्ध लखाता शरू थया

देवेन्द्रसूरि अने विजयचंद्रसूरिना उपदेशथी अनेक ग्रन्थो ताडपत्र पर लखाया हता तेमना पछी लगभग सो वर्षे श्री देवसुन्दरसूरिए तेमनाथी जुदी ज जातनुं पण सुन्दर कार्य कर्युं

देवसुन्दरसूरि

सोमतिलकसूरिना चार मुख्य शिष्योमांथी देवसुन्दरसूरि पाटे आव्या तेओ महाप्रभाविक आचार्य हता. तेमणे साहित्यना पुनरुद्धार माटे करेली मेहनत आश्चर्यकारक छे अत्यार सुधी जे जे ग्रन्थो ताडपत्रो पर हता तेने कागळ पर लखावी तेनो उद्धार कराव्यो.[१] साहित्यना रक्षणनी तेमनी आ सेवा कांई जेवी तेवी नथी. तेमनी बीजी सेवा ते तेमणे उत्पन्न करेल तेमना विद्वान शिष्य समुदायनी छे

ज्ञानसागरसूरि

तेमना ग्रन्थो आवश्यक पर अवचूर्णि, उत्तराध्ययन पर अवचूर्णि, ओघनिर्युक्ति पर अवचूरि मुनिसुव्रतस्तव घनौघ नवखंड पार्श्वनाथस्तव छे

१ कुमारपालना समयमां कागळनी प्रथम प्रतो. सं. ११ १–५ना कागळ पर लखायेल पुस्तक मळे छे.

कराव्युं. एमां सोमसुन्दरसूरिना शिष्योनो पण फाळो मोटो हतो. कहेवाय छे के महि नहि शोम पेथडनी सर्वोना मध्यथी भगवतसूत्रीमां सोना मह्ोरो मूकाई हता. एक श्रावके ज आ सूरिना उपदेशथी अगियार मुख्य अंगोनुं संस्करण कराव्युं हतुं. मुसल्मानोनुं जोर वधतुं जतुं हतुं, छतां जैनोए तिम्होथी भावता मुघाओ साथे मैत्री साधी लीधी हती अने क्वचित क्वचित ज भावी जैन समाजने शोषवुं पड्युं.

तेमना रचेला ग्रन्थोमां षडावश्यक पयन्ना पर संस्कृतमां अवचूरि, कल्याणादि विविधस्तव, माष्यत्रयचूर्णि रत्नकोष, नमस्तवो वगेरे, संस्कृत सर्वनाम 'युष्मद् अस्मद्' अने जुदा जुदा रूपो बीजा शब्दो साथे बहुव्रीहि समास करे छे ते प्रकार स्तोत्रमां अध्यात्म स्तवो, सप्तति पर अने आतुरप्रत्याख्यान पर भुवनतुंगसूरिनी वृत्ति-चूर्णि परथी अवचूर्णि ए मुख्य छे. आ सिवाय गुजराती भाषामां जैनग्रन्थो पर बालावबोध गद्यानुवाद रच्या, जेमां उपदेशमाळा पर, योगशास्त्र पर, षडावश्यक पर, आराधनापताका पर, नवतत्त्व पर, नेमीचंद्र भण्डारी कृत षष्टिशतक पर बालावबोध रच्या छे. वळी तेओ कवि पण हता. तेमना ग्रन्थोमां आराधनारास, नेमिनाथ नवरसफाग अने स्थूलिभद्रफाग मुख्य छे.

सोमसुन्दरसूरिनो शिष्य-परिवार मोटो हतो अने विद्वान हतो. तेमना शिष्यो प्रखर लेखक, उपदेशक वादी अने ग्रन्थकार थयेल छे. सोमसुन्दरसूरिना समयमां अने पछी कथा साहित्य पोषण करतां पण वधारे विकास पामेल छे.

टूंकमां जैनधर्मना मन्दिरनिर्माणथी आचार्यपद अने पाठकपदना करावेल उत्सवोथी पुस्तकोना उद्धारथी, अने लोकभाषामां ग्रन्थो रचवाथी-एम अनेक प्रकारे तेमणे जनसमुहनी सेवा करेल छे. तेमणे प्रतिष्ठाओ करी छे. शिष्य-कळामां विशेष ध्यान आप्युं छ अने भण्डारोमां पुरायेल साहित्यने फरी व्यवस्थ करी तेम ज पाठक विद्वान शिष्यनो समुदाय मूकी साहित्यनी अपूर्व सेवा करी छे.

तेमना शिष्यपरिवारमां मुनिसुन्दरसूरि, जयसुन्दरसूरि,[१] भुवनसुन्दरसूरि अने जिनसुन्दरसूरि मुख्य छे.

जयसुंदरसूरि

पोतानी विद्वताथी तेमणे कृष्णसरस्वती-कृष्णवाग्देवता एवुं बिरुद प्राप्त कर्युं हतुं. तेओ कर्मग्रन्थ अने सम्मतितर्कना खास अभ्यासी हता. प्रत्याख्यान स्थानविवरण सम्यक्त्वकौमुदि, प्रतिक्रमणविधि वगेरे प्रकरण तेमना रचेल ग्रन्थ छे.

१. जैन साहित्यना संक्षिप्त इतिहासमां तेमने जिनकीर्तिसूरि जणाव्या छे.

अने इतिहासनी अंदर प्रकाश फेंकनार हशे ते तेना परथी जाणी शकाय छे दुःखमां आतो मोटो अने प्रौढ पत्र कोईए हजु सुधी छप्यो होय एवु कोईनी जाणमां नथी.

आ सिवाय वाक्तगस, अने वस्तिगरठ विर्डगति तेमनी कृतिओ छे

रत्नशेखरसूरि

रत्नशेखरसूरि सोमसुंदरना शिष्य थाय तेओ मुनिसुंदर पछी पाटे आव्या तेओ विद्वान हता एटलुं ज नहि परंतु प्रखर अभ्यासी अने वादी हता यौवन-वये पण तेमणे दक्षिणना वादीओने वाद करी नमाव्या हता वळी संभातना बांबी नामना विद्वान द्वारा तेमने 'बालसरस्वती'नो इल्काब मळ्यो हतो

अर्थदीपिका नामनी श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र पर वृत्ति, श्राद्धविधिसूत्रवृत्ति–विधि कौमुदी नामनी वृत्ति, षडावश्यकवृत्ति अने चार हजार पांसठ श्लोक प्रमाणनो आचार प्रदीप ग्रंथ तेमणे रच्या छे

वळी एवो पण उल्लेख मळे छे के प्रबोधचंद्रोदय वृत्ति तेम ज हैमव्याकरण पर अवचूरि तेमणे रचेल छे

लक्ष्मीसागरसूरि

७ वर्षनी नानी उमरे तेमणे दीक्षा लीधी हती अने एवा एक चित्ते अभ्यास कर्यो हतो के सिद्धांतग्रंथोनी अंदर तेमणे वादीभान पाछिल कर्या हता तेमणे गच्छभेद दूर करवा महेनत करी हती तेमना उपदेशथी श्रमणसाधना एक गृहस्थ ज्ञानकोश लखाव्यो हतो जेमांनी पन्नवणासूत्रनी एक प्रत हजु हयात छे वळी तेमणे वस्तुपाळ रास रच्यानो उल्लेख मळे छे

श्री लक्ष्मीसागरसूरिनो पाटे सुमतिसुन्दर आव्या तेमनी पाटे श्री हेमविमलसूरि आव्या

हेमविमलसूरि

सूयगडांगसूत्र पर तेमनी दीपिका होवानो उल्लेख मळे छे तेम ज तेओ कवि पण हता अने मृगापुत्र उपर सज्झाय रचेली छे

आनन्दविमलसूरि

हेमविमलसूरिनी पाटे आनन्दविमलसूरि आव्या

आ समये अव्यवस्था घोर हती मुसलमानो अन्यायीनो जेम सर्व हिन्दुओने हेरान करता हता वळी धर्म धर्म वच्चे झगडा चालता हता आचार–विचारमां शिथिलता आवी गई हती.

तेमणे धर्मशिथिलता दूर करवा यत्न कर्यो जनसमुदाय पर तेमनी उग्र तपश्चर्या तथा निःस्पृहपणाने लई सारी छाप हती तेमणे साधुओने माटे पांत्रीस बोलना नियमनो लेख लखी बहार पाड्यो हतो, जेनी अन्दर साधुए पाळवाना आचार विचार संबंधी नोंध छे

भुवनसुंदरसूरि

पन्नवणापापन स्तवनो पारमेय रच्यो छे वळी कुलार्क नामना एक योगाचार्ये शब्दनुं अशाश्वतपणुं बतावता सोळ अनुमानपर महाविद्या नामनी एक दसश्लोकी ग्रंथनी रचना करेल तेना पर विवरण नामना एक टीकाकारे वृत्ति रची हती. भुवनसुंदरसूरिए तेना पर विवृति रची तेम ज टिप्पण अने विवरण रच्यां आ सिवाय लघुमहाविद्या विडंबन अने व्याख्यानदीपिका वगेरे तेमना रचेला ग्रंथो छे

जिनसुंदरसूरि

तेमना ग्रंथोमां गुरु–नमस्कारस्तवपर स्वोपज्ञ वृत्ति उत्तमकुमारचरित्र श्रीपाल गोपाल कथा चंपकश्रेष्ठी कथा पंचजिन स्तव धन्यकुमारचरित्र–दानकल्पद्रुम, श्राद्धगुण संग्रह अने दीपालिका कल्प छ तेओ बहुश्रुत हता

मुनिसुंदरसूरि

सोमसुंदरसूरिनी पाटे पाटे आवनार मुनिसुंदरसूरि हता तेओ सिद्धसारस्वत कवि हता अने सहस्रावधानी हता तेओमां सूरिमंत्रनी स्मरण करवानी शक्ति प्रबळ हती अने पोतानी शक्तिथी ते हरकोईपर प्रभाव पाडी शकता शान्तिकर स्तवन तेमनु रचेलुं छ मारीक वर्गनी शान्ति थई तेमणे न्याय व्याकरण अने काव्य ए त्रणे विषयना परिचय आपतो त्रैविद्यगोष्ठी नामनो ग्रंथ रच्यो. ए तेमनो अगाध ज्ञानशक्तिनो सबळ अने सचोट पुरावो छे

अध्यात्मकल्पद्रुम–शान्तरसभावना उपदेशरत्नाकर स्वोपज्ञवृत्ति सहित अनेक प्रस्तावोमां जिन-स्तोत्र रत्नकोश, जयानंद चरित्र शान्तिकर स्तोत्र मित्रचतुष्ककथा सीमंधरस्तुति प्राकृतमां पाक्षिक सत्तर, अंगुलसत्तरी रचेल छे वळी योगशास्त्र–चतुर्थप्रकाशना बालावबोध तेमणे रचेल छे

तेओ वादमां पण प्रत्यक्ष प्रभा शाली हता खंभातना मुसलमान सुबाए तेमनाथी प्रसन्न थई तेमने वादि–गोकुल संकट एवो इल्काब आप्यो हतो.

तेमनु सुंदरमां सुंदर कार्य त्रिदशतरंगिणी नामना तेमनाथी रचायल विज्ञप्तिपत्रनु छे आ विज्ञप्तिपत्र तेमणे तेमना गुरु देवसुंदर पर मोकल्यो हतो, परंतु अमुकसमयना विज्ञप्तिपत्रना साहित्य अने इतिहासमां ते अजोड छे ते लगभग एकसो आठ हाथ लांबो हतो. तेमां एक एकथी चडे एवा अनेक चित्रो हता अने सेंकडो काव्य रचनामां आव्या हता. तेमां त्रण स्तोत्र अने एकसठ तरंग हता. ते हालमां पूरो मळतो नथी जे भाग मळे छे तेमां त्रीजा स्तोत्रना गुर्वावली नामनो पांचसो पद्यनो एक विभाग मळे छे जेमां प्रभावक चित्रबंध केटलाक श्लोको छे अने तेमां श्री महावीरथी तेमना समयसुधीना तपगच्छना आचार्योनुं सहित वर्णन छे त्रीजा स्तोत्रनो एक ज विभाग त्यार बादनो छापो मळे छे त्यार बाद आ साथेनो विज्ञप्तिपत्र करतो मोटो, अर्थगंभीर

तेमणे योगशास्त्रना प्रथम श्लोकना ज पांचसो अर्थ कर्या छे आ सिवाय सुमित्ररास नामनी एक कृति तेमणे रचेल छे

विजयसेनसूरि पछी विजयतिलक ने विजयसेनसूरिनी पाटे विजयदेवसूरि थया विजयतिलकसूरिथी आनन्दसूरिनी नवी शाखा फूटी

विजयदेवसूरि

तेमना संबंधी पुरातत्त्वना पुस्तक भंडारमां श्री विजयविजयजीए नोंध लखेली छे तेना परथी एटलुं जणाय छे के तेओ प्रखर शास्त्रार्थ करनारा अने मंत्रशास्त्री हता पण तेमनी एके कृति होवानो उल्लेख मळतो नथी तेमनी केटलीक सज्झायो होवानो उल्लेख मळे छे

तेमनी पाटे श्री विजयसिंहसूरि आव्या तेमना लघुगुरुभाई विजयप्रभसूरि हता

विजयसिंहसूरिनी पाट उपर ने ते पछी छेक श्री विजयानन्दसूरिना समय सुधीमां पाट उपर आवेल मुनिओमां मुख्यत्वे गणि पन्यास, वगेरे छे परन्तु कोई सूरि नथी एटले के विजयसिंहसूरि पछी लगभग एक सैका सुधी पाट उपर कोई आचार्य आव्युं नथी छतां तेटला अन्तरमां महान विभूतिओ थई गयेली छे तेमणे साहित्य सर्जनमां अद्भुत फाळो आपेल छे तेमनी नोंध लेवा वर्ता आगळना आचार्योना महान शिष्याने अन्याय थाय तेम छे छतां ते सदी छोडीने पण एक सैकाना अन्तरमां साहित्यनुं सर्जन की रीते टकी रह्युं हतुं तेनी उपर टपके नोंध न लईए तो ते सैकाने अन्याय थाय तेम छे आ समयना केटलाक विद्वान त्यागीओने सूरिपदनो इन्कार नहोतो मळ्यो, पण तेमनी ते मेळववानी इच्छा न हती; तेओ स्वयं सूर्य ज हता आजना कहेवाता सूरि करतां तेओ महान हता

तेमां विजयसिंहसूरि पछी तरत श्री यशोविजयजी उपाध्याय नजरे पडे छे तेमणे रचेल साहित्यनी यादी विशाळ छे ने तेमां तरह तरहना सुगन्धीदार अमर–पुष्पो छे तेमना रचेला ग्रन्थोमां सत्तावीस ग्रन्थो अत्यारे उपलब्ध छे पांचेक ग्रन्थो उपलब्ध छतां अप्रकट छे, ज्यारे बाकीना घणेक ग्रन्थो अनुपलब्ध ज छे

'आ युगना प्रकाण्ड न्यायविषयक उच्च साहित्य तरफ नजर करीए तो जणाशे के ते अनेक व्यक्तिओने हाथे रचायुं नथी तेना लेखक फक्त एक ज छे अने ते सत्तरमां अढारमां सैकामां थयेल सो [साट '] वरसो सुधी शासनोना सिद्ध करनार संस्कृत प्राकृत गुजराती, अने मारवाडी चार भाषामां विविध विषयोनी चर्चा करनार उपाध्याय श्री यशोविजयजी छे उपाध्यायजीना जैन तत्त्वज्ञान आचार अलंकार छन्द वगेरे अन्य विषयोना ग्रन्थने बाद करी मात्र जैन न्यायविषयक ग्रन्थ पर नजर नाखीए तो पण कहेवुं पडे छे के सिद्धसेन ने समंतभद्रथी वादिदेवसूरि ने हेमचन्द्र

विजयदानसूरि

मोगलो आ समये स्थिर थये जता हता अने अव्यवस्थाएं मोटी थवा लागी हती. ते समये विजयदानसूरि आनन्दविमलसूरिनी पाटे आव्या. तेमनी भारेमां भारे सेवा ए छे के तेमणे खरतरगच्छ अने तपागच्छ बन्ने वच्चे वैमनस्यने टाळ्युं अने एकबीजाना तरफथी उत्पन्न थयेल तेवा साहित्यने जलशरण कराव्युं जेथी कोईना मन खाटा न थई शके. तेमणे सात बोलनी आज्ञा पण काढेल छे

हीरविजयसूरि

श्री विजयदानसूरिनी पाटे श्री हीरविजयसूरि आव्या तेमणे नानी वये ज दीक्षा लई गुरुनी आज्ञा लई दक्षिणना देवगिरिमां नैयायिक ब्राह्मण पासेथी विविध प्रमाणग्रन्थो—तर्कपरिभाषा मितभाषिणी शशधर मणिकंठ, वरदराजी, प्रशस्तपादभाष्य, वर्धमान वर्धमानेन्दु, किरणावली वगेरेनुं अध्ययन कर्युं. वळी तेमणे सामुद्रिक ज्योतिष अने लक्षणशास्त्र आदिमां निपुणता प्राप्त करी हती.

तेओ एक सारा कवि हता शान्तिनाथरास द्वादश जनविचार मृगावती, प्रभातियुं, अंतरीक्ष पार्श्वनाथ स्तव वगेरे तेमनी कृतिओ छे पण तेमणे कोई ग्रंथ रच्या होवानो उल्लेख नथी. एक ज उल्लेख मळे छे के तेमणे संवतमां जम्बुद्वीप प्रज्ञप्ति पर टीका रचेल छे

तेमोए ग्रंथो नथी रच्या ए साची वात, ग्रंथो रचीने साहित्यनी सेवा नथी करी ए साची वात पण तेमनी परोक्ष रीते साहित्य पर भारे असर छे

पाटणना राजानी साथे जेवो जैनो अने जैन मुनिओनो संबंध हतो तेवो ज गाढ संबंध हीरविजयसूरिए अकबर साथे कर्यो. अकबरनी विद्वान मंडळीमांना तेओ एक हता. हीरविजयसूरिनो शिष्य समुदाय बहोळो हतो अने तेओए हीरविजयसूरि पासेथी अनुभव अने ज्ञान मेळवी जे साहित्य रच्युं छे ते हीरविजयसूरिना नामने ज वधु प्रदीप्त करे तेम छे

तेमना युगमां एक सदी सुधी वधारेमां वधारे असर तेमनी रही हती. हीरविजयसूरिए जिन्दगी सुधी विहार करवामां अने जैन समाजना बीजा हितकारक कार्यो करवामां पोतानी शक्ति वापरेली छे छतां तेमना उपदेशथी अने सूचनाथी तेमना शिष्योए संवतमां काव्यो रच्या छे पण साथे साथे गुजरातीमां काव्यो रच्या छे

जैन धर्माचार्यो अने जैन समाजनुं ज्यारे पतन थवा लाग्युं त्यारे हीरविजयसूरिए काम लई फरी तेनी जाहोजलाली प्रकाशित करी छे

विजयसेनसूरि

तेओ हीरविजयसूरिनी पाटे आव्या तेओ हीरविजयसूरिनी हाथ नीचे ज तैयार थयेला हता एटले प्रखर अभ्यासी हता तेमणे सुरतमां चिन्तामणी मिश्र वगेरे पंडित समक्ष भूषण नामना दिगम्बराचार्य साथे शास्त्रार्थ करी तेमने निरुत्तर कर्या हता.

सुधीमां जैन न्यायनो जेटलो जेटलो विकसित थयो हतो ते पूरेपूरो उपाध्यायजीना तर्क ग्रन्थोमां मूर्तिमान थाय छे अने वधारामां ते उपर एक कुशळ चित्रकारनी पेठे तेमणे एवा सूक्ष्मताना, स्पष्टताना अने समन्वयना रंगो पूर्या छे जेनाथी मुग्ध थइ आपोआप एम कहेवाइ जाय छे के पहेलुं अने पछीनुं समग्र जैन न्याय विषयक साहित्य कदाच न होय अने मात्र उपाध्यायजीनुं जैन न्यायविषयक समग्र साहित्य उपलब्ध होय तोये जैन वाङ्मय कृत कृत्य छे।[1]

अति-प्रखर नैयायिक-तार्किक शिरोमणि समन्वय सुधारक, अजोड विद्वान्, योगवेत्ता उपाध्याय ने मुनिनिधान यशोविजयजी उपाध्याये हेमचन्द्राचार्य के हरिभद्रसूरिनी गरज सारी छे ने जैन वाङ्मयने विकसाववामां तेमणे पूरेपूरो फाळो आपेल छे

अध्यात्मसार देवधर्मपरीक्षा अध्यात्मोपनिषद्, आध्यात्मिकमतखंडन सटीक, यतिलक्षण समुच्चय नयरहस्य नयप्रदीप नयोपदेश जैनतर्कपरिभाषा ज्ञानबिंदु, ज्ञानसार, द्वात्रिंशत्-द्वात्रिंशिकासटीक कर्मप्रकृति पर टीका ज्ञानसार पातंजल योगसूत्रना चतुर्थ पाद पर वृत्ति, अस्पृशद्गतिवाद सटीक, गुरुतत्त्वविनिश्चय ने ते पर स्वोपज्ञ टीका सामाचारी प्रकरण टीका साथे, आराधक विराधक चतुर्भंगी प्रकरण प्रतिमाशतक योगविंशिका पर विवरण, न्यायामृततरंगिणी नामनी स्वोपज्ञ टीका अध्यात्ममतपरीक्षा सवृत्ति हरिभद्रसूरिकृत-शास्त्रवार्ता समुच्चय पर स्याद्वादकल्पलता नामनी टीका हरिभद्रसूरिकृत षोडशक पर योगदीपिका नामनी वृत्ति, उपदेशरहस्यसवृत्ति न्यायालोक, महावीर स्तवन सटीक [न्यायखंडनखाद्य प्रकरण], भाषारहस्य सटीक, तत्त्वार्थवृत्ति वैराग्यकल्पलता धर्मपरीक्षा सवृत्ति, चतुर्विंशति जिन-स्तोत्र स्तुतय परमज्योति पंचविंशतिका परमात्म ज्योति पंचविंशतिका प्रतिमास्थापन न्याय, प्रतिमा शतक पर स्वोपज्ञवृत्ति, मार्गपरिशुद्धि अने तेमना जेवो मुद्रित थयेला मळे छे; अनेकांतमत व्यवस्था अष्टसहस्री विवरण, [समन्तभद्रकृत आप्त परीक्षा उपर दि. अकलंक देवना आठसो श्लोकना भाष्य पर दि. विद्यानंद स्वामीनी आठ हजार श्लोकनी टीका] स्याद्वादमंजूषा स्तोत्रावली-स्तोत्रावलि तत्त्वपरीक्षा सवृत्ति अने ग्रंथो अप्रकट छे ज्यारे आकर, मंगलवाद विधिवाद, वादमाला त्रिसूत्र्यालोक, द्रव्यालोक प्रमारहस्य स्याद्वादरहस्य ज्ञानार्णव कूपदृष्टांत विशदीकरण अलंकारचूडामणी टीका मार्गस्थवृत्ति अध्यात्मबिंदु, कर्मप्रकृतिसटीका छंद चूडामणि टीका तत्त्वालोक विवरण वेदान्तनिर्णय वैराग्यरति सप्तभंगी प्रकरण सिद्धान्त तर्क परिष्कार, सिद्धान्तमंजरी टीका अने तेमनी अनुपलब्ध कृतिओ छे

साथसाथे तेमना ज समकालीन अनुभव योगी मुनिश्री आनंदघनजीने याद करवा ज घटे. तेमनां हिंदी गुजराती मिश्र भाषामां रचेल चोवीस तीर्थंकरोना चोवीस स्तवनो अपूर्व छे अने

१ पंडित श्री सुखलालजीनो जैन न्यायनो क्रमिक विकास नामनो सातमी गुजराती साहित्य परिषदनो निबंध

आचार्योंनी ज्यां ज्यां नजर पडी छे त्यां ते विषयमां ऊंडा उतरवानी दरकार तेमणे लीधी छे अने साहित्यना कोई पण विषय पर हाथ अजमाववा तेमणे बाकी नथी राख्यो. वळी तेओ निःस्पृही होवाथी श्रावक समुदाय पासेथी समयने अनुसरी काम लीधेलुं छे तेमना उपदेशथी स्थापेल हजारो ताम्रपत्रो ने पुस्तको भंडार जेवी ने तेवी स्थितिमां भंडारोमां मोजूद छे आ वस्तु पाछळ जैन समाजे फक्त पैसो ज नथी खरच्यो पण तेमने साचवी ताम्रपत्रो ने पुस्तको सलामत छे ताम्रपत्र परथी पुस्तकने कागळ उपर उतारवामां पण पाटणनी ओहेमत उल्लेख छे तपगच्छना आचार्योए प्रबन्ध लखवानी कल्पने अने लोककथा साहित्यने वधु विकसावेल छे, अने ए द्वारा गुजराती भाषानुं सर्जन पण करेल छे

तेओनी—साधुओनी एक विशिष्टता ए पण छे के तेओ जीवता जागता भंडारो समा छे तेमनी पीठ पर ज ज्ञान–भंडारनुं वहन थाय छे आथी ने विहारथी अन्य कोई धर्मना साधुए ए कार्य नथी कर्युं ते जैन धर्मना साधुओए करी बताव्युं छे बल्के तेमांय तपगच्छना आचार्योनो मोटो फाळो छे तेमज तपगच्छना स्थापक जगच्चन्द्रसूरिथी आज सुधी एटले के लगभग सातसो वर्ष सुधी—शिल्प स्थापत्य तथा बीजी कळाओ साथे साहित्य सर्जन अने रक्षणमां जराये कचाश आववा नथी दीधी, बल्के तेमां उमेरण कर्युं छे अने ए द्वारा जैन संस्कृतिने टकावी राखी छे, जैन इतिहासने चालतो राख्यो छे, जैनोनी महत्तान तेमणे स्थिर पायाथी बनावी छे ते माटे खरेखर तेओ वंदनीय छे, स्मरणीय छे ने पूजनीय छे

भाई जयंतीलाल आ निबन्ध लखवा माटेनी मने तक आपी ते बदल तेमनो आभार मानुं छुं ने निबन्धमां जे क्षति रही गई होय ते बदल वाचकनी क्षमा मागी आ निबन्ध पूर्ण करुं छुं

C/o गूर्जर प्रकाशन कार्यालय
गांधीरोड अमदावाद
मौनअगियारस : १९९९

इन्द्रियपराजय दिग्दर्शन आत्मोन्नतिदिग्दर्शन जैनतत्त्वज्ञानम्, देवद्रव्यसंबंधी मारा विचारो, प्रमाणपरिभाषा ऐतिहासिक तीर्थमाळा संग्रह, ऐतिहासिक रास संग्रह–त्रणभाग ने देवकुलपाटक-निबंध, [देलवाडानो इतिहास] ए तेमना मुख्य पुस्तको छे

इटली, जर्मनी, फ्रांस, इंग्लांड ने अमेरिकामां जैन साहित्यना अभ्यासीओ उत्पन्न करावानी तेमनी सेवा मोटामां मोटी छे

महावीरनुं तप एटले ज्ञाननी ऊंडी शोध ए ज्ञाननी ऊंडी शोध माटे पोतोते तीर्थंकराए महा तप कर्युं हतुं ने महावीरे चतुर्मां चतु कष्ट भोगवी तेनी शोध करी हती. तेमणे ये ज्ञान गणधरो समक्ष मूक्युं, अने उपदेश आप्यो ते सुधर्मा स्वामी, वगेरेए बाळवी राख्यो ने ते साहित्य श्रुतसाहित्य ने नामे ओळखायुं. परन्तु धीमे धीमे ते वीसराई जवा लाग्युं, आथी पाटली पुत्र परिषद, मथुरी वांचना वगेरे द्वारा ते मार हतुं तेटलुं संकलित थयुं श्री भद्रबाहु स्वामीए आगमो रच्या ने क्रमश श्रुतसाहित्य आगम साहित्य वगेरे पर निर्युक्तिओ वगेरे रचाय कर्युं. श्रुत साहित्य के आगम साहित्यनी प्राकृतमां ज रचना थयेली हती परन्तु धीमे धीमे संस्कृत साहित्यनो जैन साहित्यमां विकास थयो. उमास्वामिवाचक पादलिप्तसूरि अने न्यायशास्त्रना प्रस्थापक दार्शनिक तर्कप्रधान प्रतिभावान सिद्धसेनसूरिए श्रुत अने आगम साहित्यने विकसाववामां मोटो फाळो आप्यो छे श्री सिद्धसेनसूरिए तो आगळ वधी न्यायावतार तर्कप्रकरणनी संस्कृतमां रचना करीने जैन प्रमाणनो पायो नाख्यो न्याय युग शरू कर्यो तेमना पछी घणी स्मरणशक्तिमां शिथिलता आववा लागी ने श्रुत साहित्य वधु प्रमाणमा विसरावा लाग्युं आथी पांचमी शताब्दीमां देवर्द्धिगणीए वल्लभीपुर परिषद बोलावी श्रुत सा ह ने एकत्रित करी पुस्तकारूढ कर्युं

युगप्रधान हरिभद्रसूरि ने कलिकालसर्वज्ञ हेमचंद्रे साहित्यने पुष्पित करवामां कचाश नथी राखी. तेमना समयमां प्राकृत तथा संस्कृत भाषाना पण विकास थयो छे त्यार बाद तपगच्छना आचार्यो जेमा उमेरा करवा अथाग परिश्रम सेव्यो छे देवेन्द्रसूरि श्री देवसुन्दरसूरि, श्री सोमसुन्दरसूरि हीरविजयसूरि अने तेमना विद्वान शिष्य समुदाय एक या बीजी रीते जैन वाङ्मयने वधारी समृद्ध बनाववामां अने सर्जनमां मोटो फाळो आपो नथी. वर्तमान समय तो तेमना करतां तेमना शिष्यो पण घणो आगळ छे

जैन मुनिओनुं विहार ए प्रचार माटेनुं प्रबळ साधन छे विहार करता करतां तेमनी उपदेशनी छाप वधता तेमना मुखमांथी नीकळीने वधता सरस्वती ज वहे छे ने जनता उपर तेमनी घणी असर थाय छे के तेओ मुनिराज पाछ सर्वस्व न्योछावर पण तैयार थाय छ आथी

बेवीस तीर्थंकरो बिहार-काशी वगेरेमां थया बावीसमा श्री नमिनाथ सौराष्ट्रना द्वारिकापुरीमां थया ते शौरीपुरमां (मथुरामां) जन्म्या हता ते यदुवंशी हता तेमणे भारतदेशमां जैनधर्म प्रसराव्यो. चोवीसमा तीर्थंकर श्री क्षत्रियकुंड नगरमां थया, (बिहार मगधदेशमां वैशाली नगरी पास क्षत्रिय कुंड नगर आवेलु छे) तेमना पिता सिद्धार्थ राजा हता अने तेमनी माता त्रिशला राणी हती जन्मथी ते मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अने अवधिज्ञान ए त्रण ज्ञानवाळा हता युवावस्थामां सिन्धुसौवीर देशनी समरवीर राजानी पुत्री यशोदा साथे लग्न कर्युं हतुं सांवत्सरिक दान दईने तेमणे त्रीशमा वर्षे दीक्षा अंगीकार करी. कार्तिक वदी दशमे दीक्षा लीधा पछी तेमणे बार वरस पर्यंत ध्यान कर्युं अने मनुष्यो वगेरे तरफथी थता उपसर्ग परिसहोने समभावे सहन कर्या बेंतालीसमा वर्षे ऋजुवालिका नदीना तीर श्यामाक कुटुंबीना क्षेत्रमां शालवृक्ष नीचे बे उपवास करी शुक्ल ध्यान धर्यु तेथी तेमना शुभ भावमां केवलज्ञान प्रगट्युं तेथी ते लोकालोक, सर्वरूपी तथा अरूपी पदार्थो-तत्त्वोने साक्षात देखता थया.

प्रभु केवलज्ञान पाम्या के तुरत समवसरणनी रचना थई तेमना समवसरणमां, आर्यावर्तमां वैदिक विद्यामां पारंगत, महाज्ञानी गौतम (इन्द्रभूति) अग्निभूति, वायुभूति वगेरे अगियार आचार्य आवी पहोंच्या तेओ संपूर्ण भारतमां प्रसिद्ध हता तेओनी शंकाओ भगवान् श्री महावीरदेवे वेदोनी श्रुतिओने सापेक्षपणे समजावी दूर करी अने अगियारे य श्री महावीरदेव पासे दीक्षा अंगीकार करी महावीरप्रभुए गौतमादि अगियार ब्राह्मणोने गणधर स्थाप्या. श्रावकधर्मना रचनार गौतमऋषि तथा अन्य गौतमऋषिथी प्रभुना गणधर गौतमऋषि जुदा हता परमात्मा महावीरदेवे जैनधर्मनो प्रकाश कर्यो अने चतुर्विध संघने स्थापी दुनियामां तीर्थ प्रवर्ताव्युं तेमणे चौद हजार साधुओ कर्या, छत्रीश हजार साध्वीओ करी एक लाख ने ओगणसाठ हजार बारव्रतधारी श्रावको बनाव्या अने अविरति सम्यग्दृष्टि जैनो तो करोडोनी संख्यामां बनाव्या तेमणे त्रण लाख अढार हजार बारव्रतधारी श्राविकाओ बनावी. अगियार गणधरोए तथा ते गणधरोना साधुओए करोडोनी संख्यामां श्रावको अने श्राविकाओ बनावी. प्रभु महावीरदेवनो बोध पाम्या हिन्दुस्थानना श्रेणिक, उदयन, उदायी, चंडप्रद्योत, चेटक वगेरे राजाओए स्वीकार्या अने महावीरदेवना भक्त बन्या प्रभुए ज्ञान दर्शन चारित्रनुं स्वरूप समजाव्युं आत्मज्ञाननो विश्वमां प्रकाश कर्यो प्रभु महावीरदेव आसाढ सुदि छठे माताना कुक्षमां आव्या अने चैत्र सुद तेरसनी मध्यरात्रीए जन्म्या प्रभु महावीरभगवाने केवलज्ञान पामीने त्रीश वर्ष सुधी भारतदेशमां सर्व लोकोने धर्मनो उपदेश दीधो. शूद्र-चंडाल जातिने पण त्याग करावी धर्मोद्धार करावीने त्यागी बनाव्या भारतदेशमां दया सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य अध्यात्मज्ञान योगज्ञान प्रगट कर्युं अने मनुष्यना लोकोना हृदयोने दयाथी भरी दीधां त्यागी महात्माओने बनावी हिंदुस्थानथी बाहेरना देशोमां जैनधर्मनो प्रचार कर्यो

जैनोना इतिहास पर एक दृष्टिपात

—योगनिष्ठ आचार्य बुद्धिसागरसूरि

जैनधर्म आ जगतमां अनादि काळथी छे. जैनो जगतने अनादि काळनुं माने छे. परमेश्वर परमात्माने अनादि काळथी माने छे. एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, अने पंचेन्द्रिय जीवोने कर्म सहित संसारी जीवो माने छे. अनादि काळथी जीवो छे अने तेओनी साथे आठ कर्म लाग्यां छे एम माने छे. जीवोने पुण्ययोगे सुख थाय छे अने पापयोगे दुःख थाय छे. पुण्य ए शुभ कर्म छे अने पाप ए अशुभ कर्म छे. अत्यंत अशुभ कर्मथी नरकमां जवाय छे अने अत्यंत शुभ कर्मथी स्वर्गनी प्राप्ति थाय छे. पुण्य सहित अल्प पापथी मनुष्यनो भव प्राप्त थाय छे. कपट वगेरेथी तिर्यंचनी गति प्राप्त थाय छे. मनुष्यनी गतिमां आत्मानी पूर्ण शुद्धि थवाथी मोक्ष मळे छे एम जैनो माने छे. गृहस्थजैनो, देव अर्हत् भगवानने चार प्रकारे अंगीकार करे छे. जेओ त्यागीना पंच महाव्रत ग्रहीने कंचन कामिनी वगेरेनो त्याग करे छे तेओने त्यागी मुनिओ—साधुओ कहेवामां आवे छे. तेओ सर्वविरति मुनि कहेवाय छे. मुनिओना उपरीने आचार्य कहे छे. त्यागीधर्म ग्रहण करनारी स्त्रीने साध्वी, श्रमणी—आर्या कहेवामां आवे छे अने तेनी उपरी साध्वीने प्रवर्तिनी कहेवामां आवे छे. जे साधुओने अने साध्वीओने आगमो वगेरे भणावे छे ते उपाध्याय कहेवाय छे. पंडित साधुओने पंन्यास कहे छे. जैनधर्म पाळनार गृहस्थ स्त्रीवर्गने श्राविका—संघ तरीके कहेवामां आवे छे. जैन गृहस्थो श्रावक—संघ तरीके कहेवाय छे. साधुओने साधु—संघ अने साध्वीओने साध्वी—संघ एम चतुर्विध संघ कहेवाय छे. चतुर्विध संघने तीर्थ कहे छे अने एवा तीर्थनो उच्छेद थवानो समय आवतां जे केवळज्ञानी अर्हतो, संघरूप तीर्थने स्थापे छे ते तीर्थंकरो कहेवाय छे.

चोवीस तीर्थंकरोना काळमां बार चक्रवर्तिओ थया, अगियार रुद्र, नव नारद, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव अने नव बळदेव थया. (चोवीस तीर्थंकर, बार चक्रवर्ति नव वासुदेव नव बळदेव, नव प्रतिवासुदेव ए त्रेसठ शलाका पुरुषो कहेवाय छे) आजसुधी अनेक तीर्थंकरो थइ गया.

हता समयमां जैनोनी संख्या बे करोडना आशरे गणाती हती. पश्चात् क्रमशे वर्षमां घटता घटतां वि सं १९०५ आसपासमां जैनोनी संख्या चौद लाख गणावा लागी पश्चात् पंदर लाख पश्चात् तेर लाख अने वि सं १९८० सुधीमां जैनोनी संख्या बार लाख पांत्रीस हजार गणाय छे जैनोनी संख्या घटवानां अनेक कारणो छे प्रथम तो तेओए स्वधर्ममां चालता वैदिक पौराणिक हिन्दुओना रिवाज दाखल कर्या तथा साधुओनी संख्या घटवा लागी हती, तेमज हिन्दु सन्यासीओ, धर्माचार्योनी पेठे जैन साधुओने धर्म प्रचारार्थे फरवानी सगवड बंध थई

जैनोनी संख्या घटवानां कारणोनो उपभाग आतो म ज थयो. जैन वणिक कोम सिवायनी अन्य कोमोने जैन बनाववानी व्यवस्था घटी गई मुसलमानो जेम गमे तेने मुसलमान करी शके छे अने पोतानी कोमनी संख्या वधारे छे, तेवो जैनोनो पूर्वे मार्ग हतो, ते जैनोए बन्ध कर्यो, तथा जैन कोम व्यापारी होवाथी बीकण, नामर्द बनवा लागी अने पोतानुं धर्मझनुन मूकवा लागी, ते अन्य कोमोना आक्रमणथी पोतानी जात उपर उभी रही नहीं शके एवी स्थितिना ज्ञानथी व्याकुल बनवा लागी.

हिंदुस्थान मुसलमानोनी राज्यमां पोतानी बलात्कारी वसति थोई छे मुखेमुख कोई मुसलमान जो हिंदुना मुखमां थुंके तो पछी ते हिंदु प्रायश्चित्त करे तो पण तेने पाछा हिंदुधर्ममां लेता न हता. हवे हिंदुओए पोतानी ते भूल जोई छे अने वटलाइ गयेला तथा अन्य धर्ममां गयेला हिंदुओने पाछा प्रायश्चित्त करावी हिंदुधर्ममां दाखल करवा मांड्या छे मदनमोहन मालवीया, स्वामी श्रद्धानंद तथा शंकराचार्यो तथा वैष्णवाचार्यो जाग्या छे तेओमां केटलाक पण जैनहिंदुओ वणिक होवाथी जागी शक्या नथी हिंदुओ जे ब्राह्मण वणिका वगेरे छे तेओनुं जैनो अनुकरण करे छे अने जैन मुनिओ तो आ बाबतमां बीकणुक जेवा छे तेओ तो धर्मनी क्रिया करे छे पण क्रियामतभेदे परस्पर मतभेदवाळा साधुओनी साथे ऐक्य प्रेमथी वात करवामां पण समकितनुं ठेकाणे मिथ्यात्व आवी जाय एम माने छे पण हवे केटलाक मुनिओ आचार्यो तथा जैन गृहस्थो वर्तमान परिस्थितिने जाणी गया छे जैन शास्त्रोने जैन कोममां प्रत्येक व्यक्ति जाणशे त्यारे जैनोनुं कल्याण थशे जैनो वर्तमानमां आपत्कालीन स्थितिमां छे पण तेओ फक्त खावुं, पीवुं, सोवुं, अने कुलाचारे धर्मनी केटलीक प्रवृत्ति करवी एटलुं ज समजी शके छे तेथी तेओमां धर्मझनुन अने धर्मप्रगतिनो चळवळ घणो ज ओछो रहे छे

× × × × ×

जैनोमां तो जे रात्र न खाय अने कन्दमूळ त्याग करे ते ज जैन बनी शके तथा मच्छी वगेरे बीजा धंधा छोडी दे तो ज जैन बनी शके एवी हालना जैन वणिकोना बहोळा भागनी मान्यता छे। पण जैन शास्त्रोमां चार वर्णो पोतपोताना गुण कर्म प्रमाणे वर्तनी जैन बनी शके एवो सिद्धान्त सिद्ध छे तेथी जैन कोम मुंझवा लागी छे वळी आर्यसमाजी सनातन धर्मवाळा के स्वरचित — "भारतमा

हता समयमां जैनोनी संख्या बे करोडना आशरे गणाती हती. पश्चात् क्रमशे वर्षमां घटतां घटतां वि सं १९०५ आसपासमां जैनोनी संख्या चौद लाख गणवा लागी पश्चात् पंदर लाख, पश्चात् तेर लाख अने वि सं १९८० सुधीमां जैनोनी संख्या बार लाख पांत्रीस हजार गणाय छे जैनोनी संख्या घटवाना अनेक कारणो छे प्रथम तो तेमोए स्वधर्ममां धमारवा वैदिक पौराणिक हिन्दुओना रिवाज दाखल कर्या तथा साधुओनी संख्या घटवा लागी हती, तेमज हिन्दु संन्यासीओ, धर्माचार्योनी पेठे जैन साधुओने धर्म प्रचारार्थे फरवानी सगवड बंध थई

जैनोनी संख्या वधवाना कारणोनो उपयोग थतो बंध थयो जैन वणिक कोम सिवायनी अन्य कोमोने जैन बनाववानी व्यवस्था घटी गई मुसलमानो जेम गमे तेने मुसलमान करी शके छे अने पोतानी कोमनी संख्या वधारे छे तेवो जैनोनो पूर्वे मार्ग हतो, ते जैनोए बन्ध कर्यो तथा जैन कोम व्यापारी होवाथी बीकण, नामर्द बनवा लागी अने पोतानुं धर्मझनुन मूकवा लागी, ते अन्य कोमोना आक्रमणथी पोतानी जात उपर ऊभी रही जीवी शके एवी स्थितिना ज्ञानथी अज्ञान बनवा लागी

हिंदुओए मुसलमानी राज्यमां पोतानी घणीखरी शक्ति खोई छे भूलेचूके कोई मुसलमान थयो हिंदुना मुखमां थूंके तो पछी ते हिंदु प्रायश्चित करे तो पण तेने पाछा हिंदुधर्ममां लेवा न हता हवे हिंदुओए पोतानी ते भूल जोई छे अने वटलाई गयेला तथा अन्य धर्ममां गयेला हिंदुओने पाछा प्रायश्चित करावी हिंदुधर्ममां दाखल करवा मांड्या छे मदनमोहन मालवीया, स्वामी श्रद्धानंद तथा शंकराचार्यो तथा वैष्णवाचार्यो जाग्या छे तेमोना जेटला पण जैनहिंदुओ वणिक होवाथी जागी शक्या नथी. हिंदुओ जे ब्राह्मण वणिको वगेरे छे तेओनुं जैनो अनुकरण करे छे अने जैन मुनिओ तो आ बाबतमां बीलकुल अज्ञ जेवा छे तेओ तो धर्मनी क्रिया करे छे पण क्रियामतभेदे परस्पर मतभेदवाळा साधुओनी साथे ऐक्य प्रेमथी वात करवामां पण समकितने ठेकाणे मिथ्यात्व आवी जाय एम माने छे पण हवे केटलाक मुनिओ आचार्यो तथा जैन गृहस्थो वर्तमान परिस्थितिने जाणी गया छे जैन शास्त्रोने जैन कोममां प्रत्येक व्यक्ति जाणशे त्यारे जैनोनुं बळ वधशे. जैनो वर्तमानमां आलस्यकालीन स्थितिमां छे पण तेओ फक्त खावुं पीवुं, जीववुं, अने कुळाचारे धर्मनी केटलीक प्रवृत्ति करवी एटलुं ज समजी शके छे तेथी तेओमां धर्मझनुन अने धर्मप्रगतिनी चळवळ घणी ज ओछी रो छे

× × × × ×

जैनोमां स्त्री के रात्रे न खाय अने कंदमूळ त्याग करे ते ज जैन बनी शके तथा व्रती वगेरे बीजा धंधा छोडी दे तो ज जैन बनी शके एवी हालमां जैन वणिकोना मोटाभागना मगजनी मान्यता छे! पण जैन शास्त्रोमां चारे वर्णो पोताना गुण कर्म प्रमाणे वर्तनी जैन बनी शके एवी विशाळ दृष्टि छे तेथी जैन कोम मूंझवा लागी छे क्या आर्यसमाजी हरदास [illegible] के जे स्वरचित — "भारतमां

इतिहास "मां जणावे छे के "जैन साधुओ जेटला दुनियामां अन्य धर्मना साधुओ पवित्र नथी, अने जैनधर्मनी विश्वमां घणी असर छे"

लोकमान्य तिलके वडोदरानी जैन कोन्फरन्समां भाषण आपती वखते जणाव्युं हतुं के 'वेद धर्म करतो जैनधर्म प्राचीन छे अने जैनधर्मना बळथी वैदिक हिंसानो नाश थयो छे"

वि. स १९६२ मां सुरतमां महासभानी बेठकमां जता ज्यारे लाला लजपतराय नीकळेला रस्तामां अमदावाद उतरेल ते वखते मरहुम शेठ श्री लल्लुभाई रायजीनी साथे लगभग चारसो माणस अने मने मळवाने पधारेला. मनुष्योनु कल्याण करवानो उपदेश आप्यो हतो. जनसमाज ते वखते जैनोनी उपसत्ता अने अहिंसाना वखाण कर्या हता अने कह्युं हतु के "आपणा जेवा जैन साधुओथी हिन्दनो उद्धार थवानो छे' जैन शास्त्रोमां मनुष्योनी दया करवानुं जणाव्युं छे पशु पंखी करतां मनुष्योना दया करवामां अनंतगणुं विशेष फळ छे एम जैन शास्त्रो पोकार करीने कहे छे

जैनोमां त्यागी साधुओ धर्मगुरु तरीके पोताना त्याग दशामां मशगुल रह्या तेमोए जैनोनी संख्या घटे छे ते तरफ आचार्योनी पीठ कद्दी कंई आप्युं नहीं तथा कोमना सब त्यागीओए सब मेळवी जैनोनी संख्या घटे छे तेनी वृद्धि करवा कशा उपायो लीधा नहीं. गृहस्थ जैनोए पण संघ मेळो करी ते संबंधी कई उपायो योज्या नहीं; कारण जैन गृहस्थो मोटा भागे जैन शास्त्रोना ज्ञाताओ बनता नथी तथा जैनो व्यापारी लालचुम — वैभवमोनी हैरानी ना बाबतथी बिलकुल अज्ञान रह्या तथा तेओ कुसम्पने गाडरीयाप्रवाहे जनधर्मने पाळता अटक्या, तथा तेमोने जैनसत्ताविषेनो उपदेश पण यथायोग्य मळ्यो नहीं. साधुओ तथा आचार्यो त्याग अने क्रियाकांड करवामां ज पोतानु श्रेय मानता रह्या तथा तेमोए बाहेर उपदेश देवाना मार्गे लक्ष दीधु नहीं वैदिक पौराणिक हिंदुओने राजाओ तरफथी सारी मदद मळी. आम समस्त जैन हिंदुओने राज्याश्रय मळतो बंध थयो.

मुसलमानो एक हिन्दुने मुसलमान बनाववामां स्वर्गना राज्यनी प्राप्ति माने छे जैनोए बौद्ध, अन्य अने शास्त्रोना मळवी आजसुधी एक पण अन्यधर्मी मनुष्यने जैन बनाववा प्रयत्न कर्यो होय एवु ऐतिहासिक दृष्टिए जणातु नथी. जैनोए आजसुधी जैन–मंदिरो बंधाववामां विशेष लक्ष दीधु छे हिन्दमां जैनोना लगभग आशरे छत्रीस हजार मंदिरो छे ज्यां जैनो वसे छे त्यां मरजी पांजरापोळो करे छ उपाश्रय तथा देरासर बंधावे छ परम्परा जमी जैन ऐतिहासिक बाबतोथी अज्ञात रह छ मुसलमानोनु प्राचीन वलणमान छे वैष्णवोनी भक्ति वलणमान छे, अने जैनोनी दया वलणगत छ

जैनोमां श्री भद्रबाहु स्वामी, हरिभद्रसूरि कलिकालसर्वज्ञ हेमचंद्राचार्य महाराज, सिद्धसेन दिवाकर उपाध्यायजी–सर्वनमतसूरी अकलंक निष्कलंक कुंदकुंदाचार्य वगेरे अनेक आचार्यो थई

गया छे तेमोए सर्व विषयोना अनेक ग्रंथो लख्या छे जैनोनां तीर्थो सिद्धाचल गिरनार, तारंगा, आबु, राणकपुर, सम्मेतशिखर, पावापुरी, श्रवणबेल्गुल, राजगृही वगेरे अनेक छे हिमालयमां पण जैन तीर्थ छे कच्छमां जैनो वसे छे हिंदनी बहार सिवाय जैन तीर्थो छे जैनो व्यापारी, धनाढ्य, श्रीमंतो, चतुर, कुशल गणाय छे हालमां सर्व धर्मवाळाओनी चळवळ देखीने जैनो पण जागृत थया छे जैन कोन्फरन्सो, सोसायटीओ, परिषदो वगेरे भराय छे पण तेमां जैनोनी संख्यावृद्धि माटे तथा श्वेतांबर दिगंबर कोमना तीर्थ कजीआ—मांहोमांहे पताववा ते बाबत कंई खास जाणवा जेवुं थयुं नथी तेवी तीर्थोना झगडामां जैनोना लाखो रूपीआ बरबाद थाय छे जैन धार्मिक ज्ञाननी दृष्टिमां दिगंबरो जेटलुं धर्माभिमान श्वेतांबरो जरा पूर्वक राखता नथी. दरेक जैने एक वरसमां बे त्रण वखत तीर्थोनी यात्रा करवी तथा दररोज एक जैन-पुस्तकनो केटलोक भाग वांची जवो, तथा दररोज गुरुनो बोध सांभळवो दररोज गुरुदर्शन तथा व्याख्याननो लाभ न मळे तो वर्षमां चार पांच वखत ज्यां आचार्यो, साधुओ, होय त्यां गुरुदर्शनार्थे जवुं, अने जैनधर्मनुं व्याख्यान करीने स्वरूप समजवुं, जैन धर्मनी श्रद्धा धारण करवी, अने अन्य धर्मीओना धर्मनी निंदा न करवी. अन्य हिंदुओ वगेरे धर्मनी चढती करवामां जे जे उपायो ग्रहण करे ते प्रमाणे पोते जैनोए पण धर्मवृद्धिना उपायो ग्रहण करवा जो ए प्रमाणे जैनो समय विचारी कर्मयोगी थई वर्तसे तो दुनियामां जैनोनुं अस्तित्व संरक्षी शकसे अने अन्य धर्मीओना आक्रमण—हुमला वगेरेथी बची शकशे

शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य वगेरे आचार्योए परस्परनी तत्त्व संबंधीनी मान्यता भिन्न-भिन्न होवा छतां तेओए पोतानी मान्यता अनुकूल श्रुतिओना अर्थ करीने पोतानी जुदी शैली करी दीधी छे प्रभु सर्वज्ञ महावीरदेवे जेम गौतमादिक गणधरोने श्रुतिओनो सम्यग् अर्थ जणाव्यो, तेम जैनाचार्यो वेदोनी श्रुतिओनो जैनतत्त्वानुकूल अर्थ करी वेदादिकने जैन तत्त्वज्ञानना पोषक—प्रकाशक माने अने एवो अर्थ करी प्रवर्ते तो तेओने ते स्याद्वादपद्धतिथी अपेक्षाए जैनोनी दृष्टिमां उपयोगी थई पडे तेम छे ईशावास्योपनिषद्पर अमोए स्याद्वादपद्धतिए टीका करी छे, ते स्याद्वादपद्धतिथी गीतार्थ जैनो अने शुद्ध ब्राह्मणो वांचशे तो तेओ जैन हिंदु धर्म अने वैदिक हिंदु धर्मना मूळ केवी छे पण स्याद्वादपद्धतिनो अनुभव करी शकशे. वैदिक पौराणिक हिंदुओना धर्मग्रन्थोथी जैनधर्मना ग्रन्थो—शास्त्रो विशेष छे बौद्धधर्मथी बीजा नंबरे आवती दुनियामां जैनधर्मना ग्रन्थो छे जैन शास्त्रोमां सर्व दर्शनोना तत्त्वज्ञाननो मुकाबलो करवामां आव्यो छे दुनियाभरमां जैनतत्त्वज्ञानना शास्त्रो प्रकट, गंभीर अकाट्य, अबाध्य छे दिगंबरनां अने श्वेतांबरनां तत्त्वज्ञानना तथा न्यायनां शास्त्रो खास वांचवां जोईए अने पश्चात् जैन तत्त्वज्ञान संबंधी अभिप्राय बाहेर करवो जोईए.

तपगच्छनी उत्पत्ति

लेखक—मुनिराज श्री दर्शनविजयजी (त्रिपुटी)

निर्ग्रन्थाः श्रमणाः श्रेष्ठा वीरतत्त्वोपदेशिनः ।
ज्ञानपुञ्जास्तपोगच्छा जयन्तु श्री मुनीश्वराः ॥ १ ॥

तपागच्छ एटले भगवान् महावीर स्वामीथी प्रारंभीने आज सुधीनो श्रमणप्रवाह अने तेनी उत्पत्ति एटले श्रमणोनो, तपोगुणनी विशिष्टता भावेलतो, इतिहास

श्रमण-संघ

वि. सं. पूर्वे ५०० वर्षे वैशाख सुदि ११ नी प्रभाते श्रमण भगवान् महावीरे समवसरणमां बेसी साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका एम चार वर्गने अविभक्तपणे संबोधी "श्रमण-संघ" नी स्थापना करी. ते समये भगवान् महावीर अपूर्व त्यागने लीधे 'निर्ग्रन्थ ज्ञातपुत्र' एवा सार्वजनिक नामथी प्रसिद्ध हता[1] तेम ज तेमनो परिवार पण "निर्ग्रन्थ" विशेषणथी ज विशेष प्रसिद्ध हतो.

---

१ "निर्ग्रन्थ-ज्ञातपुत्र" माटे बौद्ध ग्रन्थोमां नीचे प्रमाणे उल्लेखो छे —

A अञ्ञतरो पि खो राजामच्चो राजानं मागधं अजातसत्तुं वेदेहिपुत्तं एतदवोच— अयं देव। निगण्ठो नातपुत्तो संघी चेव गणी च गणाचरियो च ञातो यसस्सी तित्थकरो साधु सम्मतो —दीघनिकाय।

B. तेन खलु समयेन राजगृहे नगरे षट् पूर्णाद्या शास्तारोऽसर्वज्ञाः सर्वज्ञमानिनः प्रतिवसन्ति स्म। तद्यथा—पूरणः काश्यपः मस्करीगोशालीपुत्रः, संजयी वैरट्टीपुत्रः, अजितः केशकम्बलः ककुद कात्यायनः निर्ग्रन्थो ज्ञातपुत्रः। —दिव्यावदान १२-१४३ १४४।

C. पूरण—ज्ञातिपुत्रादयः। —अवदानकल्पलता पल्लव-१२ श्लोक-४११।

D एकं समयं भगवा सक्केसु विहरति सामगामे। तेन खो पन समयेन निगण्ठो नातपुत्तो पावायं अधुना कालकतो होति। —मज्झिमनिकाय।

E. भगवान् गौतमबुद्धना विरोधी ६ धर्माचार्यो हता. १ पूरणकाश्यप २. मंखलीगोशाल, ३ संजयवेलट्ठीपुत्र ४ अजितकेशकंबल, ५. ककुदकात्यायन ६ निर्ग्रन्थज्ञातपुत्र —मज्झिमनिकाय १-२-१ । २-१-६ । १-१-७ ॥

संघ (सं० ७५) माथुरसंघ (सं० ९०० लगभग) तारनपंथ (सं० १५७२) तेरहपंथ (सं० १६८०) अने गुमानपंथ (वि० स० १८१८) वगेरे अनेक मतो-पंथो थेला छे

—एन्साइक्लोपीडिया ओफ रीलीजीयन एन्ड एथिक्स, वो० १, पृ० २५९)

निन्हवभेद

गणधरवंश तथा वाचकवंश (अथवा युगप्रधान परंपरा) एम महावीर—श्रमणसंघना बे प्रवाहो छे आ प्रवाहो वास्तवमां संघव्यवस्थाए अभिन्न छे, मात्र चारित्र अने श्रुतनो व्यवस्थाए भिन्न भिन्न छे तेमां क्रिया, आचार, व्यवहार अने सिद्धांत एक ज प्रकारना हता परंतु कोई साधुनो क्रिया आदि विषयमां मतभेद पडे तो ते जुदो पडी अभीष्ट नियमो बनावी नवीन मत स्थापित करतो हतो. आ रीते वीरनिर्वाणथी ६०९ वर्ष सुधीमां सात (आठ) मतो निकळी चूक्या हता तेनां नामो आ प्रमाणे छे

१ वी० नि० पूर्वे १४ वर्षे जमालिए "बहुरत" मत चलाव्यो

२ वी० नि० पूर्वे १६ वर्षे तिष्यगुप्ते 'जीवप्रदेश" मत चलाव्यो

३ वी० नि० सं २१४मां आषाढाचार्यना शिष्योथी "अव्यक्त" मत चाल्यो

४ वी० स० २२ मां आ महागिरिना पांचमा शिष्य कौडिन्यना शिष्य अश्वमित्रे "सामुच्छेदिक" मत (शून्यवाद) चलाव्यो.

५ वी० सं० २२८मां आ० महागिरिना शिष्य धनगुप्तना शिष्य गंगदत्त "द्विक्रिय" मत स्थाप्यो

६ वी सं० ५४४मां रोहगुप्ते "त्रिराशिक' मत स्थाप्यो

७ वी० सं ५८४मां गोष्ठामाहिले "अबद्धिक मत चलाव्यो.

८ वी नि स ६०९ (वि० सं० १३९)मां शिवभूतिए "बोटिक' (दिगम्बर) मत चलाव्यो.

—(आवश्यकनिर्युक्ति, गाथा ७७८ थी ७८८ भाष्य गाथा १२५ थी १४८)

आमांथी द्विक्रिय सुधीना निन्हवभेदो नाश पाम्या अने बाकी रहेल त्रण निन्हवभेदो बोटिक (दिगम्बर) मां भळी गया परंतु वी० नि० सं ६ ९ मां प्रामाणत्या एक ज निन्हवभेद रह्यो होय एम लागे छे

आ साते मतो भगवान् महावीरना शासनथी सिद्धांतभेद तथा क्रियाभेद करी निकळ्या छे तेना व्यापकोष भगवानना वचन निन्हवे (गोपवे) छे माटे तेओ "निन्हव" कहाय छे आ साते प्राचीन जैनसंघनी विरोधी शाखाओ छे

गच्छभेद

आ ज रीते भगवान् महावीरना संघमां बीजा अनेक अ–विरोधी भेदो छे जे "गच्छभेद" तरीके सुप्रसिद्ध छे बीजी रीते कहीए तो आ पण एक जैनधर्मना प्रचार माटेनी व्यवस्था–नीति छे

जैन इतिहासने नहीं जाणनारा 'गच्छ' शब्दथी प्राचीन जैनसंघमां पण विरोधी विभागोनी कल्पना करी ल्ये छे किन्तु वास्तविक रीते ए कल्पनाओ मात्र कल्पनाओ ज छे

आजनी गवर्नमेंट हिन्दनी व्यवस्था माटे वॉइसरॉय गवर्नर कमीश्नर, कलेक्टर, मामलतदार वगेरे अमलदारोनी ते ते विभागनी जवाबदारी साथे नीमणुक करे छे आ ज व्यवस्था–शक्ति प्राचीन कालना श्रमणसंघमां प्रथम दशामां हती एटले श्रमणोए धर्मप्रचारनी सुविधा माटे देश, गाम, विशिष्ट स्थविर आचार्य के अन्य स्थापितमूलक निमित्तने अनुसरी जैनसंघमां पण गच्छ, कुल तथा शाखाओना विभाग पाड्या हता

सौराष्ट्रिका उच्चानागरी (तत्रीधिकानी शाखा) ताम्रलिप्तिका, पौंड्रवर्धनिका, कौशाम्बिका, चंपानगरी, पुष्पमित्रिका मथुरानगरी जेवा मध्यम काकंदिका माध्यमिका श्रीवत्सिका राजपालिका, कोटिकगण, वज्री, वज्रस्वामी गच्छ चंद्रकुल, तपगच्छ वज्रशाखा आ नामो उपर्युक्त कथनने विशदभावे स्पष्ट करे छे

आ गच्छोमां न हतो सिद्धांतभेद के न हतो क्रियाभेद. दरेक पोतपोतानी कक्षामां रही जैनसंघने ज पुष्ट करता हता श्री कालिकाचार्ये वीरनि. सं. ९९३मां पांचमनी चोथ करी तो दरेके चोथ मानी आ विक्रमादित्य श्रमणोनी अंतिम विधि मध्यकालना फरमानो, जेनो सर्वानुमते स्वीकार थयो (प. सुखसागरजीवनी रचित तपगच्छनी भाषा पद्यावली) एटले संघना हित माटे जेवातो मार्ग दरेकने मान्य ज रहेतो. तेमां मतभेदने अवकाश ज न हतो

कदाच एक आचार्यनो अभिप्राय जूदो पडे तो "अमुक आचार्यनुं आम कहेवुं छे" "अन्य आचार्य आम कहे छे" एम तेमनो अभिप्राय पण सर्वमान्य रीतिए स्वीकारातो हतो.

विक्रमनी ११मी सदी सुधीना ग्रंथोमां गच्छोना मतभेदो उपलब्ध थता नथी के जेना आधारे अधिकमास तिथि अभ्यागत सामायिक, मुहपत्ति स्तुति वगेरेमां जोवाय छे

विक्रमनी ११मी सदी पछीना गच्छो उपरना प्राचीन गच्छोथी भिन्न छे जे पैकीना केटलाक अंशोमां पण सिद्धांतभेद के क्रियाभेदने भी मुख्य बनाव्या छे एटले आ गच्छोने प्राचीन गच्छोनी कोटिमां मूकी न शकाय प्राचीन ८४ गच्छोमां तपगच्छ अंचलगच्छ खरतरगच्छ पार्श्वचंद्रगच्छ, लोंकागच्छ वगेरेना उल्लेखो नथी

आ उपरांत अत्यारे पण जे ८४ गच्छोनी नामावली मळे छे ते विक्रमनी बीजी सहस्राब्दीनी, एटले अर्वाचीन छे जेमां घणा असली गच्छोनां नामो समायां नथी. तेने स्थाने नवा गच्छोनां नामो दाखल करी देवामां आव्यां छे

(८४ गच्छ माटे जुओ "पट्टावली समुच्चय" भाग २, परिशिष्ट–५)

परन्तु एक वात निर्विवाद छे के—निग्रन्थभेद ए वास्तविक भेद ज छे अने गच्छ भेद ए काल्पनिक अथवा एक ज गच्छना नामांतररूप भेद छे हवे आपणे मूळ विषय उपर आवीए —

निर्ग्रन्थ गच्छ (१)

भगवान् महावीर ' निर्ग्रन्थ ज्ञातपुत्र " तरीके सम्बोधित थता हता, एटले तेमनो भिक्षुसंघ पण "निर्ग्रन्थ" तरीके ज प्रसिद्ध हतो. (वीरनि० पूर्वे ३० वर्ष)

आ रह्यां तेनां प्रमाणो—

१ जिनागमोमां स्थाने स्थाने निर्ग्रन्थ शब्द उल्लिखित छे जेमके—न कप्पइ निग्गंथाणं निग्गंथीणं। जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंथा विहरन्ति (स्थविरावली), निग्गंथाणं महेसिणं (दशवैकालिक सूत्र) वगेरे.

२ तस्स कालंकिरियाय भिन्न निग्गंथ द्वेधिक जाता (मज्झिमनिकाय, सामगामसुत्त) गोशालकनी तेजोलेश्याना प्रसंगने अनुलक्षीने आ वर्णन करेल छे आ वर्णनमां भगवान् श्रमणनुं पण सूचन छे

३ कोशलनो राजा प्रसेनजित निर्ग्रन्थो (श्वे० जैन साधुओ) ने नमस्कार करतो हतो. (बौद्धनिकाय इन्डियन हीस्टोरीकल क्वार्टरली, भा० १ पृ० १५३)

४ गोशालकना मत प्रमाणे निर्ग्रन्थो एकवस्त्र (श्वेतांबर साधु) छठ्ठी अभिजातिमां समाविष्ट छे (बाबू कामताप्रसाद कृत महावीर)

५. निर्ग्रन्थ शब्द दूसरे सम्प्रदायों का भी अपना था और श्वेताम्बरभाई भी "निर्ग्रन्थ" कहलाते थे। (पं० दरबारीलालजी न्यायतीर्थ, "जैन जगत्" ता० १६–११–१९३ का अंक)

जैन साधु माटे सर्वप्रथम वपरातो "निर्ग्रन्थ" शब्द श्वेतांबर साधुने उद्देशीने वपरायेल छे अने श्वे० दि० आचार्यो निर्ग्रन्थना पांच भेदोमां व्यापी ए ज अर्थने स्पष्ट करे छे

श्वेताम्बराचार्य दशपूर्वधर श्रीदिन्नसूरिना शिष्य आ० शांतिश्रेणिकनी उच्चानागरी (तत्त्वार्थ शाखा) शाखाना वाचक पूर्वविद् श्री उमास्वाति महाराज फरमावे छे के—

आ चन्द्रगच्छ ते निर्ग्रन्थगच्छनुं त्रीजुं नाम छे

—(आवश्यकनिर्युक्ति–वृत्ति, गुर्वावली)

वनवासीगच्छ (४)

आ० चन्द्रसूरिनी पाटे आ० समन्तभद्रसूरि थया

आ समये श्वेताम्बर–दिगम्बरना विभागो पड़ी चूक्या हता छतां बन्ने विभागो आ पूर्ववित् आचार्यने सरखी रीते मानता हता आज पण तेमना ग्रन्थो निःशंक भावे "आप्तवचन" तरीके मनाय छे

तेओए १ आप्तमीमांसा काव्य–११४ (देवागमस्तोत्र) २ युक्त्यनुशासन पद्य–६४, ३ स्वयंभूस्तोत्र पद्य–१४३ (समन्तभद्रस्तोत्र–चैत्यवन्दनसंग्रह) ४ जिनस्तुतिशतक पद्य–११६ (स्तुतिविद्या–जिनशतक–जिनशतकालंकार) वगेरे प्रौढ सर्जनो आप्यां छे जे हाल उपलब्ध छे जे पैकीनुं देवागमस्तोत्र तेमणे पोताना शिष्य 'वृद्धदेवसूरि'ने (प्रतिबोधवा) माटे बनाव्युं होय ए स्वाभाविक छे[१]

तेओ दिगम्बर होय एवुं एक पण प्रमाण प्रस्तुत ग्रन्थमां मळतुं नथी, परन्तु उत्कृष्ट त्याग अने वन–निवास करवाना कारणे ज दिगम्बर सम्प्रदाये तेमने अपनाव्या छे

तेओ पूर्ववित् हता घोर तपस्वी हता आगमानुसारी क्रियाधारक हता अने अधिकांश देवकुल शून्यस्थान तथा वनमां स्थिति करता हता आथी लोको तेमने तथा तेमना शिष्य समुदायने वीरनि० ७ समागममां "वनवासी" ना संकेतथी ओळखवा लाग्या

आ रीते निर्ग्रन्थगच्छनुं चोथुं नाम वनवासीगच्छ पड्युं

—(गुर्वावली, स्वामी समन्तभद्र)

वडगच्छ (५)

भगवान् महावीरनी पांत्रीसमी पाटे श्री उद्योतनसूरि थया तेओश्रीए मथुरा तीर्थनी अनेकवार अने सम्मेतशिखर तीर्थनी पांचवार यात्रा करी छे ते एकवार ए पुनीत तीर्थोनी यात्रा करी आबुनी यात्राए पधार्या. अहीं आबुनी तळेटीमां रहेल टेली गामना सीमाडे (पादरमां) एक विशाळ वड नीचे बेठा हता ए वखते आकाशमां सुन्दर ग्रहयोग" थयो हतो. आचार्यश्रीए अत्यारे शुभ अने कल्याण

---

१. दिगम्बर ग्रन्थकारो कहे छे के श्री समन्तभद्रसूरिए [illegible] तत्त्वानुशासन प्राकृतव्याकरण प्रमाणपदार्थ कर्मप्राभृत टीका अने गन्धहस्तिमहाभाष्य आदि ग्रन्थो बनाव्या हता जे हाल मळी शकता नथी.

दिगम्बर विद्वानो समन्तभद्र–श्रावकाचार (रत्नकरण्ड श्रावकाचार) ने पण तेओनी कृति माने छे पण ए ग्रन्थ कुन्दकुन्दश्रावकाचार, उमास्वामीश्रावकाचार वगेरे जेवी रीते ए आचार्योना नाम पर चडावी देवामां आव्या छे तेम आ श्रावकाचार माटे पण बन्युं होय ए स्वाभाविक छे अथवा आ ग्रन्थना विधाता लघु–समन्तभद्र होय ए पण संभवित छे

(१२१२), सार्धपुनमिया (१२३६) आगमिक (१२५०) वगेरे गच्छो-मतो निकळ्या छे नागोरीतपगच्छमांथी पासचंद्र (वि सं० १५७२) तथा ब्रह्ममत निकळ्या छे जे पैकीना केटलाएक आज विद्यमान छे नागोरी तपागच्छमां वडगच्छनी समाचारी हती.

आ रीते वडगच्छ ए निर्ग्रन्थगच्छनुं पांचमुं नाम छे

—(गुर्वावली, तपगच्छपट्टावली, भाषापट्टावली.)

भगवान श्री महावीर स्वामीनी ४४मी पाटे आ० श्री जगच्चन्द्रसूरि थया तेओ आ० श्री सोमप्रभसूरिना लघु गुरुभ्राता आ० मणिरत्नसूरिना शिष्य हता, परमसंवेगधारी हता तेमने योग्य जाणी गुरुश्रीए आचार्यपद प्रदान कर्युं.

तेमना समयमां प्रमादने लीधे वडगच्छमां क्रियाशैथिल्य व्यापी गयुं हतुं एटले आ० जगच्चन्द्रसूरि क्रियोद्धार करवाने उत्सुक हता

त्यार पछी आ० धनेश्वरसूरिए चैत्रपुरमां भ० महावीर स्वामीनी प्रतिष्ठा करी त्यारथी तेनो शिष्य-परिवार "चैत्रवाल" गच्छ तरीके ख्याति पाम्यो हतो. विक्रमनी तेरमी सदीना चोथा चरणमां आ० भुवनचंद्रसूरि तथा उ० देवभद्र गणी चैत्रवालगच्छना शासक हता उपाध्यायजी संवेगी, शुद्ध चारित्रवान्, गुणवान्, आगमवेत्ता तथा शुद्ध समाचारीना गवेषक हता आ० जगच्चन्द्रसूरिने तेमनो योग मळ्यो सूरिजीना सात्त्विक चारित्र तेमनी पर ऊंडी असर करी तेमणे आ आचार्य स्वामीने अधिक उत्साहित कर्या अने बन्नेए सहयोगीपणे क्रियोद्धार करवानो निर्णय कर्यो.

आ जगच्चन्द्रसूरिए वि० सं १२७३मां वडगच्छमां उ. देवभद्र गणी तथा स्वशिष्य देवेन्द्रनी सहायथी क्रियोद्धार कर्यो अने जावज्जीव सुधी आयंबिल तप करवानो अभिग्रह लीधो संभव छे के-गुरुश्रीए तेमने आ ज प्रसंगे आचार्यपद प्रदान कर्युं हशे

त्यारपछी आ सोमप्रभसूरिए भिन्नमालमां अने आ मणिरत्नसूरिए बे मास पछी थराद्मां स्वर्गगमन कर्युं.

पं० सुशालविजयजीना कथन प्रमाणे आ० जगच्चन्द्रसूरिए क्रियोद्धार कर्यो एटले नागपुरीय, कोरटक पीपलिया, वड, राज चैत्रगच्छ इत्यादि अनेक शाखाओना आचार्योए तेमने शुद्ध संवेगी ओळखी तेमना हाथे ज क्रियोद्धार करी तेमनी आज्ञानो स्वीकार कर्यो हतो "

आ युगमां महामात्य वस्तुपाळ अने तेजपाळ ए समाजना तेजस्वी पुण्यवंता हता तेमना शत्रुंजयनी यात्राना संघोमां नागेन्द्रगच्छीय आ० विजयसेनसूरि चैत्रवालगच्छीय आ भुवनचंद्रसूरि वडगच्छीय आ सोमप्रभसूरि आ मणिरत्नसूरि आ० जगच्चन्द्रसूरि वगेरे ११ श्वेताम्बर आचार्यो साथे हता एवो उल्लेख मळे छे

आ जगत्चन्द्रसूरिने बे प्रधान शिष्यो हता.

१ आ० श्री देवेन्द्रसूरि—तेओ ऋजुवयमां दीक्षित, परम त्यागी, समर्थ ग्रन्थकार अने अन्यना दरबारे पहोंच्या नहोता छतां पण अन्यना दिवसे ज दीक्षित बनावी शके एवी अमोघ शक्तिवाळा हता तेओ आ० जगत्चन्द्रसूरिजीने क्रियोद्धारना कार्यमां अनन्य सहायक हता आ सूरिजीनुं वि० सं० १३२७मां माळवामां स्वर्गगमन थयुं आ० विद्यानन्दसूरि तथा आ० धर्मघोषसूरि (उ० धर्मकीर्तिजी) वगेरे तेओना शिष्य हता. तमनाथी "लघुपोशाळ' शाखा निकळी छे

२ आ० विजयचन्द्रसूरि—उ० देवभद्रगणिनी कृपाथी तेमने दीक्षा, ज्ञान तथा सूरिपद (वि सं० १२८८मां) प्राप्त थयेल छे तमने विजयसेनसूरि, पद्मचंद्रसूरि, क्षेमकीर्तिसूरि (सं० १३३२मां कल्पभाष्य टीकाकार) वगेरे शिष्यो हता. तमनाथी "वडीपोशाळ" शाखानो आरम्भ थयो छे [13]

विक्रमनी तेरमी शताब्दीथी आ० जगत्चन्द्रसूरिना शिष्यो ते तपगच्छ अने तमना गुरुभाईना शिष्यो ते वडगच्छ आ रीते नामांतर मात्र थयो. बाकी आ बन्ने गच्छोमां सिद्धांतनी एकता, समाचारीनी समानता, क्रियानी अभेदता तथा दरेक प्रकारना संबंधो पूर्ववत् चालु ज रह्यां छे

तपगच्छना मुनिओनो ' बिरुद्" आ प्रमाणे छे—

"कोटिकगण, चांद्रकुल वज्रीशाखा, तपगच्छ" कोर वगेरे.

आ रीते निर्ग्रन्थगच्छनुं छठ्ठुं नाम तपगच्छ छे जेमां आज ६६४ साधुओ विद्यमान छे [14]

—(आ० श्री मुनिसुंदरसूरिकृत गुर्वावली, उ श्री धर्मसागरकृत तपगच्छ-पट्टावली, पट्टावली समुच्चय भाग-१, प सुखाजविजयगणीकृत हस्तलिखित पृ० ४१मी मायापट्टावली वगेरे.)

भविष्यवाणी

उपर दर्शावेल इतिहासना परिशीलनथी ए जणाई जाय छे के—पारस्परिक समानतायोमां कारण गच्छ श्वेताम्बरोमां तपगच्छ अने आजीविक—दिगम्बरोमां मूळसंघ ए परंपरागत प्रधान शाखाओ छे तपगच्छना अभ्युदय सूचक भिन्न भिन्न रत्नो—अवतरो प्राप्त थाय छे

---

१३ वडीपोशाळ शाखाना आचार्य ज्ञानचन्द्रसूरि (अथवा ज्ञानकलशसूरि) ना वखतमां "चैत्य पूर्णिमाथी वि सं १५ मा सैकामां निकळ्यो हे ज परंपराथी वि सं १७ ९मां कुलमत (पार्श्व चैत्य) अने वि सं १ १८मां तेरापंथमत निकळ्या छे

१४ हाल जैन साधुओनी संख्या पद्धतिसर नीचे प्रमाणे छे —

तपगच्छ साधु ६६ (साध्वी १२) खरतरगच्छ—साधु ४ अचलगच्छ—साधु १५ थी १ पार्श्वचन्द्रगच्छ—साधु १ थी ११ त्रिस्तुतिकगच्छ—साधु १ स्थानकमार्गी—साधु ० (साध्वी १४) तेरापंथी—साधु ११५, दिगम्बरी साधु-२ थी २१ (आर्यिका-१),

आ संख्या अनुमाने समजवी छे

जैनाचार्योनो औपदेशिक प्रभाव

लेखक—मुनिराज श्री न्यायविजयजी (दील्हीवाला)

जैन-संस्कृतिनी अहिंसा अने त्याग-वैराग्यनी भावना आजे जगप्रसिद्ध छे. एनी पाछळ एक प्रबळ अने स्वतंत्र संस्कार, बळ अने आत्मा छुपायां छे. ए ज भावनाना बळे जैनधर्म अने जैनसंस्कृति अविचळ-सुदृढस्थान पामी शकेल छे. अने एनुं मूळ जैनतीर्थंकरो अने तेमनो शिष्यसमुह, आचार्यवृन्द अने साधुगण छे. श्री तीर्थंकर, गणधर महाराजोए स्थापित जैन-संस्कृतिना प्रचार माटे तेमनी पछीना साधुसमुहे उघाडे माथे अने खुल्ले पगे भारतमां विचरी घणो उपकार कर्यो छे. जेम एक वृक्षमांथी अनेक डाळीओ अने शाखाओ फूटे तेम जैनधर्म भारतना खुणे खुणामां फेलायो; ज्यांये जैनधर्मनी संस्कृतिने क्यांय आंच आववा दीधी न होय के क्यांय उणप थवा न दीधी होय तो ए जैनाचार्योनी ज आभारी छे. ज्यां ज्यां ए त्याग अने तपनी मूर्तिसमा, शांतिना अवतार जैन मुनिओ पहोंच्या त्यां त्यां तेमणे आवी ज वाणीथी परम शान्तिथी उपदेशनारा वर्षाथी संसारना त्रिविध तापथी पीडाता मानवसमूहने परम शान्ति अर्पवानुं काम घमणे कर्युं छे.

आ सिवाय शुं साहित्यक्षेत्रे के धर्मक्षेत्रे शुं शिल्पक्षेत्रे के कलाक्षेत्रे जैनसंस्कृतिने ए सूरिपुंगवोए अपूर्ण नथी रहेवा दीधी. आ बधु करवा साथे जैनधर्मना उपासको वधारवा माटे पण तेमणे पुरेपुरु लक्ष आप्युं छे. राजामहाराजाओथी लईने गरीबोनां झुपडां सुधी पहोंची जई श्रमण-संस्कृतिनो प्रवाह तेमणे वहेवराव्यो छे. मोटा मोटा कुबेर भंडारीओ, चक्रवर्ति समा राजाओ, महामुत्सद्दी मंत्रीवरो अने आम जनताने तेमणे श्रमण-संस्कृतिना दिव्यामृतनुं पान करावी अहिंसा संयम अने शांतिनो डिंडिमनाद वगडाव्यो छे. आजे एमनां ए बधां कार्योनो परिचय आपवानो समय नथी अने एटलुं स्थान पण नथी. एटले आ तपगच्छ-श्रमण-वंशवृक्षमां मुख्य मुख्य जैनाचार्योना औपदेशिक प्रभावनो परिचय आपवा धारुं छुं.

विक्रमनी चौदमी सदीना प्रारम्भमां शासनदेवीए खंभात खोलीने जणाव्युं के— हे संघ! भरतमां उत्तमोत्तम गुरु आ० श्री देवेन्द्रसूरि छे तेनो मुनिवंश विस्तार पामशे अने युगपर्यंत चालशे. तुं ए गुरुनी सेवा कर."
—(गुर्वावली श्लोक-१२८)

विक्रमनी चौदमी सदीना उत्तरार्धमां खरतरगच्छीय आचार्यवर्य श्री जिनप्रभसूरिने पद्मावती देवीए प्रत्यक्ष थई जणाव्युं के—

"तपगच्छनो दिन प्रतिदिन अभ्युदय थशे माटे तमो तमारां स्तोत्रो तपगच्छना वर्तमान-विद्यमान आचार्य श्री सोमतिलकसूरिने समर्पित करो."
—(आ० जिनप्रभसूरिशिष्य [illegible]रचित सिद्धांतस्तवावचूरि)

माणिभद्रवीरे पं० श्री विजयदानसूरिने स्वप्नमां कह्युं के— तमारा गच्छनुं कुशलपणुं करीश तमारी पाटपर विजय शाखा स्थापजो
—(पं० [illegible] भाषा-[illegible], सं० १८८९ चै० व० ११ शुक्रवार सिरोही)

वास्तविक रीते आ सर्व आश्चर्य छे के आ जैनशासनसंरक्षक अने हितकारी देवदेवीओनी भविष्यवाणी अत्यार सुधी निरपवाद साची पडी छे

आपणे पण प्रस्तुत निबन्ध समाप्त करतां पुनः पुनः ए देवीवचनोनी निरन्तर सफळता इच्छी विरमीए.

जैनं जयति शासनम्

वीर नि० संवत् २४६२ कार्तिक पूनम
[illegible] अमदावाद

पार्श्वनाथ प्रभुना सातमा पाटधर आचार्य श्रीरत्नप्रभसूरि पांच सो शिष्यो सहित पधार्या, अने त्यां नजीकनी लूणाद्रिनी नानी पहाडीमां आइ तपस्या अने स्वाध्याय करता साथे ध्यानमग्न रहेवा लाग्या नगरजनोने अने राजाने आ परम त्यागमूर्तिनी उपदेशधाराए शुद्ध धर्मना अनुरागी बनाव्या एकवार राजपुत्रने सर्प करड्यो आमनु कारण जाणी आचार्य महाराजे एनुं विष दूर कर्युं त्यार पछी आचार्य महाराजना उपदेशथी ओसिया नगरीनी समस्त जनताए जैनधर्म स्वीकार्यो राजाए अने तेना समस्त कुटुम्बीवर्गे पण बहु ज श्रद्धापूर्वक जैनधर्म स्वीकार्यो. राजपुत्रनी कुळदेवी चामुण्डाने पाडा अने बकरानो बलि चडतो ए पण आचार्य महाराजना उपदेशथी बंध थयो राजमंत्री उहडे ओसिया नगरीमां प्रभु श्री वीरनुं मंदिर बंधाव्युं अने आचार्य महाराजे तेनी प्रतिष्ठा करी. आ ज समये कोरंटमां पण वीर प्रभुना मन्दिरनी प्रतिष्ठा आचार्य महाराजे करेली छे आने माटे नीचे प्रमाणे प्रमाण मळे छे —

> " सप्तत्या (७०) वत्सराणां चरमजिनपतेर्मुक्तजातस्य वर्षे,
> पंचम्यां शुक्लपक्षे सुरगुरुदिवसे ब्रह्मणः सन्मुहूर्ते ।
> रत्नाचार्यैः सकलगुणयुतैः सर्वसंघानुज्ञातैः,
> श्रीमद्वीरस्य बिम्बे भवशतमथने निर्मितेयं प्रतिष्ठा ॥ १ ॥[1]
> उपकेशे च कोरंटे तुल्यं श्रीवीरबिम्बयोः ।
> प्रतिष्ठा निर्मिता शक्त्या श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ॥ २ ॥

ओसीयानगरीना राजपुतोए ज जैनधर्म स्वीकार्यो एटलुं ज नहि किन्तु ओसीया निवासी समस्त क्षत्रिय जैनधर्म स्वीकार्यो.

भगवान् महावीर पछी जैनधर्मना प्रचारनु मौलिक स्थापनार आ आचार्य महाराज छे वर्तमान ओसवाल समाजमांथी बहुधा ओसवालो आ आचार्य महाराजना उपदेशथी ज जैनधर्म पामेला छे

रत्नप्रभसूरि क्यारे थया आ विषयमां वर्तमान इतिहासकारोमां मतभेद छे परन्तु एटलुं तो निर्विवाद सिद्ध छे के भगवान् महावीर पछी क्षत्रियोनी संख्यामां जैनो बनावनार आ प्रथम ज आचार्य थया छे मूळ रत्नप्रभसूरिथी नामना अनेक आचार्यो थया छे एटले संवतनो निर्णय थवो मुश्केल छे जैन ग्रन्थोमां तो वीरनिर्वाण संवत् ७ नो उल्लेख मळे छे एटले में पण ए ज समय स्वीकार्यो छे

1 आ श्लोकना बीजा चरणमां अशोभन छे अने वैसलीक आदि पण छे तथा "जैनजातिनिर्णयबोधक" ना प्रथम भागमां ये प्रमाणे आपेल छे ते ज प्रमाणे अहीं आपेल छे.

भगवान् महावीर ना हस्तनुं गौशालोभाग पर्युं हतुं तेने सिंचवानुं—तेनुं रक्षण करवानुं कार्य साधुओना ज हाथमां हतुं. भगवान् महावीर देवे तत्कालीन भारतना घणा राजाओ उपर जैनसंस्कृतिनी प्रबल छाप पाडी हती. तेमां मुख्य—मगध सम्राट् श्रेणिक, तेनो राजवंश तेना उत्तराधिकारी अजातशत्रु—कोणिक छे त्यारपछी वैशालीना गणसत्ताक राज्यना प्रमुख महाराजा चेडा अने तेमो समस्त राजवंश भगवान् महावीरना परम उपासक हता एटलुं ज नहिं किन्तु जैनसंस्कृतिना पोषक अने संरक्षक पण हता. आवी ज रीते उज्जयिनीपति चंडप्रद्योत, उदायन, काशी अने कोशलना लिच्छवीओ वगेरे अनेक राजामहाराजाओ प्रमुखोमी भगवानना पाक्ष करी श्रमण—संस्कृतिना अनुरागी बन्या हता.

भगवान् महावीरनी शिष्य—परंपराए पण ए ज प्रथा चालु राखी धर्मना प्रसार अने प्रचार माटे राजामहाराजाओने उपदेश आपवाना चालु राख्यो हतो. जेना अनेक पुरावा प्रबल ऐतिहासिक प्रमाणो, शिलालेखो, ऐतिहासिक ग्रंथो अने प्रशस्तिओ द्वारा उपलब्ध थाय छे.

(२) जंबूस्वामी

भगवान महावीरना द्वितीय पट्टधर अने अन्तिम केवली, दिग्गजस्व पर्वतनी तलेटीमां रहेला जयपुरना काश्यपगोत्रीय गाथीव राजा जयसेननना पुत्र प्रभवस्वामी के जेओ पोताना ४९९ साथीदारो सहित चोरी करवा आवे छे पण्याबानो धंधो करता तेमने, पहाने ज घर चोरी करता अटकावी प्रतिबोध आपी पोतानी साथे ज भागवती दीक्षा अपावी.

(३) प्रभवस्वामी

तेमणे पोतानी पछी जैन—शासननो भार सोंपवा तत्कालीन जैन संघमां योग्य व्यक्ति न जोवाथी पोताना शिष्यने मोकली यज्ञकर्ता प्रसिद्ध ब्राह्मण पंडित शय्यंभवने प्रतिबोध पमाडयो अने यज्ञस्तंभ नीचे रहेल श्री शान्तिनाथजीना बिंबनां दर्शन करावी सत्यधर्मनुं भान कराव्युं अने तेमणे पांची प्रभवस्वामी पासे जाडी दीक्षा लीधी. तेमणे दशवैकालिक सूत्र बनाव्युं प्रभवस्वामी वीरनिर्वाण संवत् ७५मां स्वर्गे गया.

रत्नप्रभसूरि

भगवान शान्तिनी उत्पत्तिना मूलमूल महापुरुष आ आचार्य महाराज छे. विक्रम संवत् चारसो वर्ष पूर्वे भिन्नमाल नगरीमां भीमसेन नामे प्रतापी राजा राज्य करतो हतो. तेने श्रीपुंज अने उपलदेव नामे बे पुत्रो हता. कालान्तरमां बन्नेमां मनमेद पडवाथी नानो पुत्र उपलदेव राज्य छोडी चाली नीकळ्यो अने दिल्हीना राजानी रजा लई तेणे मंडोवरनी पासे ज उपकेशपट्टण ओसिया नगरी वसावी. आलीशान नगरी घणी समृद्धिशाळी हती अने तेमां वस्ती पण पुष्कळ हती. एकवार

र्श्वनाथ प्रभुना सातमा पट्टधर आचार्य श्रीरत्नप्रभसूरि पांच सो शिष्यो सहित पधार्या, अने त्यां
नी नजीकनी लूणाद्रिनी नानी पहाडीमां उग्र तपस्या अने स्वाध्याय करता साथे ध्यानमग्न रहता ज्यारे
नगरजनोने अने राजाने आ परम त्यागमूर्तिनी उपदेशधाराए शुद्ध धर्मना अनुरागी बनाव्या एकवार
राजपुत्रने सर्प करड्यो. कामनु कारण जाणी आचार्य महाराजे एनु विष दूर कर्युं त्यार पछी
आचार्य महाराजना उपदेशथी ओसिया नगरीनी समस्त जनताए जैनधर्म स्वीकार्यो. राजाए
अने तेना समस्त कुटुम्बीवर्गे पण बहु ज श्रद्धापूर्वक जैनधर्म स्वीकार्यो. राजकुमारी कुवरदेवी
समुद्राने पाण अने चक्रानो लाभ पडतो ए पण आचार्य महाराजना उपदेशथी बंध थयो
राजमन्त्री ऊहडे ओसिया नगरीमां प्रभु श्री वीरनु मंदिर बनाव्युं अने आचार्य महाराजे तेनी
प्रतिष्ठा करी. आ ज समये कोरंटामां पण वीर प्रभुना मंदिरनी प्रतिष्ठा आचार्य महाराजे करली छ
माटे माटे नीचे प्रमाणे प्रमाण मळे छे —

> " सप्तत्या (७०) वत्सराणां चरमजिनपतेर्मुक्तजातस्य वर्षे,
> पंचम्यां शुक्लपक्षे सुरगुरुदिवसे ब्रह्मणः सन्मुहूर्ते ।
> रत्नाचार्यैः सकलगुणयुतैः सर्वसंघानुज्ञातैः,
> श्रीमद्वीरस्य बिम्बे भवशतमथने निर्मितेयं प्रतिष्ठाः ॥ १ ॥[1]
> उपकेशे च कोरंटे तुल्य श्रीवीरबिम्बयोः ।
> प्रतिष्ठा निर्मिता शक्त्या श्रीरत्नप्रभसूरिभि ॥ २ ॥

ओसीयानगरीना राजपुत्रोए ज जैनधर्म स्वीकार्यो एटलुं ज नहि किन्तु ओसीया निवासी
समस्त जातिए जैनधर्म स्वीकार्यो.

भगवान् महावीर पछी जैनधर्मना प्रचारनुं मौलिक स्थापनार आ आचार्य महाराज छे वर्तमान
ओसवाल समाजमांथी बहुधा ओसवालो आ आचार्य महाराजना उपदेशथी ज जैनधर्म पामेला छे

रत्नप्रभसूरि क्यारे थया आ विषयमां वर्तमान इतिहासकारोमां मतभेद छे परन्तु एटलुं तो
निर्विवाद सिद्ध छ के भगवान् महावीर पछी सत्तरमा वर्षमां जैनो बनावनार आ प्रथम ज आचार्य
थया छे मूळ रत्नप्रभसूरिजी नामना अनेक आचार्यो थया छ एटले संवतनो निर्णय थवो मुश्केल छे
जैन ग्रन्थोमां तो वीरनिर्वाण संवत् ७० मो उल्लेख मळ छ एटले में पण ए ज समय
स्वीकार्यो छे

---

१ आ श्लोकना बीजा पादमां ब्रह्मण्य छे अने केटलीक आवृत्ति पण छे छतां "जैनसाहित्यसंशोधक'
ना प्रथम भागमां जे प्रमाणे आपेल छे ते ज प्रमाणे अक्षरशः अहीं आपेल छे

(६) श्री भद्रबाहु स्वामी

तेओ श्री यशोभद्रसूरिना शिष्य हता अने वीरनिर्वाण संवत् १७०मां स्वर्गे पाम्या हता तेओ अन्तिम श्रुत केवली होवा साथे अनेक निर्युक्तिओना अने उवसग्गहर स्तोत्रना कर्ता हता. तेमना लघु बन्धु वराहमिहिरे उपद्रव कर्यो त्यारे तेमणे रक्षा करी हती. तेमणे दक्षिणना राजाने प्रतिबोध्यो हतो अने मौर्यवंशना राजाओने पण उपदेश आप्यो हतो.

(७) श्री स्थूलभद्रजी

तेओ श्री संभूतिविजयसूरिजीना शिष्य, नन्द वंशना मंत्रीश्वर शकडालना पुत्र, कोश्यावेश्याना प्रतिबोधक अने एक समय ब्रह्मचारी हता. मौर्यवंशना अन्तिम राजाओने प्रतिबोध करनार अने मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्तने प्रतिबोध पमाडी जैनधर्मनो उपासक बनावनार अने तेमना द्वारा जैनधर्मनो खूब खूब प्रचार करावनार तेओ हता. वीरनिर्वाण सम्वत् २१५मां तेमनो स्वर्गवास थयो.

(८) आर्य महागिरि अने आर्य सुहस्तिसूरि

स्थूलभद्रजीनी पाटे आ बन्ने आचार्यो थया छे. आर्य महागिरिजी जिनकल्पनी तुलना करता हता. तेओ परम त्यागी अने महातपोनिधि हता. आर्य सुहस्तिसूरिजीना उपदेशथी अवन्तिना भद्रा शेठाणीना पुत्र अवन्तिसुकुमाले दीक्षा लीधी अने स्मशानमां कायोत्सर्गध्याने ज स्वर्गे गया. ते स्थाने आचार्यश्रीना उपदेशथी तेमना पुत्रे अवन्ति पार्श्वनाथनुं भव्य मंदिर बनाव्युं जे तीर्थरूपे पूजायुं. अने आर्य सुहस्ति-सूरिजीए मौर्यसम्राट् चन्द्रगुप्तना पौत्र अशोकना पौत्र सम्प्रतिने प्रतिबोध पमाडी परम आर्हतोपासक-जैन बनाव्यो हतो. सम्प्रति राजाए जैनधर्म स्वीकार्या पछी उज्जयिनीमां साधुओनी एक मोटी सभा एकत्र करावी अने आचार्य महाराज द्वारा सविस्तर साधुओना विभाग करी आर्य देशमां सर्वत्र साधुओना विहार कराव्यो. आ उपरांत अनार्य देशमां पण साधुओनो विहार करावी जैनधर्मनो प्रचार कराव्यो.[1] जैनधर्म स्वीकार्या पछी आचार्य महाराजना उपदेशथी सम्राट् सम्प्रतिए सवा लाख नवीन जिन मंदिर बनाव्यां छत्रीस हजार मन्दिरोना जीर्णोद्धार कराव्या, सात सो दानशालाओ बनावी, सवा करोड जिनबिंब भराव्यां अने पंचाणु हजार धातुप्रतिमाओ भरावी. ए राजाने प्रतिज्ञा हती के निरन्तर एक जिनमंदिर बन्यानी वधामणी आव्या पछी दंतधावन करवुं.[2]

सम्राट् सम्प्रतिए मरु देशमां घांघाणी नगरमां श्रीपद्मप्रभस्वामीनुं मंदिर बनाव्युं पावागढमां श्री संभवजिननुं, हमीरगढमां श्री पार्श्वजिननुं, ईडरगिरिमां नेमिनाथनुं[3] पूर्व दिशामां रोहिसनगरमां श्री सुपार्श्वनाथनुं पश्चिममां देवपत्तन (प्रभासपाटण) मां... .. जिननुं,

१. हिमवत्थेरावली २. तपागच्छ पट्टावली श्री. ज वगेरे देखो ३ पावन्नीतार ल्हे छे के आ स्थान हमिरगढ छे आ स्थान नांधु कोई नहीं किंतु प्रसिद्ध हठीरावती गुफा ज छे. पुरातत्त्व शोधखोळ दरम्यानी पुरातुं जैन-मंदिर शोधी काढ्युं ज हैं.

ईश्वरशर्मा शांतिनाथनु, एम आ बधां स्थाने जिनमंदिर बंगाल्मां राजाए सिद्धगिरि तीर्थंतगिरि (समेतशिखर इत्यादि) श्रीसंखेश्वरजी, नदीय (नदिया) ब्राह्मणवाडक (ब्राह्मणवाडानुं प्रसिद्ध महावीर स्वामीनुं मंदिर) आदि स्थानोना संघ काढी संघपति थया अने रथयात्रा पण करावी हती.[1]
सम्राट् सम्प्रतिना धर्मगुरु आर्य सुहस्तिसूरि सो वर्षनुं आयुष्य पाळी वीरनिर्वाण संवत् २९१मां स्वर्गे पधार्या अने राजा २९३मां स्वर्गे गयो. सम्प्रतिए जैनधर्मनो खूब प्रचार कर्यो छे. टॉडराजस्थानना कर्ता कर्नल टॉड लखे छे के कमलमेरपर्वतनु शिखर के जे समुद्र सपाटीथी ३३५३ फूट ऊंचु छे तेनी उपर एक प्राचीन सुंदर जिनमंदिर जोयुं. आ मंदिर ए बखतनुं छे के ज्यारे मौर्य सम्राट् चन्द्रगुप्तनो वंशज सम्प्रति मरुदेशनो राजा हतो. तेणे आ मंदिर बधाव्युं छे. मंदिरनी बांधणी अति प्राचीन अने बीजां अनेक जैन मंदिरोथी तद्दन विभिन्न छे. आ मंदिर पर्वत उपर बन्यु होवाथी हजी सुरक्षित छे.

—(टॉडराजस्थान, हिन्दी, भा० १, खं० २ अ० २६ पृ० ७२१ थी ७२३)

पाटलिपुत्रमां (पटणामां) अशोकनो पुत्र दशरथ (पुष्परथ) राजा बन्यो. तेनी पछी बृहद्रथ (पुराणोमां एने बृहद्रथ कह्यो छे) गादीए बेठो. आ बने राजाओ बौद्ध धर्मी हता. बृहद्रथने तेना सेनाधिपति पुष्यमित्रे मारी गादी पोताना ताबे करी अने वीरनिर्वाण संवत् ३०४मां ए पाटलीपुत्रनो राजा बन्यो.

९ सुस्थित सुप्रतिबद्ध

आर्यसुहस्तिसूरिजीनी पाट आ बंने आचार्यो थया छे. तेमणे उदयगिरि उपर क्रोडवार सूरिमंत्रनो जाप कर्यो हतो. तेथी निर्ग्रन्थगच्छनुं नाम कौटीकगच्छ पड्युं. आ आचार्यना समयमां प्रसिद्ध महामेघवाहन खारवेल थयेलो छे.

विशालाना गणसत्ताक राज्यना मुख्य प्रधान–प्रेसीडेन्ट महाराजा चेटक, अजातशत्रु–कोणिक साथेना युद्धमां मराया पछी तेनो पुत्र शोभनराय पोताना श्वसुर कलिंगाधिपति सुलोचन पासे आवे छे अने पछी त्यांनो ज राजा बने छे. शोभनराय पोताना पितानी माफक परम जैनधर्मी हतो. एणे कलिंग देशमां आवेला कुमारी पर्वत उपर जई यात्रा करी आत्मकल्याण साध्युं हतुं. तेनी पांचमी पेढीए चंडराय कलिंगाधिपति थयो. ते वीरनिर्वाण संवत् १४९मां कलिंगनी गादीए बेठो. चंडरायना समयमां पाटलीपुत्रमां आठमो नंद गादी उपर हतो. ए महालोभी अने अधर्मी हतो. तेणे कलिंग उपर चढाई करी कलिंगने नष्टभ्रष्ट कर्युं अने कुमारगिरि पर्वत उपर मगध सम्राट् श्रेणिके बधावेल जिनमंदिर तोडी तेमांथी आदिनाथ भगवाननी सुवर्ण प्रतिमाने पाटलीपुत्र लगावी गयो.

---

1 तपगच्छ पट्टावली श्री. जै. को. हेरल्ड

चंडराय पछी तेनो त्रीजो पेढीए क्षेमराज कलिंगनो राजा बन्यो. वीरनिर्वाण संवत् २२७ मां एनो राज्याभिषेक थयो. एना समयमां प्रसिद्ध मौर्य सम्राट् अशोके कलिंग उपर चढाई करी कलिंगने मगधनुं आज्ञाधारी बनाव्युं

क्षेमराज पछी एनो पुत्र वृद्धराज कलिंगाधिपति थयो. ते परम जैनधर्मी हतो. तेणे कुमारगिरि अने कुमारीगिरी पर्वत उपर श्रमणोने रहेवा माटे ११ गुफाओ बनावी. वीरनिर्वाण संवत् १० मां तेनी पछी तेनो पुत्र भिक्खुराज कलिंगनी गादीए बेठो ते परम वीतरागोपासक अने निग्रंथोनो भक्त हतो. भिक्खुराजनां त्रण नामो हतां भिक्खुराज, महामेघवाहन अने खारवेल

भिक्खुराज अतिशय पराक्रमी अने वीर पुरुष हतो. तेणे पोतानी प्रबळ सेनाथी विजययात्रा आरंभी. मगधनरेश पुष्यमित्रने युद्धमां हरावी तेने पोतानी आज्ञा मनावी अने नंदराज जे आदिनाथ प्रभुनी प्रतिमा कलिंग देशमांथी उपाडी लाव्यो हतो ए सुवर्ण प्रतिमा पाछी कलिंगमां लाव्यो, अने कुमारगिरिपर्वत उपर नवीन मंदिर बंधावी प्रसिद्ध श्वेतांबराचार्य सुप्रतिबद्ध सूरिजी पासे तेनी प्रतिष्ठा करावी

आर्य महागिरि अने आर्य सुहस्तिसूरिजीना समयमां बारवर्षीय भयंकर दुष्काळ पड्यो हतो. ते वखते घणा ज्ञानी साधु महात्माओ रहेता अनशन करी स्वर्गे सिधाव्या हता ए दुष्काळना प्रभावथी आगमज्ञान क्षीण थतुं जतुं जोई कलिंगाधिपति खारवेले प्रसिद्ध प्रसिद्ध जैनस्थविरोने कुमारीपर्वत उपर एकत्र कर्या, जेमां आर्य महागिरिजीनी परंपराना आर्यबलिस्सह, बोधिलिंग, देवाचार्य, धर्मसेनाचार्य, नक्षत्राचार्य वगेरे बसो साधुओ, तेम ज आर्य सुस्थित अने सुप्रतिबद्ध तथा [1]उमास्वाति [2]श्यामाचार्य वगेरे त्रण सो स्थविरकल्पी साधुओ एकत्र थया हता. आर्या पोइणी प्रमुख त्रणसो साध्वीओ आवी हती कलिंगराज, भिक्खुराज, सीवंद, चूर्णक, सेलक वगेरे सातसो श्रमणोपासको अने कलिंगमहाराणी पूर्णमित्रा आदि सातसो श्रमणोपासिका–श्राविकाओ एकत्र थइ हती

कलिंगराजनी विनंतिथी अनेक साधुओ अने साध्वीओ मगध मथुरा बंग आदि देशोमां धर्मप्रचार माटे नीकळ्या अने आगमादि पूर्वधरोए आगमनो संग्रह कर्यो राजानी विनंतिथी शेष बचेल दृष्टिवादनो पण संग्रह कर्यो. आवी रीते आ राजा शासनांगीनो संरक्षक बन्यो.

---

१ तत्त्वार्थसूत्र सभाष्यना कर्ता. वीर निर्वाणनी चोथी शताब्दिमां स्वर्ग प्रशमरति श्रावकप्रज्ञप्ति आदि पांचसो प्रकरणोना रचयिता

२ पन्नवणासूत्रना कर्ता. वीरनिर्वाण संवत् १६ मा स्वर्ग.

आ महाप्रतापी, परम जैनधर्मी राजा खारवेल वीरनिर्वाण संवत् ३३० पछी स्वर्गे गयो. भिक्षुराज पछी तेनो पुत्र वक्रराय कलिंगनो राजा थयो ते पण परम जैनधर्मी ज हतो ते वीर निर्वाण संवत् ३६२मां स्वर्गे गयो तेनी पछी तेनो पुत्र विदुहराय कलिंगराज बन्यो ते पण परम जैनधर्मी हतो अने जैन साधुओनो परम भक्त हतो. ते वीरनिर्वाण संवत् ३९५मां स्वर्गे गया [1]

कालिकाचार्य

आ नामना चार आचार्यो थया छे तेमांथी अहीं तो गर्दभिल्लोच्छेदक अने संवत्सरी पांचमनी हती ते चोथनी करनार कालिकाचार्यनो संबंध जणावुं छुं विशेष माटे इतिहासप्रेमी मुनिराज श्री कल्याणविजयजी लिखित 'आर्यकालक' जूओ

कालिकाचार्य धारावास नगरना राजा वीरसिंहना पुत्र अने भरुचना राजा बलमित्र भानुमित्रना मामा थता हता कालिकाचार्ये जैनाचार्य गुणाकरसूरिजीना उपदेशथी जैनी दीक्षा लीधी हती. तेमनी साथे एमनी बहेन सरस्वतीए पण दीक्षा लीधी हती दीक्षा लीधा पछी टुंक समयमां ज आपणा कालिकाचार्य बने छे, अने विहार करता उज्जयिनी आवे छे त्यां तेमनां बहेन सरस्वती पण साध्वीपणामां छे तेमनुं रूप अने लावण्य जोई ए ब्रह्मचारिणी साध्वीनुं उज्जयिनीना गर्दभिल्लराजा बलात्कार हरण करे छे कालिकाचार्य तेने छोडाववा बधा प्रयत्न करे छे पण दुष्ट राजा नथी मानतो. अन्ते ए दुर्बुद्धि राजानी सान ठेकाणे लाववा कालिकाचार्य ईरान देशमां ९६ शाहिया राजाओने एकत्र करी हिन्द उपर चढी आवे छे अन्ते भीषण युद्ध थाय छे, गर्दभिल्ल मृत्यु पामे छे अने कालिकाचार्य पवित्र साध्वीने छोडावे छे शक लोको टुंक मुदत उज्जयिनीनुं राज्य भोगवे छे अने पछी बलमित्र-भानुमित्र त्यांना राजा बने छे

बलमित्र-भानुमित्र आचार्य महाराजना उपदेशथी जैनधर्म स्वीकारे छे राजाना आग्रहथी आचार्य महाराज भरुचमां (उज्जयिनी पण कहे छे) चतुर्मास रह्या छे परन्तु मंत्रीनी खटपटथी त्यांथी विहार करी दक्षिणमां प्रतिष्ठानपुरमां रहे छे त्यांनो राजा आचार्यना उपदेशथी आकर्षाई तेमनो भक्त बने छे अने भाद्रवा सुदि पांचमनुं वार्षिक पर्व राजाना अति आग्रहथी चतुर्थीना दिवसे करवानुं नक्की थाय छे जे प्रथा अद्यावधि चाले छे पंथोमां मान्यताना स्थापक आ ज आचार्यवर्य छे

कालिकाचार्य समर्थ युग-प्रवर्तक पुरुष थया छे तेमणे राज्यक्रान्ति करवा साथे धर्मक्रान्ति पण करी बलमित्र-भानुमित्रने अने प्रतिष्ठानपुरना सातवाहनने तेम ज ईरानना शाहिओने प्रतिबोधी जैनधर्मनो उपदेश आप्यो हतो. तेओ वीरनिर्वाण संवत् ४६[illegible] आसपासमां स्वर्गे गया [2]

---

१ हिमवंत थेरावलीना आधारे, लेखक मुनिराज श्री कल्याण विजयजीना लेखना आधारे. २ विशेष माटे प्रभावकचरित्र जूओ.

आर्य खपटाचार्य

आर्य खपटाचार्यश्री आर्यकालकाचार्यना भाणेज बलमित्र अने भानुमित्रना समयमां भरुचमां थया हता. तेमणे बौद्धोने वादमां जीती त्यांनुं प्रसिद्ध अश्वावबोध तीर्थ जैनसंघने साथे कराव्युं हतुं. तेमणे गुडशस्त्रपुरमां यक्षनो उपद्रव निवार्यो हतो अने त्यांना बौद्धवादि वृद्धकरने जीतीने त्यांना राजाने प्रतिबोध करी जैनधर्मी बनाव्यो.

ए ज समयमां पाटलीपुत्रमां [illegible]नो राजा दाहड—देवभूति हतो. तेणे ब्राह्मणोना कहेवाथी एवो हुकम कर्यो हतो के जैन साधुओ राजाने प्रणाम करे अने दरेक दर्शनवाळा स्वसिद्धांत छोडी दे. जे आवुं नहि करे—राजाज्ञा नहि माने—तेमने प्राणदंडनी सजा थशे. आथी जैन-श्रमणो गभराया अने महाविद्यासिद्ध खपटाचार्यने भरुचथी बोलाव्या. आचार्ये राजाने अने ब्राह्मणोने सजा करी सत्यधर्मनुं भान कराव्युं अने अन्ते त्यांना ब्राह्मणोने जैनी दीक्षा आपी. राजाने प्रतिबोधी जैन बनाव्यो.[1] प्रभावकचरित्रमां आर्य खपटनी साथे तेमना शिष्य उपाध्याय महेन्द्रनुं नाम पण मळे छे. आर्य खपटनी पासे परम प्रभाविक पादलिप्तसूरिए अभ्यास कर्यो हतो. वीरनिर्वाण संवत् ४८ मां आचार्यश्रीनो स्वर्गवास थयो हतो.

पादलिप्तसूरि

आ महान् विद्यासिद्ध अने प्रभावक आचार्य थया छे. तेमणे पाटलीपुत्रना राजा मुरुंडने प्रतिबोधी जैनधर्मी बनाव्यो. तेम ज मानखेटना राजकृष्णराजने उपदेश आपी जैनधर्मी बनावेल छे. कृष्णराजा अने तेनी सभा आचार्य महाराज उपर अतिशय अनुराग धरावती. आचार्य श्री ज्यो वखत त्यां रह्या छे. मध्यमां ब्राह्मणोए उठावेल उपद्रव तेमणे टाळ्यो. प्रतिष्ठानपुरना सातवाहनने पण उपदेश आपी जैनधर्ममां दृढ बनाव्यो. तेमना गृहस्थ—शिष्य महायोगी नागार्जुने आचार्यश्रीना नामनो शत्रुंजयनी तळेटीमां पादलिप्तपुर वसाव्युं जे अत्यारे पालीताणा कहेवाय छे. त्यां शत्रुंजय उपर तेमणे वीरचैत्य बनाव्युं अने पादलिप्तसूरिजीनी प्रतिमा पण पधरावी. आचार्य महाराज तरंगलोला, निर्वाणकलिका, प्रश्नप्रकाश आदि ग्रन्थो बनाव्या छे. आर्यकालकाचार्य आर्य खपटाचार्य अने पादलिप्तसूरि लगभग समकालीन छे. तेओ वीरनिर्वाणनी पांचमी शताब्दिमां थया छे. तेओ शत्रुंजयपर अनशन करी स्वर्गे सिधाव्या. तेमणे शत्रुंजय गिरिनो जीर्णोद्धार कराव्यो हतो.

सिद्धसेन दिवाकर

आ वृद्धवादिसूरिना शिष्य अने महाप्रतापी राजा विक्रमना प्रतिबोधक-धर्मगुरु हता. एमणे बंगालना कुर्मारपुरना राजा देवपालने प्रतिबोधी जैन बनाव्यो हतो. आचार्यश्रीए अवन्ति पार्श्वनाथनी प्रतिमा जे ब्राह्मणोए दबावी हती तेने बहार काढी हती. प्रथम वीरद्वात्रिंशिका रची अने पछी कल्याण-

१ प्रभावकचरित्र अने चतुर्विंशतिप्रबन्ध.

र स्तोत्र रच्युं जेना पंदरमा श्लोके महादेवलीनुं लींग फाटयुं अने पार्श्वजिननी प्रतिमा प्रगट थई
नुं संस्कृत अने प्राकृतज्ञान बहु विशाल हतुं तेमणे समस्त आगमोने संस्कृतमां करवानो संकल्प
ने "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य" प्रथम बनाव्युं आना प्रायश्चित्तरूपे वीरविक्रमने
बोधी जैन बनाव्यो. राजा वीरविक्रमे जैनधर्म स्वीकारी सिद्धाचलजीनो संघ काढयो, भरूचना
अवबोध तीर्थनो जीर्णोद्धार कर्यो अने ओंकारनगरमां विशाल जिनमंदिर बंधावी जैन
तेमनी खूब प्रभावना करी तेमो विक्रमनी प्रथम शताब्दिना महान् आचार्य हता तेमो जैन न्यायना
न सूत्र छे तेमणे सम्मतितर्क, न्यायावतार, द्वात्रिंशिकाओ, कल्याणमंदिरस्तोत्र आदि ग्रंथो बनाव्या छे
ो श्री दक्षिणमां स्वर्गे पधार्या निशीथचूर्णिना उल्लेख प्रमाणे तो सिद्धसेन दिवाकरे जैनागमो उपर
टीकाभाष्य रच्यां हशे सिद्धसेन दिवाकरनी सर्वज्ञपुत्र तरीकेनी जबरी ख्याति छे

(१३) श्री वज्रस्वामी

भगवान् वज्रस्वामीनो जन्म आजथी १९६७ वर्ष पूर्वे मालव देशमां तुम्बवन गाममां थयो
ो तेमनी मातानुं नाम सुनंदा अने पितानुं नाम धनगिरि हतुं. सुनन्दा गर्भिणी हती त्यारे
नगिरिए सिंहगिरिसूरि नामना प्रसिद्ध जैनाचार्यना उपदेशथी भागवती दीक्षा लीधी. पुत्र जन्म
मी माता पुत्रने धनगिरिने वहोरावी दे छे वज्र टुंक समयमां जैनागमनो ज्ञाता बने छे अने
नानी उम्मरे भागवती दीक्षा ल्ये छे वृद्ध बने उम्मरे चारित्रना धारक बनीने अनेक लब्धिओ
ठवे छे तेमना समयमां बारवर्षी भयंकर दुकाळ पडे छे ते वखते उत्तरापथना संघने दक्षिणमां
ई जई संघ-सेवा बजावे छे, अने त्यांना (पुरीना) राजाने पण प्रतिबोधी जैनधर्मी बनावे
पुरीनो राजा परम बौद्धधर्मी हतो. पर्युषणना दिवसोमां शुद्ध पुष्प जिनचरण उपर चडाववा
ी भक्तो वज्रस्वामी ते विघ्न दूर करे छे

आवी ज रीते शत्रुंजय तीर्थनो उद्धार पण तेमोश्रीना हाथे ज थाय छे पांचमा आरामां सौथी
थम जीर्णोद्धार आ आचार्य महाराजे कराव्यो छे तीर्थरक्षक देवनो उपद्रव टाळी महामहोत्सव अने
एक पुरुषार्थ शासनी भावडशाह द्वारा जीर्णोद्धार कराव्यो छे तेमो विक्रम संवत् ११४मां
र्गवास पाम्या

(१४) वज्रसेनसूरि

तेमनी पाटे वज्रसेनसूरि थया छे तेमणे सोपारकना जिनदत्त श्रेष्ठीना कुटुम्बने
पुत्रा दुःखमांथी बचाव्युं अने तेना चार पुत्रो नागेन्द्र, चन्द्र, निवृत्ति अने विद्याधरादिने कुटुम्ब सहित
क्षा आपी आ चारे महान आचार्य थया छे अने तेमना नामथी चार गच्छो प्रसिद्ध थया छे
ओ विक्रमनी बीजी शताब्दि—वीरनिर्वाण संवत् ६२०मां स्वर्ग पाम्या

बप्पभट्टीसूरि

आ पंचाल देशना प्रतापी क्षत्रियराज श्री सुरपालना पुत्र हता अने तेमणे बहुज नानी उम्मरे मोढगच्छना प्रतापी आचार्य श्री सिद्धसेन पासे ८०७मां दीक्षा लीधी अने ८११मां आचार्यपद पाम्या तेओ निरंतर १००० हजार श्लोक कंठस्थ करता तेमणे गोपगिरिना प्रसिद्ध आमराजाने उपदेशीने जैनधर्मी बनाव्यो हतो राजाए सूरिजीना उपदेशथी श्रावकनां अगीयार व्रत लीधां अने गोपगिरिमां १०१ गजप्रमाण जिनमंदिर बनाव्युं तेमां १८ भारप्रमाण सुवर्णनी श्री वीरबिंबनी प्रतिष्ठा करी आचार्यश्रीए लक्षणावतीना धर्मराजने प्रतिबोधी जैन बनाव्यो अने बौद्धवादि वर्धनकुंजरने हराव्यो. तेथी राजाए तेमने "वादिकुंजरकेसरी"नुं बिरुद आप्युं वाक्पतिराज के जे धर्मराजनी सभानो विद्वान् पंडित हतो तेणे गौडवध अने महामहविजय काव्य रचि बप्पभट्टीसूरिने अने आमराजने अमर बनाव्या छे लक्षणावतिना सेनापतिने प्रतिबोधी आचार्य महाराजे तेने भागवती दीक्षा आपी हती बप्पभट्टीसूरिजीए मथुरा, मोढेरा, अणहिलपुर गोपगिरि, सतारकसापुर आदिमां प्रतिष्ठाओ करी छे

आचार्य महाराजना उपदेशथी आमराजाए सिद्धाचलजी अने गिरनारजीनो संघ काढयो गिरनार तीर्थ उपर दिगंबरो झगडो करता हता ते एमनो हक तरन रद करी ए तीर्थ स्वतंत्र श्वेतांबरी बनाव्युं. संघसहित प्रभासमां चंद्रप्रभुने नमन करवा पण राजा गयो हतो वाक्पतिराजने अन्तिम समये जैनधर्मी बनाव्यो हतो वि.सं ८ मां भाद्रवा सुदि त्रीजे आचार्यश्रीनो जन्म अने ८९५मां आचार्यश्रीनो स्वर्गवास थयो आमराजा[1] ८९ मां स्वर्गे गया

आमराज पछी तेनो पौत्र भोजदेव गादीए बेठो. ते पण जैनधर्मी हतो. बप्पभट्टीसूरिजीना गुरुभाई श्रीनन्नसूरिए तेने उपदेश आपी श्रावकनां व्रतो उच्चराव्यां हतां तेणे मथुरा शत्रुंजय वगेरे तीर्थोनी यात्रा करी हती

शीलगुणसूरि

गूर्जरेश्वर वनराजना रक्षक अने धर्मगुरु शीलगुणसूरिजीना उपदेशथी पाटण वि सं ८०२मां वस्या पछी तेणे पंचासरा पार्श्वनाथनुं सुंदर जिनमन्दिर बनाव्युं तेमो मंत्री चांपा पण जैन हतो. राजाने जैनधर्म उपर प्रेम हतो.

चंद्रसूरि

गूर्जरनो राजा चामुंडराय तेमनो परम भक्त हतो. आचार्य महाराज महान् विद्वान अने अनेक विद्याना धारक हता तेओ वि सं ९९१मां थया

1 आमराजाने एक वैश्य पत्नी हती, जेना वंशजो—पुत्रो जैनधर्म पाळता अने जेनी वंशपरंपरामां धर्मात्मा थया. तेमणे शत्रुंजय तीर्थनो उद्धार कराव्यो. विशेष परिचय माटे जुओ 'धर्मसार

(२८) देवसूरि

नाममे डाअरमा राजा कर्णसिंहने प्रतिबोध कर्यो हतो अने ते राजाए तेमने "रूपश्री 'मुं' बिरुद अर्प्युं हतुं. १००४मां माळवामां पोरवाडरूपोमे प्रतिबोधी तेमणे पोरवाड जैन बनाव्या हता

वादिवेताल शान्तिसूरि

चंद्रकुळना थारापद्रीयगच्छना श्रीविजयसिंहसूरिना शिष्य आ आचार्ये प्रसिद्ध जैन कवि धनपालनी प्रेरणाथी धाराना प्रसिद्ध राजा भोजनी सभामां बहुने सुन्दर प्रभाव पाड्यो हतो अने वादिओने जीत्या हता भीमदेव बापावळी पण ते आचार्यश्रीने घणुं मान आपतो. उत्तराध्ययनसूत्र उपर न्यायबुक्त गंभीर बृहट्टीका तेमणे रची छे तेमणे ७०० श्रीमाळी कुटुम्बोने जैन बनाव्या हता राजा भोजे तेमनी वादशक्तिथी खुशी थइ "वादिवेताल"नु बिरुद आप्युं हतुं तेओ महाविद्वान् अने प्रखर नैयायिक हता भीमराजनी सभामां पण तेमने "कवीन्द्र" अने "वादिचक्रवर्ति "नु बिरुद आपवामां आव्युं हतु गूजराधिप भीमदेव अने मालवाधीप भोजदेव बन्ने तेमना तरफ बहु ज सन्मान अने भक्तिथी जोता हता तेमणे थरादमां चौहाणोमे प्रतिबोधी जैन बनाव्या हता विक्रमनी अगीयारमी शताब्दिना आ महान् आचार्य १०९६मां स्वर्ग पाम्या

धाकेश्वरसूरि

तेमणे बारसो पंदर राजकुमारोने प्रतिबोध आप्यो हतो तेओ १११७मां थया

मलधारी अभयदेवसूरि

गूजरातना राजा कर्णदेवे आचार्यश्रीना त्याग तप अने उज्ज्वल चारित्रथी प्रसन्न थई तेमने "मलधारी"नुं बिरुद अर्प्युं हतु तेमणे दक्षिणमां विहार करी कुल्पाकजी तीर्थनी यात्रा करी हती. त्यांथी तेओ अमरावती तरफ पधार्या अने अमरावतीथी ४० माईल उत्तर दूर एलचपुर-एलचपुरना राजा एलच श्रीपालने प्रतिबोधी मुक्तागिरि तीर्थ स्थपाव्यु, अने आकोलाथी ४१ माईल दूर आवेल श्रीपुर (सीरपुर)मां अंतरिक्ष पार्श्वनाथजीनी प्रतिष्ठा करावी हती. आ राजा परम जैनधर्मी थयो हतो अने तेणे त्यां जैनमंदिर पण बंधाव्यु हतु आ तीर्थ आजे पण श्वेतांबरी छ मुक्तागिरि तीर्थ अत्यारे विद्यमान छे तेना मूलनायक शामलीया पार्श्वनाथजी छ ए संवत् १९४ सुधी श्वेतांबरीना ताबामां हतुं. हमणां दिगम्बरोना ताबामां गयु छे परन्तु मूलनायकजी ता श्वेतांबरी छे जेनां दर्शन आ लेखक पण करी आवेल छे आ बारमी शताब्दिना महान् आचार्य हता.

मलधारी श्री हेमचंद्रसूरि

मलधारी श्री अभयदेवसूरिना शिष्य अने विशेषावश्यक उपर २८ हजार श्लोकनी टीकाना रचनार आ आचार्य हता तेओ प्रखर वादी अने महान् वक्ता हता अजमेरना राजा जयसिंह

तेमनुं व्याख्यान सांभळवा जता. भुवनपाल राजाए तेमना उपदेशथी जैनमंदिरमां पूजा करनाराओना कर माफ कर्या हता. सोरठनो रा'खेंगार पण तेमनो भक्त हतो. शाकंभरीना राजा पृथ्वीराजे तेमना उपदेशथी जैनधर्म स्वीकार्यो हतो अने रणथंभोरमां जैनमंदिर बनाव्युं हतुं, अने तेना उपर सोनानुं शिखर (इंडु) चढाव्युं हतुं. तेमना स्वर्ग समये अजमेरनो राजा जयसिंहराज तेमनी स्मशान यात्रामां आव्यो हतो. अजमेरना राजा उपर तेमनो जबरो प्रभाव हतो. तेओ ११६४मां विद्यमान हता. सिद्धराज जयसिंह पण तेमनुं व्याख्यान सांभळवा आवतो. तेमणे अनेक ग्रंथो बनाव्या छे

अमरचंद्रसूरि

तेओ प्रखर वादी हता. सिद्धराज जयसिंहनी सभामां एक वादी साथे जय मेळववाथी सिद्धराजे तेमने 'सिंहशिशुक'नुं मानवंतुं बिरुद आप्युं हतुं. तेमणे सिद्धान्तार्णव ग्रंथ बनाव्यो छे

वादी श्री देवसूरि

आ आचार्य प्रखर नैयायिक अने तार्किकशिरोमणि हता तेमणे स्याद्वादरत्नाकर नामनो ८४ हजार श्लोकनो प्रमाणनो महान् ग्रंथ बनाव्यो छे तेमणे नागपुरना राजा आल्हादनने उपदेश आपी जैनधर्मनो अनुरागी बनाव्यो हतो गूर्जरेश्वर सिद्धराज जयसिंहनी सभामां दिगम्बरो वादी कुमुदचंद्रने वादमां हरावी जय मेळव्यो हतो. सिद्धराज जयसिंह तेमने बहु मानथी जोतो वादी ज तेओ वीरशासन पंचगच्छनी प्रतिष्ठा स्थापक आचार्य थया छे तेमणे सिद्धराज जयसिंहनी सभामां सांख्यदर्शनना वादीने जीत्यो हतो तेथी सिद्धराजे तेमने "वादिसिंह"नुं बिरुद आप्युं हतुं तेम ज कर्णाटकीय आम्नाय दिगम्बराचार्यने पण तेमणे वादमां राजसभामां जीत्यो हतो सिद्धराज जयसिंह तेमने बहु मान आपतो. आ वादी सदाना महान् आचार्य ११६० मां थया छे

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यजी

जैनसमाजना इतिहासमां ज नहि किन्तु भारतना पुण्यश्लोक इतिहासमां श्री हेमचन्द्राचार्यजीनुं नाम सदा दीप्तिमान ज्योती माफक प्रकाशित छे समाजना जबरा प्रतिभासंपन्न अने महान् विद्वानो, कविओ अने तत्त्वज्ञानीओमां श्री हेमचन्द्राचार्यनुं स्थान घणुं ज मानवंतुं अने गौरव भर्युं छे श्री हेमचन्द्राचार्यनी अलौकिक विद्वत्ता अने अगाध पांडित्य हतां तेमनी सर्वतोमुखी प्रतिभा आज पण संस्कृत साहित्याकाशमां सूर्यनी माफक चमकता मारी रही छे तेमणे विविध विषयोना जे महान् ग्रन्थो रच्या छे तेथी संस्कृत भारत साहित्य भर्युं भर्युं देदीप्यमान छे

महान् प्रभाविक पुरुष पर घणा घणा परिषहो अने उपसर्गो आव्या छे अने ते ते समये जैनशासनमां अनेक प्रभाविक आचार्यो थया छे अने ते परिषहो अने उपसर्गो तेमणे दूर कर्या छे

आमा जे जे प्रभावक आचार्य महाराजो थया छे तेमां श्री हेमचन्द्राचार्यजी महाराज आगस्थाने छे जैनशासन-रक्षक तरीके तेओश्रीए जे अद्भुत ज्ञान पराक्रमो कर्यां छे ते अवर्णनीय छे आ महात्माने महान शासन प्रभावक, शासन संरक्षक, धुरन्धर दर्शनशास्त्री, प्रखर साहित्यविद्, प्रकांड नैयायिक शास्त्रपारगामी के महान् वैयाकरणी के कोई पण प्रकारना मुख्यमां मुख्य अने समर्थमां समर्थ पंडितोमां आगळे मूकी शकाय तेम छे

आ महान् प्रतिभाशाळी आचार्यदेवनो जन्म वि सं० ११४५मां कार्तिक शुदि पूर्णिमाने दिवसे धंधुकामां, पिता चाचींग अने माता पाहिनीने त्यां थयो हतो, अने तेमनुं नाम चांगदेव हतुं तेमणे पांच वर्षनी उम्मरे एटले के वि सं ११५०मां खंभातमां दीक्षा लीधी. कोई पूर्वजन्मनो अपूर्व संस्कार कहो के तेमनी अद्वितीय स्मरणशक्ति—धारणाशक्ति कहो तेना प्रतापे टूंक समयमां ज जैन अने जैनेतर शास्त्रोनुं गम्भीर ज्ञान तमणे प्राप्त करी लीधुं उत्कृष्ट आत्मसंयम, असाधारण इन्द्रिय-दमन अने महान् वैराग्यवृत्तिथी तेमणे आजीवन नैष्ठिक ब्रह्मचर्यव्रतनुं पालन कर्युं छे दीक्षा लीधी त्यारे तेमनुं नाम सोमचन्द्र हतुं परन्तु तेमनी अद्भुत शक्ति जोई तेमनी आचार्य पदवी वखते तेमनुं नाम श्री हेमचन्द्रसूरि राखवामां आव्युं

तेओश्री गूजरातना प्रतापी राजवी सिद्धराज जयसिंहनी सभाना तेजस्वी रत्न हता तेमणे राजाने जैनधर्मना सिद्धांतो समजावी जैनधर्म उपर अनुरागी बनाव्यो हतो. सिद्धराजनी प्रेरणा अने प्रार्थनाथी आ उत्कृष्ट विद्वाने सिद्धहेमव्याकरण बनाव्युं राजाए हाथीनी अंबाडी उपर नगरमां फेरवी ते ग्रन्थरत्नने राजभंडारमां पधराव्यो हतो. आ सिवाय त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र, वगेरे अनेक अद्भुत जुदा जुदा विषयोना ग्रन्थो रच्या छे तमणे पोतानी जिन्दगीमां साडात्रण क्रोड श्लोकनी रचना करी छे तेमनी अपरिमित ज्ञानशक्तिना प्रतापे ज सिद्धराजनी सभामां तेमने "कलिकालसर्वज्ञ"नुं बिरुद मळ्युं हतुं. सिद्धराजनी पछी गादीए आवनार महाराजा कुमारपाळने प्रतिबोधी परम आर्हतोपासक बनावनार आ ज आचार्य महाराज हता तेमणे कुमारपाळने जैन बनावी गूजरात अने गूजरातनी बहार अमारी पडह वगडाव्यो, नाना मोटा अनेक राजाओने जिनवाणीना रसिया बनाव्या अने अनेक आत्माओने जैन बनाव्या भगवान् महावीरना शासनमां श्री हेमचंद्राचार्य अद्भुत अने असाधारण महापुरुष थया छे सम्राट् संप्रति अने विक्रम पछी कुमारपाळनुं नाम जैन राजाओमां मुख्य गणाय छे श्री हेमचन्द्राचार्यनी अद्भुत ज्ञानशक्ति अने असाधारण प्रतिभा जोईने पाश्चात्य विद्वान डो. पीटर्सने तमने ज्ञानना सागर (Ocean of Knowledge) कह्या छे कुमारपाळे श्री हेमचन्द्रसूरिजीना उपदेशथी १४४४ जिन-मंदिर बंधाव्यां, अनेक ज्ञानमंदिरो कराव्यां, पौषधशाळाओ करावी अने श्रावको पण खूब वधार्या. उदायन मन्त्री, आम्रभट, वाग्भट आदि सूरिजीना अनन्य भक्तो हता. यदि हेमचन्द्राचार्यजी

(४४) जगच्चन्द्रसूरिजी

महात्यागी अने परम तपस्वी आ आचार्यनी घोर तपस्या अने उत्कृष्ट त्याग जोई मेवाडनरेश जैत्रसिंहे तेमने तपानुं बिरुद आप्युं हतुं. दीक्षा लीधा पछी तेमणे आजीवन आयंबिलनी तपश्चर्या करी हती. मेवाडनरेश–चितोडनो राजा तेमनो परम भक्त हतो अने तेमणे राजसभामां बत्रीस दिगम्बर वादिओने जीत्या हता अने तेओ हीरानी माफक अभेद्य रह्या हता तथी तेमने "हीरला"नुं बिरुद आप्युं हतुं. मेवाडनो राजवंश आज पण तपागच्छना आचार्यनुं बहु मान करे छे. वडगच्छनुं नाम आ आचार्यथी तपगच्छ जाहेर थयुं तेमने १२८५ मां बिरुद मळ्युं. तेरमी शताब्दिना आ महान् आचार्य थया. राणा जैत्रसिंहना १२७०–१३०९ सुधीना शिलालेखो मळे छे. मेवाडना राजवंशमां आ सूरिजीना समयथी ज जैनधर्मनो प्रवेश थयो जे आजपर्यंत अंशे अद्यावधि विद्यमान छे.

(४५) देवेन्द्रसूरि

आ आचार्य महाराज कर्मग्रन्थ अने श्राद्धदिनकृत्यादि अनेक ग्रन्थोना रचयिता, अने मेवाड नरेश वीर केसरी समरसिंह अने तेनी माता राणी जयतल्लादेवीना प्रतिबोधक हता. तेमना उपदेशथी राणी जयतल्लाए चितोडना किल्लामां शामळीया पार्श्वनाथजीनुं मंदिर बनाव्युं [1] हतुं. गूजरातना राणा वीरधवलनी तेमना उपर घणी सारी भक्ति हती. वस्तुपाल अने तेजपाल पण तेमने परम पूज्य मानता हता. मेवाडनरेश समरसिंहे देवेन्द्रसूरिजी अने आचार्य अमितसिंहसूरिना उपदेशथी राज्यमां अमारी पळावी हती [2] तेमनो १३२७मां स्वर्गवास थयो. अनेक राजाओ उपर तेमणे सुन्दर प्रभाव पाड्यो हतो.

---

[1] राजपुतानाना इतिहासमां रा. ब. गौरीशंकर हीराचंद ओझा लखे छे "तेजसिंह की राणी जयतल्लदेवी ने जो समरसिंह की माता थी चितौड पर श्यामपार्श्वनाथ का मंदिर बनवाया था. –पृ. ४७१

[2] देवेन्द्रसूरिजीना मेवाडना राजाओ उपर केवा प्रभाव हता ए माटे त मेवाडना राजानुं एक फरमान प्रगट करुं छुं —

"स्वस्ति श्री एकलिंगजी परसादात् महाराजाधिराज महाराणाजी श्री कुंभाजी आदेसात् मेदपाटरा उमराव थावादार कामदार समस्त महाजन पंचाकस्य अप्रं आपणे अठे श्री पूज तपगच्छ का तो देवेन्द्रसूरिजी का पंथ का, तथा पुनम्यागच्छ का हेमाचारजजी का परमाद है। धरम ज्ञान बतायो सो अठे अणांका पक्षको होवेगा जणीने मानांगा पूजांगा। परथम (प्रथम) तो आगेसुं ही आपणे गढकोट में नोबदे जद पहीला भरियमदवनीग देवरारो नौबत बाजे है पूजा कर है अप मजुदी मानेगा। सिसोदा पगका होवेगा ने सुरापान (सुरापान) पीवेगा नहि और धरम सुध्यार में जीवराखणो यामुरयादा लोपेगा जणीने महासताँ (महासतियाँ) की आण है और फेलकरेगा जणीने तलाक है सं. १४७१ काती सुद ५.'

—(अयोध्याप्रसाद गोयलीय कृत "राजपूताने के जैनवीर," पृ. ३४)

विजयसेनसूरि

आ नागेन्द्रगच्छना महान् आचार्य हता. तेओ गूजरातना महाराणा वीरधवलने अने तेना मंत्रीश्वर वस्तुपाल तेजपालने प्रतिबोधनार महान् धर्मगुरु हता. वस्तुपाले जे महान् धर्मकार्यो कर्यां छे तेनुं मुख्य मान देवेन्द्रसूरिने अने विजयसेनसूरिजीने ज घटे छे.

उदयप्रभसूरि

तेओ विजयसेनसूरिजीना शिष्य हता. राजा वीरधवल तेमने बहुमानथी जोता. धर्माभ्युदय अने आरंभसिद्धिना रचयिता आ आचार्य महाराजे सुकृतकीर्तिकल्लोलिनी बनावीने वस्तुपालने अमर बनाव्यो हतो. वस्तुपालना संघोमां तेओ मुख्य हता.

जयसिंहसूरि, नरचन्द्रसूरि, शान्तिसूरि, खरतरगच्छना जिनदत्तसूरि आदि आचार्यो वस्तुपालना समयमां हता. अने समरसिंह राजाने पण प्रतिबोध आपता. आ बधा तेरमी अने चौदमी सदीना महान् आचार्यो छे.

अमरचंद्रसूरि

तेओ महाकवि हता. तेमनां प्रसिद्ध बालभारत अने कविकल्पलता काव्यो आजे जैनेतरोमां पण मानभरी दृष्टिए वंचाय छे. तेमणे गूजरातना राजा विसलदेवने प्रतिबोध पमाड्यो हतो. तेओ महाकवि हता. तेमणे अनेक सुंदर काव्य ग्रंथो, अने काव्य परीक्षाना ग्रंथो बनाव्या छे. तेओ तेरमा सैकामां विद्यमान हता.

(४६) धर्मघोषसूरि

मांडवगढना मंत्री पेथडकुमार अने झांझणकुमारना प्रतिबोधक आ आचार्य महाराजना उपदेशथी ८४ जिनमंदिरो अने अनेक ज्ञानभंडार थया हता. तेओ परम प्रभावी, अनेक विद्याना धारक अने शासन प्रभावक हता. तेओ चौदमी शताब्दिना आचार्य हता.

धर्मघोषसूरि

तेओ वडगच्छना श्री यशोभद्रसूरिना शिष्य हता. तेमणे शाकंभरीना राजा सपादलक्षने प्रतिबोध पमाड्यो हतो. राजाए तेमने "वादिचूडामणि"नुं बिरुद आप्युं हतुं.

जिनप्रभसूरि

आ आचार्ये विविधतीर्थकल्पना रचयिता अने अनेक स्तोत्रोना कर्ता तरीके बहु प्रसिद्ध छे. तेमणे चौदमी शताब्दिमां तुघलक सुलतान महम्मदने उपदेश आपी घणो प्रभाव पाड्यो हतो. मुसलमान सम्राटोना प्रतिबोधमां पहेल करनार आ आचार्य हता एम कहेवाय छे. तेमणे स्वनिर्मित ९ स्तोत्रो शासन देवीना वचनथी ते वखतना विद्यमान अने परम प्रभावी तपागच्छाचार्य श्री सोमतिलकसूरिजीने अर्पण कर्यां हतां.

(४९) देवसुन्दरसूरि

महाविद्वान, अनेक ग्रंथोना रचयिता अने अनेक राजाओना प्रतिबोधक आ आचार्य महाराज वि० सं १४६०मां स्वर्गवासी थया

वज्रसेनसूरि

तेओ नागपुरीय तपागच्छना आचार्य, सारंगभूपतिना प्रतिबोधक अने अल्लाउद्दीन खीलजीना उपदेशक हता तेमणे एक हजार छोडाओने जैन बनाव्या हता एमनो समय चौदमी शताब्दिनो छे

हेमतिलकसूरि

भाटी राजा दुर्जनीरामने जैन बनावनार आ आचार्य महाराज चौदमी सदीमां थया छे

रत्नशेखरसूरि

आ नागपुरीय तपागच्छना आचार्य हता अने तेमणे फिरोजशाह तघलखने प्रतिबोध्यो हतो.

(५१) मुनिसुन्दरसूरि

आ आचार्य अध्यात्मकल्पद्रुम आदि ग्रंथोना रचयिता सहस्रावधानी गूजरातना सुलतान मुजफरखानने उपदेश आपनार अने खंभातना सुबा दफरखानना प्रतिबोधक हता ए दफरखाने तेमनी अद्भुत वाक्शक्तिथी प्रसन्न थइ तमने "वादिगोकुलसंड"नु बिरुद आप्यु हतुं अने दक्षिणना पन्डितोए तेमने "कालीसरस्वती"नु बिरुद आप्युं हतु तेमणे सिरोहीना राजा सहस्रमल्लने उपदेश आपी अमारी प्रवर्तावी हती तेमनो १४९९मां स्वर्गवास थयो.

(५२) रत्नशेखरसूरि

श्राद्धविधि प्रमुख अनेक ग्रंथोना कर्ता आ आचार्य महाराज महाविद्वान हता. तेमने खंभातना सुबा दफरखाननी सभामां बांबी प्रमुख ब्राह्मण पन्डितोए "बालसरस्वती"नु बिरुद आप्यु हतुं. सुबा उपर तेमणे सारो प्रभाव पाड्यो हतो. तेमनो १५०७मां स्वर्गवास थयो

(५६) आणंदविमलसूरि

तेओ महातपस्वी, क्रियोद्धारक अने सुविहित शिरोमणि हता तेमना तप त्याग, चारित्र अने उपदेशथी प्रसन्न थई सौराष्ट्रना अधिपति सूरमाणे सौराष्ट्रमां सदा साधुओ विचर एवी मांगणी सूरिजी पासे करी हती तेथी तेमणे पोताना शिष्य पंन्यास जगर्षिमुनिने सौराष्ट्रमां विहार कराव्यो हतो. तेमणे पण सूरमाण उपर सारो प्रभाव पाड्यो हतो. वि सं १५८७मां सूरिजीना उपदेशथी कर्माशाहे शत्रुंजयनो सोलमो उद्धार कराव्यो विक्रम संवत् १५९६मां नव उपवासनुं अनशन करी सूरिजी स्वर्गे पधार्यां हता

धर्मरत्नसूरि

शत्रुंजय तीर्थना उद्धारक आ आचार्य महाराज श्री कर्माशाहना पिता तेजाशाहना धर्मगुरु हता. एकदा तेओ संघसहित आबुजी परगणामां चित्तोडमां पधार्या हता. ते वखते मेवाडमेरां प्रसिद्ध राणा सांग (महाराणा सांगा) हाथी घोडा आदि सैन्य सहित सामे आव्यो हतो. तेमनो उपदेश सांभळी बहु ज प्रसन्न थयो हतो अने तेणे सूरिजीना उपदेशथी शिकार आदि दुर्व्यसनोनो त्याग कर्यो हतो. धर्मरत्नसूरिना स्थाने धनरत्नसूरिनुं पण नाम मळे छे. तेओ सोळमी शताब्दीना महान् आचार्य थया.

(५८) जगद्गुरु श्री हीरविजयसूरि[1]

मध्य युगना जैनाचार्योमां आ आचार्यश्रीनुं स्थान बहु ज महत्त्वनुं छे. सूरिजी असाधारण प्रतिभाशाळी, प्रखर प्रभावी, पुण्यशाळी, अने अपूर्व विद्वान हता. सूरिजीनो यश प्रताप मात्र जैनसमाजना उपाश्रयोमां ज नहि किन्तु समस्त भारतमां फेलायो हतो. तेम ज तेमनी यशोगाथा तेमना शिष्यो अने भक्तो ज गाय छे एम नहि किन्तु अबुलफजले आइने-अकबरीमां अने बदाउनी विन्सेन्ट स्मीथ जेवा पाश्चात्य विद्वानो पण पोताना ग्रंथोमां मुक्तकंठे तेमनी यशोगाथा गाई छे. सूरिजीनुं अलौकिक व्यक्तित्व, अगाध पांडित्य अने त्याग-चारित्रनो प्रभाव मात्र जैन संघ उपर ज नहि किन्तु मोगल सम्राट अकबर उपर पण घणो पड्यो हतो.

१६३९ ना जेठ वदि [illegible] आ प्रखर प्रभावी आचार्य महाराजे मोगलकुल-तिलक सम्राट [illegible] संभळाव्यो हतो. [illegible] सूरिजी [illegible] मळ्या ते धर्मोपदेश [illegible] सूरिजीना उपदेशथी अकबरे वर्षना लगभग छ महिना माटे [illegible] बंध कर्या, [illegible] पशुओने छोड्या, [illegible] माफ कर्यो, [illegible] बंध कर्यो, [illegible] तीर्थोमां समस्त [illegible] अने जैन साधुओना विहार मार्गमां निर्विघ्ने थाय तेम प्रबंध [illegible]. सूरिजीना परम [illegible] अने उपदेशथी आकर्षाई सम्राट अकबरे सूरिजीने जगद्गुरुनुं बिरुद आप्युं हतुं. सम्राट अकबरना राज्यमां [illegible] महान् बिरुद बीजा कोईने [illegible] गुजरातथी [illegible] [illegible] आग्रहथी [illegible] उपदेश [illegible]. सूरिजीए आठ वार [illegible] प्रदेशमां [illegible] गौरीपुर [illegible] प्रतिष्ठा करी हती. गुजरातमां [illegible]

पछवी हती. सूरिजी भारतनी एक अलौकिक विभूति हता तेमना तेज, पुण्य अने प्रभाव आगळ मोटा मोटा सम्राटो सुलतानो, राजा महाराजाओ, धनाढ्यो अने दिग्गज पंडितो शिर झुकावता हता. जैन साधुओना त्यागी जीवननो खरो परिचय सूरिजीए जगत्ने कराव्यो हतो. सूरिजीए जे बीज रोप्युं हतुं तेने तेमना ज शिष्यरत्नोए अने बीजा साधुओए पण पोषण आप्युं हतुं अने गूजरातना आ सपूत भारतनी महान् विभूति अने जैन-श्रमण-संस्कृतिनी आदर्श प्रतिमा समा आ सूरिजी १६५२ ना भादरवा सुदि ११ उनामां स्वर्गे सिधाव्या

सूरिजी पछी उपाध्याय श्री शांतिचन्द्रजी सिद्धिचन्द्रजी, भानुचन्द्रजी (कादम्बरीना टीकाकार) आदिए अकबर बादशाहने उपदेश आपी घणां सुकृत्यो कराव्यां छे तेओए डाबर सरोवरनी हिंसा शिकार बंध कराव्यो, पांच जैन तीर्थो श्वेतांबर संघने सोंपावराव्यां, जैनसंघनी अनेक आपत्तिओ दूर करावी अने जहांगीर शाहजहां आदि राजपरिवारने पण धर्मोपदेश आप्यो. इन्दलनना महाराज नारायणसिंह अने वांसड देशना भारतीय नगरना राजानी सभामां दिगंबराचार्योने उ. शांतिचन्द्रजीए हराव्या हता सिद्धिचन्द्रजीने सम्राट् अकबरे "खुशफहेम" नुं मानवतुं बिरुद आप्युं हतुं

हीरविजयसूरि एक समर्थ युगप्रवर्तक पुरुष हता तेमनो युग हीरयुग कहेवाय छे सम्राट् अकबरे आ सूरिजीना निधन पछी सूरिजीने एक समर्थ धर्मगुरु, परम हितस्वी मित्र अने धर्ममूर्ति तरीके आजीवन याद राख्या छे

जिनचंद्रसूरि

हीरविजयसूरिजीए जे मार्ग उघाड्यो हतो तेनो लाभ बीजा जैनाचार्योए पण लीधो छे मंत्रीश्वर कर्मचन्द्रजीनी सूचना अने आग्रहथी अकबरे जिनचंद्रसूरिजीने पोतानी पासे लाहोरमां बोलाव्या हता. जिनचंद्रसूरिजीए [illegible] अकबरने आकर्ष्यो हतो अने जगद्गुरु श्री हीरविजयसूरिजीनी माफक पोताने पण [illegible] पनी मांगणी करी हती. (जूओ श्री जिनचंद्रसूरिजीने मळेलुं फरमानपत्र) तेमण [illegible] गूजरातमां संचरणो अषाढ सुदि ८ मे विहार कर्यो अने चतुर्मासमां भारतनां [illegible] लाहोर कर्यो अने चातुर्मास त्यां व्यतीत कर्युं. पछी अनुक्रमे फागण सुदि १२ लाहोर [illegible] बादशाहे धर्मोपदेश सांभळ्यो. एक वर्ष सम्राटने उपदेश सांभळावी तेओ हापुड पधार्या —

(५९) विजयसेनसूरि

आ एक महाप्रभावशाली जैनाचार्य हता. तेमणे अकबर-जहांगीरना सुबा खानखानानने उपदेश आप्यो हतो सम्राट् अकबरे श्री हीरविजयसूरिजीनी हाजरीमां तेमना गुणो अने तेमसूरिजीनी श्री हीरविजयसूरिजी पासे प्रशंसा सांभळी हती त्यारथी श्री हीरविजयसूरिजीना शिष्यो प्रत्ये अपूर्व मान होवाथी विजयसेनसूरिजीने लाहोरमां धर्मोपदेश देवा बोलाव्या, अने विजयसेनसूरिजी पासे धर्मोपदेश सांभळ्यो.

आपी छे जेना लेखो अने पट्टा पण मोजूद छे आजे आ स्थान बुद्धमाकरी तरीके प्रख्यात थयुं छे आवी रीते हीरसूरिमां गुजरात बहार साधुओना विहार वध्या अने जैनशासननो खूब प्रचार थयो

उनामां पण श्रीहीरविजयसूरिजीना समुदायना मुख्य मुख्य तथा आचार्यो अने शिष्योनी पादुका छे अने त्यां पण सो वीघां जमीन तेना रक्षण माटे सुबाओद्वारा मळेली छे परन्तु श्रावकोनी बेदरकारीथी घणी जमीन जुनागढ स्टेट दबावी जाय छे आवां अनेक शुभ कार्यो हीरसूरिगच्छ मुनिमहाराजाओए राजसत्ताधिकारीओने उपदेश आपी कराव्यां छे

पं. केसरकुशल

विजयक्षेमसूरिना प्रशिष्य श्री केसरकुशलजीए औरंगजेबना पुत्र बहादुरशाह अने दक्षिणना सुबा नवाब महमद युसुफखानने प्रतिबोधी दक्षिणना कुल्पाकजी तीर्थनो वि० सं० १७६७मां जीर्णोद्धार कराव्यो.

विजयरत्नसूरि

तेओ श्री विजयदेवसूरिजीना प्रशिष्य थया हता तेमणे १७६४मां मागोरना राणा अमरसिंहने प्रतिबोध्यो हतो अने १७७१मां जोधपुरना अजितसिंहने प्रतिबोध्यो हतो. तेम ज मेडतानो उपाश्रय जे मस्जिद बन्यो हतो ते पुन पाछो मेळवी उपाश्रय बनाव्यो. आ महाराजश्री सारीरीते महान् आचार्य थया

आवी ज रीते उ० विजयगणि महामहोपाध्याय श्री यशोविजयजी, उपाध्यायजी श्री विनयविजयजी आदि प्रभावक पुरुषो थया छे

वर्तमान–वीसमी सदीना–आचार्यो

वर्तमानमां आचार्य महाराज श्री विजयनेमिसूरीश्वरजीए गीजनरेश, बुरानरेश गोंडलनरेश जुनागढनरेश आदि द्वारा ते ते स्थानोए अहिंसा पळावी छे तेओ महाप्रभावी अने परम प्रतापी छे

श्री सागरानन्दसूरीश्वरजी जैनागमना प्रतिबोधक तरीके प्रसिद्ध छे तेओ आगमोद्धारक-जैनागमोने सुंदररूपे प्रकाशित करावनार-महान् आचार्य छे

विजयवल्लभसूरिजी (अने) विजयवल्लभसूरिजी विजयदानसूरिजी आदिए पण अनेक राजपुत्रो ठाकुर आदिने उपदेश आपी अहिंसा पळावी छे अने अनेक माणसने पण उपदेश आप्यो छे

बुद्धिसागरसूरि, विजयकमलसूरिजी आदिए पण नाना मोटा राजाओने राजपुत्रोने अने अन्य आगेवानोने उपदेश आपी अहिंसा पळावी छे

विजयधर्मसूरिजीए अनेक भारतीय राजामहाराजाओ अने विद्वानोने उपदेश आप्यो छे तेम ज तेमणे पाश्चात्य विद्वानो अने अधिकारीओने उपदेश आप्यो छे गवर्नर एजन्ट-टु धी-गवर्नर

आदिने मळनार आ प्रथम ज जैनाचार्य छे एमणे केटलाकने मांसाहार छोडावेल छे पश्चिमना देशोमां जैन साहित्यनो प्रचार ए एमनु मुख्य कार्यक्षेत्र हतु

विजयशान्तिसूरिजी बिकानेर, सीकरी जोधपुर आदिना राजा महाराजा, रजपुतो अने अमीर अधिकारीओने प्रतिबोधी मांसाहार त्याग करावे छे, शिकार तथा व्यसनो बंध करावे छे

स्वर्गस्थ गुरुदेव श्री चारित्रविजयजी महाराज (श्री यशोविजयजी जैनगुरुकुल–स्थापक) तेओश्रीए पालीताणाना एडमिनिस्ट्रेटर मेजर स्ट्रोंग साहेब, तथा मालोया, साकरोया अने समीयाना राजासाहेबोने प्रतिबोध आपी अनेक सुकृत्य कराव्या छे अने केटलाये रजपुतो, अने अधिकारीओनो मांसाहार छोडाव्यो छे

उपसंहार

आ लेखमां कौंस ( ) मां जे नंबरो आप्या छे ए तपगच्छ श्रमण वंशवृक्षना मूळ नंबरो छे अने जे साहित्य मळ्यु ते प्रमाणे प्रसिद्ध प्रसिद्ध जैनाचार्योए राजामहाराजाओने उपदेश आपी जे प्रतिबोध कर्यो छे जिनशासननी जे प्रभावना अने प्रचार कर्यो छे तेनी टुंकी नोंध आपी छे हजारो अने लाखो रजपुतोने अने अन्य समाजोने पण प्रतिबोधी जैन बनावनार महामुनीश्वरोना प्रतिबोधक प्रकांड विद्वानो दिग्गजपण्डितो महान ग्रंथकारो योगीश्वरो वगेरे अनेक जैनशासनना संरक्षको दीपकानो आ नानकडा निबंधमां हु उल्लेख नथी करी शक्यो एटलुं स्थान पण नथी मे आ निबंधमां जे आचार्योनो परिचय आप्यो छे तेनो विशेष परिचय आपवानी जरूर हती–छे परन्तु स्थाननो अभाव मने तेम करतां रोके छे एटले वाचको आटला टुंका परिचयथी संतोष मानशे एम इच्छुं छुं

आ लेख लखवामां पट्टावली समुच्चय भा १ अप्रसिद्ध जीर्ण चोथो भाग, प्रभावकचरित्र महावीर–निर्वाणपरम्परा हिस्ट्री ओफ ओसवाल राजस्थानोका इतिहास राजपुताने के जैनवीर हिन्दुस्तान के देशीराज्य जैनकोन्फरन्स हेरल्ड अने सनातनजैन वगेरे ग्रंथोनो में उपयोग कर्यो छे एटले ए ग्रंथलेखकोनो आभार मानी आ लेख पूरो करु छुं आ निबंधमां क्यांय पण क्षति जणाय तो ते तरफ मारु लक्ष दोरवानी विद्वानोने प्रार्थना छे जेथी आगळ उपर सुधारो करी शकाय

अजमेर लाखणकोटडी
वीरसंवत २४६२ अषाढी पूनम